मल्टीपरपज हॉल

महात्मा फूले ग्रंथालय

संकाय भवन

कबीर बालक छात्रावास

रमाबाई बालिका छात्रावास

फेकल्टी गेस्ट हाऊस

वार्षिक प्रतिवेदन

2016-17

प्रशासनिक भवन

वार्षिक प्रतिवेदन

2016-17

कुलाधिपति : श्रीमती आनंदी बेन, पटेल महामहिम राज्यपाल, मध्यप्रदेश

कुलपति : श्री बी.आर. नाइडू

संकाय सदस्य :

- प्रो. सी. डी. नाईक, प्रोफेसर
- प्रो. डी. के. वर्मा, प्रोफेसर
- डॉ. मनीषा सक्सेना, एसोसिएट प्रोफेसर
- श्री प्रदीप कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर
- डॉ. कौशलेन्द्र वर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर
- डॉ. धनराज डोंगरे, असिस्टेंट प्रोफेसर
- डॉ. अरुण कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर
- सुश्री नमिता टोप्पो, असिस्टेंट प्रोफेसर

अधिकारी

- डॉ. बी. भारती, कुलसचिव
- श्री सदाशिव डावर, वित्त नियंत्रक

डॉ. बी. आर अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय
डॉ. अम्बेडकर नगर (महू) मध्यप्रदेश

अनुक्रमणिका

स.क्र.	विवरण	पेज नम्बर
1.0	कुलपति की ओर से संदेश	
2.0	विश्वविद्यालय : एक परिचय – कुलसचिव	
3.0	विश्वविद्यालय स्थापनाः ध्येय एवं उद्देश्य	
4.0	विश्वविद्यालय अधोसंरचना	
5.0	विश्वविद्यालय के कार्य	
6.0	विश्वविद्यालय प्राधिकारणी	
7.0	विश्वविद्यालय के कुलाधिपति, कुलपति, कुलसचिव, संकाय एवं अधिकारी	
8.0	विश्वविद्यालय प्राधिकारणी की बैठकें	
9.0	अनुसंधान : शोध परियोजनाएं एवं थीसिस	
10.0	विस्तार, प्रशिक्षण एवं अकादमिक गतिविधियाँ	
11.0	राष्ट्रीय संगोष्ठी, सम्मेलन, कार्यशालाएं, व्याख्यान एवं परिचर्चा	
12.0	विश्वविद्यालय प्रकाशन	
13.0	संकाय द्वारा अकादमिक एवं प्रशासनिक योगदान	
14.0	महात्मा फूले ग्रंथालय एवं कम्प्यूटर सेंटर	
15.0	विश्वविद्यालय परिसर विकास	
16.0	वित्तीय लेखा 2016–17	

कुलपति की ओर से संदेश

श्री बी.आर. नायडू
कुलपति

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में विश्वविद्यालय का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किये जाने पर मैं हार्दिक प्रसन्नता महसूस कर रहा हूँ। मध्यप्रदेश शासन द्वारा देश में सामाजिक विज्ञान के प्रथम विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी है। इसके लिए मैं मध्यप्रदेश सरकार और माननीय मुख्यमंत्रीजी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। यह विश्वविद्यालय प्रदेश ही नहीं बल्कि पूरे देश के और विश्व के सभी सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्गों के सम्पूर्ण उत्थान हेतु महत्वपूर्ण केन्द्र बिन्दु के रूप में कार्य कर रहा है।

भारतरत्न डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के जीवन–दर्शन पर केन्द्रित तथा भारतीय संविधान की मूल प्रेरणा एवं मूल्यों पर आधारित यह विश्वविद्यालय अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्गों के लिए सामाजिक न्याय एवं सामाजिक उत्थान, आर्थिक विकास और सशक्तिकरण, शैक्षणिक उत्कृष्टता तथा निर्णय एवं राष्ट्र निर्माण में भागीदारी सुनिश्चित करने जैसे महत्वपूर्ण उद्देश्यों के लिए इस विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी है।

विश्वविद्यालय की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में नवाचारी शोध, तकनीकी का स्थानांतरण आधारित प्रसार एवं प्रशिक्षण तथा गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक और अकादमिक कार्य है। मूलतः यह विश्वविद्यालय पूर्व में डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान संस्थान के रूप में विगत 25 वर्षो से शोध, प्रसार एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्गों के लिए कार्यरत रहा है।

यह हम सभी के लिए गर्व का विषय है कि बाबासाहेब डॉ. बी. आर. अम्बेडकर जी की 125 वीं जयंती के अवसर पर माननीय मुख्यमंत्रीजी के कर कमलों द्वारा केन्द्रीय मंत्री श्री थावरचंद गेहलोत, माननीय मंत्री सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता तथा श्री रामविलास पासवान, माननीय मंत्री खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति तथा मध्यप्रदेश के माननीय मंत्रीगण श्री कैलाश विजयवर्गीय, श्री ज्ञानसिंह तथा श्री लालसिंह आर्य की गरिमामय उपस्थिति में इस विश्वविद्यालय का मध्यप्रदेश शासन द्वारा 14 अप्रैल 2015 को शुभारंभ किया गया।

मध्यप्रदेश शासन द्वारा बनाया गया यह विश्वविद्यालय सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में देश का प्रथम विश्वविद्यालय है, जहां अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों एवं अन्य पिछड़े वर्गों की समग्र बुराईयों, भेदभाव, असमानता, कुप्रथाओं, अंधविश्वास, छुआछूत व जातिभेद निर्मूलन पर कार्य किया जा रहा है, इसके साथ ही इन वर्गों के लिए कौशल विकास एवं उद्यमिता के अवसर प्रदान कर गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा उपलब्ध कराने के अपने मूल उद्देश्यों एवं विशिष्ट अधिनियम से यह विश्वविद्यालय स्थापित किया गया है।

विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में पदभार ग्रहण करने के उपरान्त मैने यह अनुभव किया कि आज के भूमण्डलीकरण, निजीकरण तथा उदारीकरण के दौर में कमजोर वर्गों की समस्याओं का सार्थक और शाश्वत हल सामाजिक विज्ञान में हो रही नवीनतम् तकनीकों के उचित प्रबंधन के समन्वय एवं विश्वविद्यालय द्वारा सम्पन्न किये जा रहे शोध से ही संभव है। कमजोर एवं शोषित वर्गों यथाः अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों व अन्य पिछड़ा वर्ग एवं महिलाओं तथा बच्चों के सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक विकास हेतु यह समन्वय शोध, शैक्षणिक प्रसार–प्रचार तथा प्रशिक्षण कार्यो में आवश्यक है। यह हम भलीभांति जानते है कि किसी भी ग्राम अथवा नगर के विकास के लिए सबसे बड़ा संसाधन वहां के लोग हैं। विकास सम्बन्धी समस्याओं का हल समाज द्वारा ही संभव है लेकिन यह तब तक संभव नहीं होगा जब तक कि वहां स्थानीय जनभागीदारी सुनिश्चित न हो क्योंकि स्थानीय स्तर की समस्याओं व उनके समाधान की बेहतर जानकारी उन्हीं के पास है।

समाज में कुछ ऐसे लोग भी होते है जो स्वप्रेरणा एवं स्वेच्छा के भाव से समाज के सम्पूर्ण विकास एवं उत्थान के लिए कार्य करते हैं। यदि ऐसे लोगों को जागरूक, क्षमता सम्पन्न एवं सशक्त कर दिया जाय तो वे अधिक प्रभावी एवं व्यवस्थित तरीके से समाज की सहभागिता से समाज के विकास के लिये कार्य कर सकेंगे। ऐसी ही स्वप्रेरणा से प्रयासरत लोगों को शिक्षित कर एक सशक्त सामाजिक नेतृत्वकर्ता के रूप में विकसित करने हेतु मध्यप्रदेश शासन द्वारा मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है जिसके अंतर्गत डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, महू में सामुदायिक नेतृत्व एवं शाश्वत विकास में दो वर्षीय समाज कार्य स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम संचालित करने का निर्णय लिया गया है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य प्रदेश के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के ऐसे नवयुवकों को तैयार करना है जिन्हें क्षेत्र के विकास की अच्छी समझ हो तथा जो समस्याओं के निदान की निर्णायक पहल कर सकें। इस पाठ्यक्रम के द्वारा नवयुवकों की ऐसी पीढ़ी तैयार करना है जो समाज की समस्याओं के निदान के लिए सरकारी प्रयासों पर ही निर्भर न होकर समुदाय के साथ परिश्रम और पुरूषार्थ से उनके निदान के लिए सकारात्मक पहल कर सकें जिससे प्रदेश को स्वर्णिम मध्यप्रदेश बनाने की दिशा में और अधिक त्वरित गति से कार्य कर समाज में शाश्वत विकास की आधारशिला रखी जा सके।

इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय द्वारा मध्यप्रदेश शासन के सहयोग से पुलिस प्रशासन में दो वर्षीय एम.ए. पाठ्यक्रम भी प्रारम्भ किया जा रहा है जिसके अंतर्गत मध्यप्रदेश राज्य लोकसेवा आयोग द्वारा चयनित उप–पुलिस अधीक्षक स्तर के अधिकारियों के चयन उपरान्त दो वर्ष का गहन अध्ययन कराया जायेगा जिसमें मध्यप्रदेश पुलिस अकादमी भोपाल तथा विश्वविद्यालय के अनुभवी वरिष्ठ संकाय द्वारा अध्ययन कराया जायेगा जिसमें समाज के अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति एवं महिलाओं तथा बच्चों की मूलभूत समस्याओं के प्रति उन्हें और अधिक संवेदनशील बनाने के प्रयास किये जायेंगे जिसमें नव–चयनित अधिकारी इन वंचित वर्गों के हितों के प्रति और अधिक निडर, निष्पक्ष एवं संवेदनशील होकर न्याय प्रदान करने में अपनी सक्रिय भूमिका निभाकर वे भी समाज में शाश्वत विकास करने की दिशा में एक सकारात्मक स्थायी पहल कर सकें।

विगत एक वर्ष के दौरान विश्वविद्यालय द्वारा संचालित की गयी शोध, प्रसार, प्रशिक्षण एवं अकादमिक गतिविधियों की जानकारी प्रस्तुत वार्षिक प्रतिवेदन 2016–17 में संकलित कर प्रेषित की जा रही है। मेरा पूर्ण विश्वास है कि यह विश्वविद्यालय अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़े वर्गों के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर स्वर्णिम मध्यप्रदेश बनाने की दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगा।

(श्री बी. आर. नायडू)
कुलपति

2

डॉ. बी. आर अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय : एक परिचय

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय मध्यप्रदेश सरकार का राज्य स्तरीय विश्वविद्यालय है, जिसकी अधिकारिता प्रथमतः मध्यप्रदेश है तथापि इसके अधिनियम, 2015 के प्रावधान अनुसार इस विश्वविद्यालय का मूल उद्देश्य पूरे प्रदेश में ही नहीं अपितु देश और विश्व के सभी वंचित वर्गों विशेषकर अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अन्य पिछड़े वर्गों के लिए सामाजिक विज्ञान में विज्ञान के विषयों एवं तकनीकी के अतःविषयक एवं बहुविषयक रचनात्मक अभिगम द्वारा उच्च शिक्षा, गवेषणा, विस्तार और प्रशिक्षण को प्रोन्नत करना है ।

दिनांक 14 अगस्त 2015 को विश्वविद्यालय अध्यादेश जारी हुआ तत्पश्चात् विश्वविद्यालय अधिनियम, 2015 मध्यप्रदेश राजपत्र (असाधारण) में दिनांक 13 जनवरी 2016 को अधिसूचित होकर आज देश के प्रथम सामाजिक विज्ञान का यह विश्वविद्यालय अपने स्वरूप प्राप्ति की ओर अग्रसर है।

विश्वविद्यालय अधिनियम, 2015 के सेक्शन 17 (1) के प्रावधान अनुसार मध्यप्रदेश के राज्यपाल विश्वविद्यालय की सर्वोच्च प्राधिकारी शासी निकाय के अध्यक्ष हैं। विश्वविद्यालय के प्रमुख उद्देश्यों में अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों एवं अन्य पिछडे वर्गो के सामाजिक उत्थान एवं सामाजिक न्याय, आर्थिक विकास एवं आर्थिक सशक्तिकरण, शैक्षणिक उत्कृष्ठता एवं कौशल विकास तथा उनका नीति निर्धारण एवं राष्ट्र निर्माण में और अधिक सहभागिता सुनिश्चित करना है। विश्वविद्यालय की स्थापना एवं कार्यों हेतु संपूर्ण व्यय भार मध्यप्रदेश शासन के अनुसूचित विकास विभाग द्वारा वहन किया जाता है।

विश्वविद्यालय की अकादमिक संरचना में प्रमुख स्कूल हैं, जिनमें वर्तमान में डॉ. अम्बेडकर विचार एवं दर्शन, सामाजिक विज्ञान एवं प्रबंधन अध्ययन, शिक्षा एवं कौशल विकास, विधि एवं सामाजिक न्याय, तथा कृषि एवं ग्रामीण विकास शामिल हैं। वतमान में विश्वविद्यालय के 40 विभागों के द्वारा लगभग 75 विषयों में 374 विद्यार्थी, स्नातकोत्तर, एम.फिल. पीएच.डी. डी. लिट्, डी.एस.सी., एल.एल.डी. जैसी उच्च उपाधियों के लिए शिक्षण एवं अनुसंधान कार्य हो रहे हैं।

(डॉ. एच.एस.त्रिपाठी)
कुलसचिव

3

विश्वविद्यालय स्थापना : ध्येय एवं उद्देश्य

अनुसूचित जाति विकास विभाग, मध्यप्रदेश शासन द्वारा डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है। देश के इस प्रथम सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय की स्थापना डॉ. अम्बेडकर की जन्म स्थली महू (इंदौर) में डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय अधिनियम 2015 द्वारा की गई है। विश्वविद्यालय का मुख्य उद्देश्य अनुसूचित जातियों, जनजातियों तथा अन्य पिछड़े वर्गों के सामाजिक उत्थान एवं सामाजिक न्याय, आर्थिक सशक्तिकरण एवं विकास, शैक्षणिक उत्कृष्टता एवं कौशल विकास तथा इन वर्गों का नीति निर्धारण एवं राष्ट्र निर्माण में और अधिक सहभागिता सुनिश्चित करना है।

विश्वविद्यालय का मेंडेट बाबासाहेब डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के विचारों व दर्शन के अनुरूप सामाजिक विज्ञान के नए–नए आयामों एवं नवीन अवधारणाओं के साथ नई तकनीकों का समन्वय कर सामाजिक बुराईयों के उन्मूलन, अन्याय तथा सामाजिक असमानता को दूर कर समता, समानता, स्वतंत्रता, विविधता में एकता, मैत्री एवं समान नागरिक संहिता पर आधारित समता मूलक समाज की स्थापना करना है। विश्वविद्यालय सामाजिक विज्ञान तथा इससे जुडे विभिन्न विषयों जैसे भारतीय संविधान और लोकतंत्र, राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता, लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण तथा स्थानीय स्वशासन, समता मूलक समाज व्यवस्था, महिला सशक्तिकरण तथा सामाजिक उत्थान, धार्मिक तथा सामाजिक सद्भाव, मानव सम्मान, परिवार तथा बाल विकास, गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा, आर्थिक सशक्तिकरण, अनुसंधान, प्रचार–प्रसार तथा प्रशिक्षण के जरिए अनुसूचित जातियों, जनजातियों एवं अन्य पिछड़ें वर्गों के सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक विकास के लिए कार्य कर रहा है।

विश्वविद्यालय के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :–

1. शिक्षण, गवेषणा और विस्तार के माध्यम से उभरती विचारधारा एवं उपागम, उन्नत ज्ञान, बुद्धि और समझ का प्रसार करना और अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों एवं अन्य पिछड़े वर्गों के सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक विकास पर केन्द्रित नीतियों एवं कार्यक्रमों को बनाने एवं लागू करने में भी कृत्यकारियों को संवेदनशील बनाना एवं प्रशिक्षित करना,
2. अध्ययन की ऐसी शाखाओं में ज्ञान को, जो विश्वविद्यालय के उद्देश्यों को पूरा करती हो, संस्थागत एवं गवेषणा सुविधाएं उपलब्ध कराकर उन्नत करना।
3. शिक्षण, गवेषणा, विस्तार तथा प्रशिक्षण गतिविधियों में संकाय एवं छात्रों की अंतर्राष्ट्रीय अवस्थिति के अतिरिक्त जाति मूलवंश, रंग, धर्म, सजातीयता, क्षेत्र भाषा, लिंग के आधार पर, सामाजिक–आर्थिक विकास, सामाजिक रूप से कलंकित प्रथाओं, सामाजिक बुराईयों, अंधविश्वासों, विभेदकारी प्रथाओं के उन्मूलन के लिए, विकसित देशों में उपयोग की जा रही प्रौद्योगिकी एवं तकनोक, आधुनिक साधन एवं पद्वति प्रतिकृति एवं मापदंडों, रणनीतियों एवं दृष्टिकोण, योजनाओं एवं कार्यक्रमों के उच्च शिक्षण के

लिए, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों, संस्थाओं एवं संगठनों के सहयोग से नेटवर्क स्थापित करना।

4. उपेक्षित वर्ग के सामाजिक–आर्थिक विकास को गति देने के लिए, तकनीकी तथा अन्य विषयों जिसमें अभियांत्रिकी, चिकित्सा विज्ञान, प्रबंधन अध्ययन, कृषि तकनीकी और ग्रामीण शिल्पकर्म की मूल सीमाओं में सामाजिक विज्ञान तथा समुचित कार्यक्रमों में परास्नातक एवं उच्चतर स्तर पर एकीकृत पाठ्यक्रम आयोजित करना।

5. डा. बी.आर. अम्बेडकर द्वारा उन विभिन्न सामाजिक विचारा कों एवं सुधारकों के, जिन्होंने की गई कल्पना के अनुसार सामाजिक रूप से अलाभ वाले वर्गों के सामाजिक–आर्थिक और शैक्षणिक विकास और उनके सशक्तिकरण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया हो, विचारों और दर्शन का अध्ययन करना।

6. जाति प्रथा से इसके विभिन्न पहलुओं जैसे कार्योत्पादन निरन्तरता और परिवर्तन के प्रति प्रतिरोध से उत्पन्न होने वाली सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक असमानता, निर्योग्यता और विभेद के तथ्य का उपयुक्त उपचारी उपायों का पता लगाने हेतु अध्ययन करना।

7. सामाजिक–आर्थिक विकास, गरीबी उन्मूलन और सामाजिक बुराईयों, सामाजिक विषमताओं और अन्याय के उन्मूलन पर केन्द्रित सामाजिक विज्ञान के वैज्ञानिक दृष्किोणों के साथ तकनीकी उन्नयन के सम्मिलन द्वारा नवप्रवर्तनात्मक रणनीतियां खोजना।

8. छात्रों, अध्यापकों तथा नागरिकों क बीच भी देश की सामाजिक आवश्यकताओं के प्रति जागरूकता एवं समझ प्रोन्नत करना और ऐसी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उन्हें तैयार करना।

9. विश्वविद्यालय में सामाजिक विज्ञान, तकनीकी में शिक्षा, गवेषणा, विस्तार तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों में एकीकृत पाठ्यक्रमों के लिए विशेष उपबंध करना।

10. सामाजिक रूप से अलाभ वाले वर्गों के विकास तथा सशक्तिकरण के लिए कार्य कर रही राज्य और केन्द्र सरकार तथा अन्य संगठनों को परामर्श एवं सलाह देना।

11. विश्वविद्यालय द्वारा किए गए कार्यों और विश्वविद्यालय के उद्देश्यों के अनुसार अन्य सुसंगत साहित्य का प्रलेखन करना, प्रकाशित करना और प्रसार करना।

12. ऐसे अन्य समस्त कार्य करना जो विश्वविद्यालय के समस्त या उनमें से किसी उद्देश्य को पूरा करने में सहायक हो।

विश्वविद्यालय कमजोर वर्गों के आर्थिक सशक्तिकरण के साथ उनके लिए क्षमता निर्माण और उद्यमिता विकास, कल्याणकारी आर्थिक नीति तथा नीतिगत सुधार, विधि और सामाजिक न्याय, सामाजिक गरिमा और अवसरों की समानता, वैचारिक अभिव्यक्ति, प्रार्थना तथा मानवाधिकारों की रक्षा, पर्यावरण और कृषि विकास, पानी

और अन्य प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, पारिस्थितिकी सौहार्द्र तथा नदियों एवं उनकी छोटी–बड़ी सहायक नदियों और नालों को जोड़ना, कृषि जोत में सुधार, तकनीकी तथा ग्रामीण शिल्प एवं ग्रामीण औद्योगिकीकरण, राष्ट्रनिर्माण के लिए अंतर्राष्ट्रीय समझ तथा विदेश नीति और वैज्ञानिक पहल जैसे क्षेत्रों में कार्यरत है।

विश्वविद्यालय का ध्यय आर्थिक सहभागिता और निर्णय प्रक्रिया में अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों तथा अन्य पिछड़े वर्गों की और अधिक भागीदारी द्वारा सामाजिक उत्थान, आर्थिक सशक्तिकरण, शैक्षणिक उत्कृष्टता और समता मूलक समाज की स्थापना कर राष्ट्र निर्माण में भागीदारी सुनिश्चित करना है। विश्वविद्यालय के उपरोक्त सभी ध्येय एवं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अनुसूचित जातियों, जनजातियों एवं अन्य पिछड़ें वर्गों के रहवास स्थलों के आस–पास प्रथमतः मध्यप्रदेश के सभी जिलों में सामाजिक विज्ञान केन्द्रों की स्थापना की जा रही है।

4

विश्वविद्यालय अधोसंरचना

विश्वविद्यालय का संगठनात्मक ढ़ांचा, प्रबंधन प्रणाली, कार्यपद्धति, शिक्षण, अनुसंधान एवं प्रचार–प्रसार जैसे सभी कार्य केन्द्रीय विश्वविद्यालयों की भांति हैं। शासी निकाय, कार्य परिषद एवं विद्या परिषद विश्वविद्यालय के प्रमुख नीति निर्धारक प्राधिकरण हैं। मध्यप्रदेश के महामहिम राज्यपाल, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलाधिपति हैं एवं विश्वविद्यालय के प्रमुख प्रशासनिक और शैक्षणिक प्राधिकारी कुलपति हैं। शासी निकाय विश्वविद्यालय का सर्वोच्च प्राधिकरण एवं कार्य परिषद् विश्वविद्यालय की कार्यकारी निकाय है।

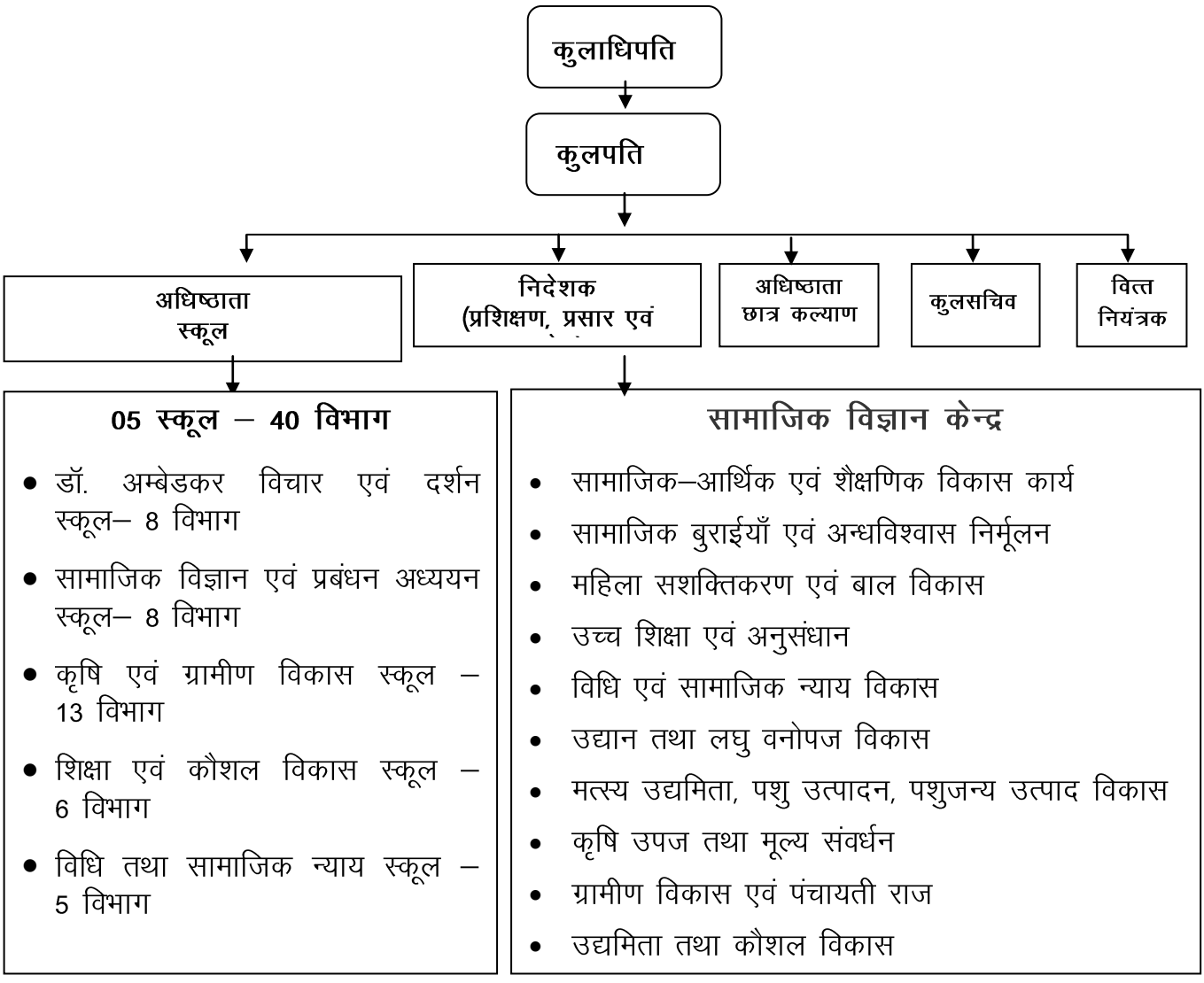

5
विश्वविद्यालय के कार्य

उच्च शिक्षा :

उच्च शिक्षा एवं शोध के माध्यम से विश्वविद्यालय के उद्देश्यों अनुरूप अनुसूचित जातियों, जनजातियों एवं अन्य पिछड़ें वर्गों से संबंधित समस्याओं, मुद्दों व उनके विकास तथा सशक्तिकरण करना है। विश्वविद्यालय की मुख्य रूप से निम्नलिखित उपाधियाँ है :–

1. **पोस्ट डॉक्टरेट डिग्रियाँ** :– डॉक्टर ऑफ लिट्रेचर **(D.Litt.) /** डॉक्टर ऑफ साइंस **(D.Sc.) /** डॉक्टर ऑफ लॉ **(LLD)**
2. **डॉक्टरेट डिग्रियाँ** :– सभी विषयों में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी **(Ph.D.)**
3. **मास्टर ऑफ फिलासफी (M.Phil.)**
4. **स्नातकोत्तर डिग्रियाँ** :– मास्टर्स ऑफ आर्ट्स **(M.A.) /** सोशल वर्क **(M.S.W.) /** साइस **(M.Sc.)/** लॉ **(LL.M.) /** एग्रीकल्चर साइंसेस **(M.Sc. Ag.) /**एजुकेशन **(M.Ed.) /** कॉमर्स **(M.Com.) /** बिजनेस मैनेजमेंट **(M.B.A.) /** मार्केटिंग मैनेजमेंट **(M.M.M.) /** आर्किटेक्चर **(M.Arch.) /** फाईन आर्ट्स **(M.F.A.) /** कम्प्यूटर साइंस **(M.C.A., M.C.Sc) /** लाईब्रेरी साइंस **(M.Lib.)**
5. **स्नातक डिग्रियाँ** :– बेचलर ऑफ सोशल साईस **(B. A. -Social Science)**

नोट : यूजीसी/एनसीटीई/एआईसीटीई आदि द्वारा मान्य अन्य संबंधित विषयों में स्नातक, स्नातकोत्तर, डॉक्टरेट, पोस्ट डॉक्टरेट डिग्री व डिप्लोमा।

विश्वविद्यालय के स्कूल, विभाग, कोर्स तथा डिग्री:–

Departments, Subjects and Degrees of School of Dr. Ambedkar's Thoughts & Philosophy			
Department	**S N**	**Subjects**	**Degrees**
Dr. Ambedkar Studies	1	Dr. Ambedkar Thoughts & Studies	M.A., M.Phil, Ph.D. & D.Litt.
		Nodal Department for Compulsory Paper on - Dr. Ambedkar Thoughts & Philosophy (ATP)	For all courses
Buddhist Studies & Culture	2 3	Buddhist Studies & Culture Epigraphy and Palaeography	M.A., M.Phil, Ph.D. & D.Litt. M.A., M.Phil, Ph.D. & D.Litt.
	4	Language & Dalit and Adivasi Literature (Hindi, Pali, and English)	M.A., M.Phil, Ph.D. & D.Litt
		Nodal Department for Compulsory Paper on Compulsory paper- English Communication & Personality Development (ECPD).	All Courses
	5	Physical Education, Yoga & Vipassana	M.A., M.Phil, Ph.D. & D.Litt.
International Studies	6	International Studies	M.A., M.Phil, Ph.D. & D.Litt.

Scheduled Castes, Scheduled Tribes and Other Backward Classes Development	7 8 9	Scheduled Castes Studies Scheduled Tribes Studies Other Backward Classes Studies	M.A., M.Phil, Ph.D. & D.Litt. M.A., M.Phil, Ph.D. & D.Litt. M.A., M.Phil, Ph.D. & D.Litt.
		Nodal Department for Compulsory Paper on - Social Emancipation & Justice, Economic Empowerment & Development, Educational Excellence and Participation of SCs, STs & OBCs in Decision Making and Nation Building (SEEP)	For all Courses
		Nodal Department for Compulsory Paper on: Emerging Dimensions of SCs, STs & OBCs Development, Implications and Temporal Significance (EDD).	For all Courses
Philosophy	10	Philosophy	M.A., M.Phil, Ph.D. & D.Litt.
Political Science	11 12	Political Science Public Administration	M.A., M.Phil, Ph.D. & D.Litt. M.A., M.Phil, Ph.D. & D.Litt.
Economics	13	Economics	M.A., M.Phil, Ph.D. & D.Litt.
History & Archaeology	14 15	Public Policy & Planning History & Archaeology	M.A., M.Phil, Ph.D. & D.Litt. M.A., M.Phil, Ph.D. & D.Litt. M.A., M.Sc., M.Phil., Ph.D., D.Sc.

Departments, Subjects and Degrees of School of Social Sciences & Management Studies

Department	**SN**	**Subjects**	**Degrees**
Sociology	1	Sociology	M.A., M.Phil, Ph.D. & D.Litt.
Social Work	2	Social Work	M.S.W., M.Phil, Ph.D. & D.Litt.
Psychology and Behavioural Science	3	Psychology	M.A., M.Phil, Ph.D. & D.Litt.
Geography and Environmental Studies	4 5 6	Geography Population Studies Environment Studies	M.A., M.Phil, Ph.D. & D.Litt. M.A., M.Phil, Ph.D. & D.Litt. M.A., M.Phil, Ph.D. & D.Litt.
Language and Cultural Studies	7 8	Hindi English	M.A., M.Phil, Ph.D. & D.Litt. M.A., M.Phil, Ph.D. & D.Litt.
Defense & Strategic Studies	9	Military Science	M.A., M.Phil, Ph.D. & D.Litt.
Commerce	1	Commerce	M.Com., MBA, Ph.D.
Management Studies	2	Management Studies	M.B.A., M.Phil, Ph.D.
Mathematics and Statistics	3	Statistics	M.A., M.Phil., Ph.D. & D.Litt.
		Nodal Department for Compulsory Paper on:	All PG, M.Phil and Ph.D. courses

		Research Methodology and Statistics (RMS)	
Departments, Subjects and Degrees of School of Agriculture & Rural Development			
Departments	**SN**	**Subjects/ Specialization**	**Degrees**
Agronomy & Agriculture Engineering	1 2	Agronomy Agriculture Engineering	M.Sc. (Ag.) Ph.D., D.Sc. M.Tech. (Ag. Engg.) Ph.D., D.Sc.
Agriculture Extension Education	3	Agriculture Extension Education	M.Sc. (Ag.), Ph.D., D.Sc.
Fisheries, Poultry & Animal Science	4	Fisheries, Poultry & Animal Science	M.F.Sc., M.Sc, Ph.D, D.Sc.
Horticulture & Agro forestry	5 6 7	Vegetable Science Fruit Science Agro Forestry	M.Sc.(Ag.), Ph.D., D.Sc. M.Sc.(Ag.), Ph.D., D.Sc. M.Sc.(Ag.), Ph.D., D.Sc.
Agriculture Economics & Agri-Business Management	8 9	Agriculture Economics Agri- Business Management	M.Sc.(Ag.), Ph.D., D.Sc. M.Sc.(Ag.), Ph.D., D.Sc.
Plant Protection & Quarantine	10 11	Entomology Pathology	M.Sc.(Ag.), Ph.D., D.Sc. M.Sc.(Ag.), Ph.D., D.Sc.
Genetics and Plant Breeding	12	Genetics and Plant Breeding	M.Sc.(Ag.), Ph.D., D.Sc.
Biotechnology and Biodiversity	13	Biotechnology / Bioinformatics / Biodiversity	M.Sc.(Ag.), Ph.D., D.Sc.
Soil Science & Agri-Chemistry / Biochemistry	14	Soil Science & Agri-Chemistry / Biochemistry	M.Sc.(Ag.),M.Tech. (Ag.Engg.), Ph.D., D.Sc.
Food and Nutrition	15	Food and Nutrition	M.Sc., Ph.D., D.Sc.
Rural & Urban Development Studies	1 2	Rural & Development & Extension Urban Development	M.A., M.Phil, Ph.D. & D.Litt. M.A., M.Phil, Ph.D. & D.Litt.
Panchayat Raj and Local Self Governance	3	Panchayat Raj and Local Self Governance	M.A., M.Phil, Ph.D. & D.Litt.
Departments, Subjects and Degrees of School of Education & Skill Development			
Departments	**SN**	**Subjects/ Specialization**	**Degrees**
Gender Studies	1	Human Development	M.A., M.Phil., Ph.D. & D.Litt.
Education	2	Education	M.Ed., M.Phil., Ph.D.
Journalism & Mass Communication	3	Journalism & Mass Communication	M.A., M.Phil., Ph.D.
Library and Information Science	4	Library and Information Science	M.Lib., M.Phil., Ph.D.
Entrepreneurship and Skill Development	1	Entrepreneurship and Skill Development	M.A., M.Phil., Ph.D.
Computer Science & Information Technology	2	Computer Science & Information Technology	M.C.A./ M.C.Se. M.Tech/, Ph.D.

		Nodal Department for Compulsory Paper on: Computer Applications and Information technology (CAIT)	All Courses

4.5 Departments, Subjects and Degrees of School of Law and Social Justice

Departments	**SN**	**Subjects/ Specialization**	**Degrees**
International Studies	1	International Studies	LLM, Ph.D. , D.Lit.
Constitutional Studies	2	Constitutional Studies Compulsory Paper –	LLM, Ph.D. , D.Lit.
		Nodal Department for Compulsory Paper on: Indian Constitution and Social Change (ICSC)	All Courses
Corporate Social Responsibility & Social Security	3	Corporate Social Responsibility & Social Security	LLM, Ph.D. , D.Lit.
Criminology	4	Criminology / Cyber Crimes	M.A., M.Phil., Ph.D.
Human Rights and Social Justice	5	Human Rights and Social Justice	M.A., M.Phil., Ph.D.

Credit System for Research thesis based Degrees:

Each student enrolled in the University shall be required to complete the minimum credits, subject to number of credits as prescribed by the UGC/ ICAR/NCTE/AICT and such other regulatory authorities time to time :

SN	Course	Duration of Course	Credits				
			Compulsory Papers	Subject Papers	Thesis Research	Seminar	Total Credits
1	Post Graduation	Four Semesters	14	30	20	01	65
2	M.Phil.	Three Semesters	14	22	20	01	57
3	Ph.D.	Six Semesters	14	25	45	02	85

The following shall be the Compulsory Papers for Post Graduation, M.Phil. and Ph.D. programmes of the University:

SN	CODE	NAME OF COMPULSORY PAPERS	CREDIT
First Semester		(Theory + Practical)	
1	ATP	Dr. Ambedkar Thoughts & Philosophy	2+0
2	ICSC	Indian Constitution and Social Change	2+0
3	RMS	Research Methodology & Statistics, Literature Review	2+1
4	WECP	Writings, English & Communication Skills and Personality Development	1+0
Second Semester		(Theory + Practical)	
1	SEEP	Social Emancipation & Justice, Economic Empowerment & Development, Educational Excellence and Participation of SCs, STs & OBCs in Decision Making and Nation Building.	1+0
2	EDD	Emerging Dimensions of SCs, STs & OBCs Development, Implications and Temporal Significance	1+0
3	ESA	Elementary Science and Agriculture (ESA) – Food and Nutrition, Social & Preventive Medicine, Geography, General Agriculture, Animal Science, Disaster Management, Rural Development, General Science	2+0
4	CAIT	Computer Application and Information Technology	1+1

शैक्षणिक कार्यक्रम

वर्ष 2016–17 के दौरान विश्वविद्यालय ने सोशल साइंस में अनुसंधान, विस्तार, प्रशिक्षण और उच्च शिक्षा के कार्यक्रम दिये गये है। विश्वविद्यालय ने सोशल साइंस में स्नातक, स्नातकोत्तर, एम.फिल. एवं पीएच.डी. कार्यक्रम भी प्रारंभ किये गये है।

विश्वविद्यालय की डिग्री प्रोग्राम : विश्वविद्यालय द्वारा शैक्षणिक सत्र 2016–17 में निम्नलिखित डिग्रियो हेतु प्रवेश दिया गयाः–

1. बी.ए. (सामाजिक विज्ञान)

2. स्नातकोत्तर डिग्री पाठ्यक्रम :
   मास्टर ऑफ आर्ट्स (एम.ए.),
   मास्टर ऑफ एग्रीकल्चर साइंस (एम.एस.सी. एजी.),
   मास्टर ऑफ सोशल वर्क (एम.एस.डब्ल्यु),
   मास्टर ऑफ फिलॉसफी (एम.फिल.)
3. डॉक्टरेट डिग्री कार्यक्रम :
   डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएच.डी.)

दूरस्थ शिक्षा

अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों–बाहुल्य, दूर–दराज के गांवों व अंचलों में स्थित सामाजिक विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से विश्वविद्यालय गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा को उनकी दहलीज तक पहुंचायेगा, जिससे समाज के इन कमजोर वर्गों के शिक्षणार्थियों, खासकर महिलाओं को दूरस्थ शिक्षा द्वारा उच्च शिक्षा में शामिल किया जा सकेगा।

अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग :

सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक तौर पर कमजोर एवं अन्य पिछड़े वर्गों के विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चल रहे शैक्षणिक, प्रसार एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों को प्रदेश एवं देश में कार्यान्वित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों एवं विश्वविद्यालय जहाँ पर समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान के लिये कार्य किये गये हैं, के साथ सहयोग (Collaboration) किया जा रहा है।

अनुसंधान, प्रसार एवं प्रशिक्षण

विश्वविद्यालय अपने निदेशालय (प्रसार, प्रशिक्षण और शोध) द्वारा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों, भारत सरकार, राज्य सरकार तथा विश्वविद्यालय के अनुसूचित जातियों पर शोध कार्यों एवं शासन की नीतियों व कार्यक्रमों को जन–जन तक पहुंचाने तथा उनके प्रचार–प्रसार एवं प्रभावी कार्यान्वयन के लिए प्रत्येक जिले में सामाजिक विज्ञान केन्द्र (SVK) की स्थापना कर रहा है। साथ ही सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक तौर पर कमजोर वर्गों के विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चल रहे शैक्षणिक, प्रसार एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों को प्रदेश एवं देश में कार्यान्वित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों एवं विश्वविद्यालय जहाँ पर समाज के कमजोर वर्गों क उत्थान के लिये कार्य किये गये हैं, के साथ सहयोग (Collaboration) कर रहा है।

विकास और सहभागिता के क्षेत्र में अभी तक किये गये कार्यों का परीक्षण कर सामाजिक विज्ञान केन्द्रों के अंतर्गत क्षेत्रीय स्तर पर अनुसूचित वर्गों के सामाजिक–आर्थिक और शैक्षणिक विकास तथा उनकी नीति निर्धारण एवं राष्ट्र निर्माण में और अधिक सहभागिता सुनिश्चित करने के लिये संबंधित विषयों में अनुसंधान कार्य किये जायेगें। विश्वविद्यालय के उद्देश्यों के अनुरूप समाज के इन कमजोर कारियों एवं तकनीकों को विकसित करने के लिये कार्य किये जायेंगे।

सामाजिक विज्ञान केन्द्र

विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर, एम.फिल. एवं पीएच.डी. जैसी उच्च शिक्षा के साथ–साथ देश दुनिया में कमजोर वर्गों के समग्र विकास के लिये किये जा रहे अनुसंधानों को समाज के कमजोर वर्गों तक पहुचायेगा, इसके लिये विश्वविद्यालय अधिनियम 2015 की सेक्शन 28 के द्वारा प्रदेश के प्रत्येक जिले में समाजिक विज्ञान केन्द्रों को स्थापित करने का प्रावधान किया गया है। तद्नुसार विश्वविद्यालय द्वारा सामाजिक विज्ञान केन्द्रों की स्थापना की जा रही है। ये सामाजिक विज्ञान केन्द्र अनुसूचित जातियों के सशक्तिकरण, कौशल विकास एवं रोजगार सृजन, अनुसंधान, नये–नये उत्पाद सृजन, विधिक एवं सामाजिक सुरक्षा, अन्धविश्वास, जाति–पाति, ऊँच–नीच एवं छुआछूत जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने तथा सामाजिक समता, विविधता में एकता, बन्धुत्व एवं भाई चारा बढ़ाने के लिए कार्य करेगा। सामाजिक विज्ञान केन्द्र में समाजशास्त्र एवं समाजकार्य, महिला एवं बाल विकास, कृषि विज्ञान, ग्रामीण विकास, प्रसार एवं प्रशिक्षण, कौशल विकास एवं रोजगार सृजन, विधि एवं सामाजिक न्याय जैसे विषयों के विशेषज्ञों को रखा जायेगा।

सामाजिक विज्ञान केन्द्र की प्राथमिकताएं

सामाजिक बुराई तथा अत्याचार निवारण ↓ विषय विशेषज्ञ समाज विज्ञान	महिला सशक्तिकरण तथा बाल विकास ↓ विषय विशेषज्ञ महिला तथा बाल सशक्तिकरण	उद्यमिता तथा कौशल विकास ↓ विषय विशेषज्ञ उद्यमिता तथा कौशल विकास	आर्थिक विकास अनुसंधान ↓ विषय विशेषज्ञ आर्थिक विकास	नीति तथा योजना अनुसंधान ↓ विषय विशेषज्ञ समावेशी विकास तथा नियोजन

न्याय तथा सामाजिक उत्थान ↓ विषय विशेषज्ञ विधि तथा सामाजिक न्याय	सामाजिक–आर्थिक और शैक्षणिक विकास कार्य ↓ विषय विशेषज्ञ दूरस्थ शिक्षा केन्द्र	ग्रामीण विकास तथा पंचायती राज ↓ विषय विशेषज्ञ ग्रामीण विकास तथा पंचायती राज	समसामायिक मुद्दे और विषय ↓ विषय विशेषज्ञ सक्षमता संवर्धन तथा नेतृत्व विकास	किसान कल्याण अनुसंधान ↓ विषय विशेषज्ञ कृषि एवं भूमि विकास

सामाजिक विज्ञान केन्द्र के उद्देश्य :

1. स्नातक, स्नातकोत्तर, पीएच.डी., डी.लिट., डी.एस.सी. जैसी गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा तथा शोध अध्ययनों के माध्यम से सामाजिक बुराईयों, कुरीतियों, प्रथाओं, अंधविश्वास, अंधश्रद्धा, अनुसूचित जाति एवं जनजाति अत्याचार, महिला उत्पीडन, घरेलू हिंसा, बंधुआ मजदूरी, बाल शोषण इत्यादि का निर्मूलन
2. समता–समानता, समरसता, बन्धुता, महिला सशक्तिकरण,एक समान नागरिक अधिकारिता वाली समतामूलक समाज की स्थापना के लिए अनुसंधान एवं विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्रों में किये गये नवाचार अनुसंधानों को सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विकसित आयामों को समन्वित करना।
3. अनुसूचित जाति के समग्र विकास का प्रचार–प्रसार ।
4. भारत सरकार, राज्य सरकार एवं देश–विदेश के प्रतिष्ठित संस्थानों द्वारा इन वंचित वर्गों के सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक विकास के लिए चलाये जा रहे कार्यक्रमों का कार्यान्वयन।
5. अनुसूचित जाति के चँहुमुखो विकास को बढ़ावा देने के लिए कौशल प्रशिक्षण देना।
6. विश्वविद्यालय के उद्देश्यों के अनुरूप संस्थानों, विश्वविद्यालयों, शासकीय कार्यालयों, NGO के साथ समन्वय एवं सहयोग।

समाज विज्ञान केन्द्र : कार्य, विषय एवं क्षेत्र

सामाजिक विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से निम्नलिखित कार्यों को कार्यान्वित किया जायेगा :–

- **सामाजिक–आर्थिक एवं शैक्षणिक विकास कार्य** : विश्वविद्यालय समाज के कमजोर वर्गों के सामाजिक उत्थान एवं सामाजिक न्याय, आर्थिक सशक्तीकरण, उत्कृष्ट शिक्षण एवं कौशल विकास के कार्यक्रमों का कार्यान्वयन करके इन वर्गों की देश के विकास की नीति निर्धारण एवं राष्ट्र निर्माण में और अधिक सहभागिता सुनिश्चित करने के लिये कार्य करेगा।

- **सामाजिक बुराईयों एवं अत्याचारों का निर्मूलन** : समाज में व्याप्त सामाजिक बुराईयों, कुप्रथाओं, अंधविश्वास, अस्पृश्यता, जाति आधारित भेदभाव, असमानता, पीढ़ी दर पीढ़ी लांछित कार्य, सर पर मैला ढोने वाली प्रथा की समाप्ति एवं उसमें लगे सफाईकर्मियों का पुनर्वास, अनुसूचित जातियों/जनजातियों एवं महिलाओं पर होने वाले अत्याचार निवारण, घरेलू हिंसा व उत्पीड़न निवारण, बेगारी, बंधुआ मजदूरी, बाल शोषण एवं उनका पुनर्वास इत्यादि कार्य करना।

- **महिला सशक्तीकरण एवं बाल विकास** : अनुसूचित जाति वर्गों की महिलाओं को प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित करना, उनको उद्यमिता एवं उद्यमशीलता तथा कौशल विकास के माध्यम से स्वावलंबी बनाना, बच्चों को शिक्षा के लिए प्रेरित करना तथा उनको किसी भी प्रकार के शोषण से बचाना एवं उनको आर्थिक एवं शैक्षणिक उत्कृष्टता हासिल करने में मदद करना।

- **उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान** : गरीबी, बेरोजगारी, सामाजिक कुरीतियों, कुप्रथाओं के चलते अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति क छात्र–छात्राऐं अधिकतर उच्च शिक्षा नहीं ले पाते है, उनको उच्च शिक्षा के लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं एवं परियोजनाओं के माध्यम से उच्च शिक्षा दिलाना। समाज के इन कमजोर वर्गों के सामाजिक उत्थान, आर्थिक सशक्तिकरण एवं शैक्षणिक उत्कृष्टता में बाधक बनने वाले कारणों की खोज करना तथा इनके लिए देश दुनिया में किये जा रहे प्रयासों पर अध्ययन एवं अनुसंधान करना तथा विकसित देशों में किये गये प्रयासों के अनुसार इन वर्गों का सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान करना।

- **विधि एवं सामाजिक न्याय विकास** : अनुसूचित जाति वर्गों की महिलाओं एवं बच्चों पर सामाजिक भेदभाव, अत्याचार, शोषण, असमानता, अस्पृश्यता, अंधविश्वास, सार्वजनिक स्थलों एवं साधनों के उपयोग, सरकारी गैर–सरकारी कार्यक्रमों, योजनाओं, परियोजनाओं, यौन शोषण इत्यादि के बारे में जानकारी उपलब्ध कराना तथा अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति अत्याचार निवारण (संशोधित) अधिनियम 2016 का क्रियान्वयन सुनिश्चित करना। समाज के अभिजात वर्गों एवं कमजोर वर्गों के बीच में भाई–चारा एवं बन्धुता स्थापित करने के लिए परामर्श एवं प्रेरणा देना। सामाजिक भेद–भाव एवं अत्याचारों के प्रति समाज के अभिजात वर्ग एवं शोषित वर्गों को संवैधानिक प्रावधानों, दण्ड एवं विधिक सलाह देना तथा किसी भी प्रकार के अत्याचारों एवं शोषण को रोकने का प्रयास करना इत्यादि।

- **उद्यान, वानिकी एवं लघुवनोपज विकास** : लघु वनोपज, वानिकी व वानिको उत्पाद तथा उद्यानिकी ही परपंपरागत वन आधारित पारिस्थितिकीय तंत्र में ही विकसित हुआ है। अतः आर्थिक विकास हेतु लघुवनोपज, वानिकी तथा उद्यानिकी की महत्वपूर्ण भूमिका है। संस्कृति का संरक्षण भी इन्हीं वन आधारित गतिविधियों हेतु महत्वपूर्ण है।

- **मत्स्य उद्यमिता, पशु उत्पादन तथा पशुजन्य उत्पाद विकास** : प्रदेश में जल संरक्षण की वृहद् परियोजनाओं/बांधो के निर्माण से मत्स्य उद्यमिता, आर्थिक कारण का एक सशक्त माध्यम बनकर उभर सकता है। मत्स्य उद्यमिता, पशु उत्पादन तथा पशुजन्य उत्पाद विकास से अनुसूचित जाति वर्गों को अनेक आथिक विकास के अवसर प्रदान किये जा सकते हैं।

- **कृषि उपज तथा मूल्य संवर्धन** : कृषि उपज का मूल्य संवर्धन हमारे प्रदेश में अधिक आवश्यक है। क्योंकि कृषि उपज का सही मूल्य संवर्धन को विशेषकर सीमांत एवं लघु कृषकों को कृषि उपज के मूल्य संवर्धन से ही प्राप्त हो सकता है। प्रदेश में कृषि उपज में मूल्य संवर्धन की अपार संभावनाए भी है। मूल्य संवर्धन के अवसर एवं तकनीकें नहीं होने से कभी–कभी अनुसूचित जाति एवं जनजाति तथा अन्य पिछड़ा वर्गों के किसानों को लागत भी नहीं मिल पाती। उदाहरण के लिए सामान्य फसलों आलू, प्याज इत्यादि के मूल्य संवर्धन अवसर नहीं होने पर कृषक हताश हो

जाते हैं। कज में डूबे रहते हैं और यहां तक कि आत्महत्या भी कर लेते हैं। अतः कृषि उपज के मूल्य संवर्धन को सामाजिक विज्ञान केन्द्रों की महत्वपूर्ण कार्य क्षमता में शामिल किया है।

- **ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज** : ग्रामीण विकास एवं पंचायत राज ने सार्थक सामाजिक परिवर्तन की दिशा तय की है। आज विकेन्द्रीकरण द्वारा अनुसूचित जातियों को स्थानीय सत्ता, संरचना को समझने, उसमें भागीदारी करने एवं नेतृत्व विकास में सशक्त भूमिका निभाने का मौका मिला है। पंचायत राज व्यवस्था, निर्णय लेने की क्षमता का बेहतर अवसर प्रदान करती है, अतः ग्रामीण विकास हेतु पंचायत राज संस्थाओं और व्यवस्थाओं को प्राथमिकता दी गई है।

- **उद्यमिता तथा कौशल विकास** : शिक्षा में कौशल विकास अहम है। आज के सूचना व तकनीकी युग में शिक्षा बिना कौशल विकास अधूरी है। कौशल विकास से क्षमता संवर्धन के प्रयास किये जाये तो विशेषकर मुख्यमंत्री कौशल विकास योजना को संपूर्ण प्रदेश में सुदृढ़ तरीके से लागू किये जाना प्राथमिकता है।

विश्वविद्यालय अपने उद्धेश्यों की पूर्ति एवं भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर की गरिमा के अनुरूप सामाजिक विज्ञान केन्द्रों को विकसित कर रहा है, इन केन्द्रों पर निम्नलिखित कार्यों के द्वारा अनुसूचित जाति वर्गों के लोगों में एक नई ऊर्जा का संचार होगा और सबका साथ, सबका विकास का सपना साकार होगा :–

1. कृषि उपज तथा मूल्य संवर्धन
2. ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज
3. उद्यमिता तथा कौशल विकास
4. मत्स्य उद्यमिता, पशु उत्पादन तथा पशुजन्य उत्पाद विकास
5. उद्यान (हाई टेक नर्सरी) तथा लघुवनोपज विकास
6. महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास
7. उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान
8. विधि एवं सामाजिक न्याय विकास (लीगल एड क्लीनिक)
9. सामाजिक बुराईयाँ/कुरीतियाँ एवं अंधविश्वास/अन्धश्रद्धा निर्मूलन
10. सामाजिक–आर्थिक एवं शैक्षणिक विकास कार्य
11. सामुदायिक आकाशवाणी केन्द्र
12. सामुदायिक विकास केन्द्र

6
विश्वविद्यालय प्राधिकारणी

शासी निकाय

विश्वविद्यालय अधिनियम, 2015 के सेक्शन 17 (1) के प्रावधान अनुसार मध्यप्रदेश के महामहिम राज्यपाल की अध्यक्षता में शासी निकाय विश्वविद्यालय का सर्वोच्च प्राधिकरण है। पदेन सदस्यों से भिन्न सदस्यों का कार्यकाल तीन वर्ष का है तथा अशासकीय सदस्य, कुलपति के परामर्श से राज्य सरकार द्वारा नाम निर्दिष्ट किए जाते हैं।

विश्वविद्यालय की शासी निकाय का गठन :

1. विश्वविद्यालय के कुलाधिपति – अध्यक्ष
2. विश्वविद्यालय के कुलपति – उपाध्यक्ष

<u>पदेन सदस्य</u>

3. प्रमुख सचिव, मध्यप्रदेश शासन, अनुसूचित जाति कल्याण विभाग अथवा उपसचिव से अनिम्न श्रेणी का उसका नाम निर्देशित।
4. प्रमुख सचिव, मध्यप्रदेश शासन, आदिम जाति कल्याण विभाग अथवा उपसचिव से अनिम्न श्रेणी का उसका नाम निर्देशिती।
5. प्रमुख सचिव, मध्यप्रदेश शासन, उच्च शिक्षा विभाग अथवा उपसचिव से अनिम्न श्रेणी का उसका नाम निर्देशिती।
6. प्रमुख सचिव, मध्यप्रदेश शासन, वित्त विभाग अथवा उपसचिव से अनिम्न श्रेणी का उसका नाम निर्देशिती।
7. प्रमुख सचिव, मध्यप्रदेश शासन, विधि और विधायी कार्य विभाग अथवा अतिरिक्त सचिव से अनिम्न श्रेणी का उसका नाम निर्देशिती।
8. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का अध्यक्ष या उसका नाम निर्देशिती।
9. भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् का अध्यक्ष या भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्,नई दिल्ली के निदेशक से अनिम्न श्रेणी का उसका नाम निर्देशिती।
10. सामाजिक न्याय और सशक्तिकरण मंत्रालय, नई दिल्ली का संयुक्त सचिव या उपसचिव से अनिम्न श्रेणी का उसका नाम निर्देशिती।
11. निदेशक, डॉ. अम्बेडकर फाउंडेशन, नई दिल्ली।
12. विश्वविद्यालय के विस्तार एवं प्रशिक्षण का निदेशक।
13. डॉ. सी.डी. नाईक, प्रभारी डीन, ब्राउस (महू)
14. डॉ. डी.के. वर्मा प्रभारी,डीन, ब्राउस (महू)
15. विश्वविद्यालय का कुलसचिव – सचिव

<u>अशासकीय सदस्य</u>

16. दो ख्याती प्राप्त सामाजिक वैज्ञानिक जिनमें स कम से कम एक व्यक्ति अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति से हो और अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों तथा अन्य पिछड़े वर्गो के सामाजिक–आर्थिक तथा शैक्षणिक विकास के क्षेत्र में शैक्षणिक या गवेषणा का अनुभव रखता हो।

17. दो ख्याती प्राप्त.....? जिनमें से कम से कम एक व्यक्ति अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति से हो तथा ख्याति प्राप्त शासकीय/अशासकीय संगठनों से सहयुक्त हो तथा अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अन्य पिछड़े वर्गो के सामाजिक–आर्थिक तथा शैक्षणिक विकास के क्षेत्र में अनुभव रखता हो।

काय परिषद्

विश्वविद्यालय अधिनियम 2015 के सेक्शन 20 (1) के प्रावधान अनुसार कार्य परिषद् विश्वविद्यालय की कार्यकारी निकाय है जिसका गठन निम्नानुसार है :–

1. विश्वविद्यालय के कुलपति – अध्यक्ष

<u>पदेन सदस्य</u>

2. प्रमुख सचिव, मध्यप्रदेश शासन, अनुसूचित जाति कल्याण विभाग या उसके द्वारा नाम निर्दिष्ट व्यक्ति जो उपसचिव से अनिम्न श्रेणी का न हो;
3. प्रमुख सचिव, मध्यप्रदेश शासन, उच्च शिक्षा विभाग या उपसचिव से अनिम्न श्रेणी का उसका नाम निर्देशिती।
4. प्रमुख सचिव, मध्यप्रदेश शासन, अनुसूचित जनजाति कल्याण विभाग या उपसचिव से अनिम्न श्रेणी का उसका कोई नाम निर्देशिती।
5. प्रमुख सचिव, मध्यप्रदेश शासन, वित्त विभाग या उपसचिव से अनिम्न श्रेणी का उसका कोई नाम निर्देशिती।
6. अध्यक्ष (चेयरपर्सन) भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् का अध्यक्ष या भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्,नई दिल्ली के संचालक से अनिम्न श्रेणी का उसका नाम निर्देशिती।
7. निदेशक, विश्वविद्यालय विस्तार एवं प्रशिक्षण।
8. विश्वविद्यालय के तीन संकायाध्यक्ष जो शासी निकाय के सदस्य हो।

i. डॉ. सी.डी. नाईक, प्रभारी डीन, ब्राउस (महू)
ii. डॉ. डी.के. वर्मा प्रभारी,डीन, ब्राउस (महू)

9. विश्वविद्यालय के कुलसचिव – सचिव

<u>अशासकीय सदस्य</u>

10. दो ख्याति प्राप्त समाज वैज्ञानिक जो शासी निकाय के सदस्य हो
11. दो ख्याति प्राप्त व्यक्ति जो शासी निकाय के सदस्य है

विद्या परिषद्

विश्वविद्यालय अधिनियम 2015 के सेक्शन 23 (1) के प्रावधान अनुसार विद्या परिषद् विश्वविद्यालय की उच्चतम शैक्षणिक निकाय है, जिसका गठन निम्नानुसार है :–

1. विश्वविद्यालय के कुलपति – अध्यक्ष
2. संकायाध्यक्ष, अध्ययन विभाग;
3. निदेशक, विस्तार तथा प्रशिक्षण

4. संकायाध्यक्ष छात्र कल्याण
5. गथपाल
6. वित्त नियंत्रक
7. विभागाध्यक्ष
8. दो ख्याति प्राप्त सामाजिक विज्ञानी शासी निकाय के अशासकीय सदस्य होंगे जो अध्यक्ष द्वारा नाम निर्देशित किए जाएंगे;
9. विश्वविद्यालय के कुलसचिव – सचिव

वित्त समिति

विश्वविद्यालय अधिनियम 2015 के सेक्शन 26 (1) के प्रावधान अनुसार विश्वविद्यालय को वित्त समिति निम्नानुसार गठित है : –

1. डॉ. आर.एस. कुरील, कुलपति – अध्यक्ष (चेयरपर्सन)
2. डॉ. सी.डी. नाईक, प्राध्यापक – सदस्य
3. डॉ. डी. के वर्मा, प्राध्यापक –सदस्य
4. डॉ. बी. भारती, कुलसचिव –सदस्य
5. श्री सदाशिव डावर, वित्त नियंत्रक –सचिव

7
विश्वविद्यालय के कुलाधिपति, कुलसचिव, संकाय एव अधिकारी

वर्ष 2016–17 के दौरान निम्नांकित कुलपति, संकाय, अधिकारी एवं स्टॉफ विश्वविद्यालय में कार्यरत रहे

कुलाधिपति

- श्री ओ.पी. कोहली, महामहिम राज्यपाल, मध्यप्रदेश

कुलपति

- डॉ. आर. एस. कुरील,

कुलसचिव

- डॉ. परीक्षित सिंह (29 मार्च 2016 से 13 दिसम्बर 2016)
- प्रो. सी.डी. नाईक प्राध्यापक (अतिरिक्त प्रभार दिनांक 14.12.2016 से 22.12.2016)
- डॉ. बी. भारती (23 दिसम्बर 2016 सें 31.03.2017 से 17.07.2017 तक)
- डॉ. एच. एस. त्रिपाठी (18.07.2017 से .....)

संकाय सदस्य

- प्रो. सी.डी. नाईक, प्रोफेसर
- प्रो. डी. के. वर्मा, प्रोफेसर
- डॉ. मनीषा सक्सेना, एसोसिएट प्रोफेसर
- श्री प्रदीप कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर
- डॉ. कौशलेन्द्र वर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर
- डॉ. धनराज डोंगरे, असिस्टेंट प्रोफेसर
- डॉ. अरुण कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर
- सुश्री नमिता टोप्पो, असिस्टेंट प्रोफेसर

वित्त नियंत्रक

- श्री सदाशिव डावर

विश्वविद्यालय से सेवा निवृत्त

श्री मनोहर बागडे सहायक ग्रेड–1 दिनांक 30.06.2017

8
विश्वविद्यालय प्राधिकारणो की बैठकं

शासी निकाय

वर्ष 2016–17 की अवधि में शासी निकाय की बैठक आयोजित नही हो पायी।

कार्य परिषद्

तृतीय बैठकः–

विश्वविद्यालय की कार्य परिषद की तृतीय बैठक दिनांक 26.05.2016 को ब्राउस में माननीय कुलपति डॉ. आर. एस. कुरील की अध्यक्षता में हुई है जिसमें निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे :–

1. डॉ. आर.एस. कुरील, कुलपति, ब्राउस – अध्यक्ष
2. प्रो. आर.एस. वर्मा, अतिरिक्त संचालक, उच्च शिक्षा विभाग – सदस्य
3. श्री पी.के. श्रीवास्तव, उप संचालक, कोष एवं लेखा – सदस्य
4. प्रो. सी.डी. नाईक, डीन, ब्राउस – सदस्य
5. प्रो. डी.के. वर्मा, डीन, ब्राउस – सदस्य
6. श्री जे.एन. लखनवी, वित्त नियंत्रक, ब्राउस – विशेष आमंत्रित सदस्य
7. डॉ. जी.एस. सोन, संचालक आई.सो.एस.एस.आर. नई दिल्ली – सदस्य
8. प्रो. आर.डी. मौर्य प्राध्यापक, ब्राउस – सदस्य
9. श्री भगवानदास गोडाने, ब्राउस (महू) – सदस्य
10. डॉ. परीक्षित सिंह कुलसचिव – सचिव

चतुर्थ बैठकः–

विश्वविद्यालय की कार्य परिषद की चतुर्थ बैठक दिनांक 27.9.2016 को ब्राउस में माननीय कुलपति डॉ. आर. एस. कुरील की अध्यक्षता में हुई , जिसमें निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे :–

1. डॉ. आर.एस. कुरील, कुलपति, ब्राउस – अध्यक्ष
2. प्रो. सी.डी. नाईक, डीन, ब्राउस – सदस्य
3. प्रा. आर.डी. मौर्य, डीन, ब्राउस – सदस्य
4. श्री पी.के. श्रीवास्तव संयुक्त संचालक, कोष एवं लेखा – सदस्य
5. श्री एम.एल. जाट, मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला अंत्योदाई – अ.जा. कल्याण के प्रतिनिधि
6. डॉ. मनीषा सक्सेना, विभागाध्यक्ष – विशेष आमंत्रित सदस्य
7. श्री जे.एन. लखनवी, वित्त नियंत्रक, ब्राउस – विशेष आमंत्रित सदस्य
8. डॉ. परीक्षित सिंह कुलसचिव – सदस्य सचिव

विद्या परिषद्

चतुर्थ बैठकः–

विश्वविद्यालय की विद्या परिषद की चतुर्थ बैठक दिनांक 24.05.2016 को ब्राउस मे माननीय कुलपति डॉ. आर. एस. कुरील की अध्यक्षता में हुई। जिसमें निम्नलिखित सदस्य उपस्थित हुये :–

1. डॉ. आर.एस. कुरील, कुलपति, ब्राउस – अध्यक्ष
2. प्रो. सी.डी. नाईक, डीन, ब्राउस – सदस्य
3. प्रो. डी.के. वर्मा, डीन, ब्राउस – सदस्य
4. श्री जे.एन. लखनवी, वित्त नियंत्रक, ब्राउस – सदस्य
5. डॉ. मनीषा सक्सेना, विभागाध्यक्ष, ब्राउस – सदस्य
6. डॉ. शोभा सुद्रास, प्राचार्य विधि महाविद्यालय इन्दौर – विशेष आमंत्रित
7. डॉ. राजेन्द्र सिंह, डी.ए.वी.वी, इन्दौर – विशेष आमंत्रित
8. प्रो. आर.डी. मौर्य, – विशेष आमत्रित
9. डॉ. परीक्षित सिंह, कुलसचिव – सचिव

पाचवी बैठक

विश्वविद्यालय की विद्या परिषद की पाचवी बैठक दिनांक 08.08.2016 को ब्राउस में माननीय कुलपति डॉ. आर. एस. कुरील की अध्यक्षता में हुई । जिसमें निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे।

1. डॉ. आर.एस. कुरील, कुलपति, ब्राउस – अध्यक्ष
2. प्रो. आर.डी. मौर्य, – विशेष आमंत्रित
3. श्री जे.एन. लखनवी, वित्त नियंत्रक, ब्राउस – सदस्य
4. डॉ. मनीषा सक्सेना, विभागाध्यक्ष, ब्राउस – सदस्य
5. प्रो. डी.के. वर्मा, डीन – सदस्य
6. श्री बी.डी. गोडाने ब्राउस – विशेष आमंत्रित
7. प्रो. सी.डी. नाईक डीन, कुलसचिव – सचिव

छटवी बैठक

विश्वविद्यालय की विद्या परिषद की छटवी बैठक दिनांक 26.09.2016 को ब्राउस में माननीय कुलपति डॉ. आर. एस. कुरील की अध्यक्षता में हुई। जिसमें निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे।

1. डॉ. आर.एस. कुरील, कुलपति, ब्राउस – अध्यक्ष
2. प्रो. सी.डी. नाईक, डीन, ब्राउस – सदस्य
3. प्रो. डी.के. वर्मा, डीन, ब्राउस – सदस्य
4. श्री जे.एन. लखनवी, वित्त नियंत्रक, ब्राउस – सदस्य
5. डॉ. मनीषा सक्सेना, विभागाध्यक्ष, ब्राउस – सदस्य
6. डॉ. परीक्षित सिंह, कुलसचिव – सचिव

सातवी बैठक

विश्वविद्यालय की विद्या परिषद की सातवी बैठक दिनांक 21.10.2016 को ब्राउस में माननीय कुलपति डॉ. आर. एस. कुरील की अध्यक्षता में हुई। जिसमें निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे।

1. डॉ. आर.एस. कुरील, कुलपति, ब्राउस – अध्यक्ष
2. प्रो. सी.डी. नाईक, डीन, ब्राउस – सदस्य
3. प्रो. डी.के. वर्मा, डीन, ब्राउस – सदस्य
4. डॉ. मनीषा सक्सेना, विभागाध्यक्ष, ब्राउस – सदस्य
5. डॉ. परीक्षित सिंह, कुलसचिव – सचिव

आठवी बैठक

विश्वविद्यालय की विद्या परिषद की आठवी बैठक दिनांक 15.11.2016 को ब्राउस में माननीय कुलपति डॉ. आर. एस. कुरील की अध्यक्षता में हुई। जिसमें निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे।

1. डॉ. आर.एस. कुरील, कुलपति, ब्राउस – अध्यक्ष
2. प्रो. सी.डी. नाईक, डीन, ब्राउस – सदस्य
3. प्रो. डी.के. वर्मा, डीन, ब्राउस – सदस्य
4. डॉ. मनीषा सक्सेना, विभागाध्यक्ष, ब्राउस – सदस्य
5. डॉ. जे. पी. मिश्रा –सदस्य
6. प्रो. एच. एम. मकवाना –सदस्य
7. डॉ. परीक्षित सिंह, कुलसचिव – सचिव

नवमी बैठक

विश्वविद्यालय की विद्या परिषद की नवमी बैठक दिनांक 27.12.2016 को ब्राउस में माननीय कुलपति डॉ. आर. एस. कुरील की अध्यक्षता में हुई। जिसमें निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे।

1. डॉ. आर.एस. कुरील, कुलपति, ब्राउस – अध्यक्ष
2. प्रो. सी.डी. नाईक, डीन, ब्राउस – सदस्य
3. प्रो. डी.के. वर्मा, डीन, ब्राउस – सदस्य
4. डॉ. मनीषा सक्सेना, ब्राउस – सदस्य
5. डॉ. बी. भारती, कुलसचिव – सचिव

कार्यपरिषद

पॉचवी बैठक

विश्वविद्यालय की कार्यपरिषद की पॉचवी बैठक दिनांक 22.10.2016 को ब्राउस में माननीय कुलपति डॉ. आर.एस.कुरील की अध्यक्षता में हुई जिसमें निम्नलिखित सदस्य उपस्थित हुए :–

1. डॉ. आर. एस. कुरील, कुलपति, ब्राउस, महू अध्यक्ष
2. प्रो. सी. डी. नायक, डीन, ब्राउस, महू सदस्य
3. प्रो. डी. के. वर्मा, डीन, ब्राउस सदस्य
4. श्री एम.एल.जाट, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला अत्व्यावसायी सहकारी विकास निगम, इन्दौर (प्रमुख सचिव अनुसूचित जाति कल्याण के प्रतिनिधि) सदस्य
5. डॉ. परीक्षित सिंह, कुलसचिव, ब्राउस, महू सचिव

छटवीं बैठक

विश्वविद्यालय की कार्यपरिषद की छटवीं बैठक दिनांक 15.11.2016 को ब्राउस में माननीय कुलपति डॉ. आर. एस.कुरील की अध्यक्षता में हुई जिसमें निम्नलिखित सदस्य उपस्थित हुए :–

1.	डॉ. आर. एस. कुरील, कुलपति, ब्राउस, महू	अध्यक्ष
2.	प्रो. सी. डी. नायक, डीन, एवं कुलसचिव ब्राउस, महू	सदस्य एवं सचिव
3.	प्रो. डी. के. वर्मा, डीन, ब्राउस	सदस्य
4.	श्री जे. लखनवी, उपसंचालक, कोष एवं लेखा, इन्दौर (प्रमुख सचिव वित्त के प्रतिनिधि)	सदस्य
5.	डॉ. जे.पी. मिश्रा, प्रभारी डीन, ब्राउस, महू	सदस्य
6.	प्रो. एम.एच. मकवाना, प्रभारी डीन, ब्राउस, महू	सदस्य

सातवीं बैठक

विश्वविद्यालय की कार्यपरिषद की सातवीं बैठक दिनांक 28.12.2016 को ब्राउस में माननीय कुलपति डॉ. आर.एस.कुरील की अध्यक्षता में हुई जिसमें निम्नलिखित सदस्य उपस्थित हुए :–

1.	डॉ. आर. एस. कुरील, कुलपति, ब्राउस, महू	अध्यक्ष
2.	प्रो. सी. डी. नायक, डीन, ब्राउस, महू	सदस्य
3.	प्रो. डी. के. वर्मा, डीन, ब्राउस	सदस्य
4.	सुश्री मोहनी श्रीवास्तव, सहायक आयुक्त, आदिवासी विकास, इन्दौर (प्रमुख सचिव, अ.जा./अ.ज.जा. कल्याण के प्रतिनिधि)	सदस्य
5.	डॉ. कुसुमलता निंगवाल, प्राचार्य, भेरूलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महू (प्रमुख सचिव, उच्च शिक्षा के प्रतिनिधि)	सदस्य
6.	डॉ. बी. भारती, कुलसचिव ब्राउस, महू	सचिव

आठवीं बैठक

विश्वविद्यालय की कार्यपरिषद की आठवीं बैठक दिनांक 15.03.2017 को ब्राउस में माननीय कुलपति डॉ. आर.एस.कुरील की अध्यक्षता में हुई जिसमें निम्नलिखित सदस्य उपस्थित हुए :–

1.	डॉ. आर. एस. कुरील, कुलपति, ब्राउस, महू	अध्यक्ष
2.	प्रो. सी. डी. नायक, डीन, एव कुलसचिव ब्राउस, महू	सदस्य
3.	प्रो. डी. के. वर्मा, डीन, ब्राउस	सदस्य
4.	श्री पी. के. श्रीवास्तव संयुक्त संचालक, कोष एवं लेखा, इन्दौर (प्रमुख सचिव वित्त के प्रतिनिधि)	सदस्य
5.	श्री सदाशिव डाबर, वित्त नियंत्रक, ब्राउस	सदस्य
6.	डॉ. बी. भारती, कुलसचिव ब्राउस, महू	सचिव

शोध परियोजनाऐं एवं थीसिस

अनुसंधान : शोध परियोजनाएं एवं थीसिस

समाज में व्याप्त सामाजिक बुराईयों, कुप्रथाओं, अन्धविश्वासों, सामाजिक भेदभाव का निर्मूलन करने तथा समता, समानता, समरसता आधारित समता मूलक समाज की स्थापना के लिये विश्वविद्यालय अनुसंधान कार्य किये जा रहे है।

अनुसंधान के विशिष्ट क्षेत्र

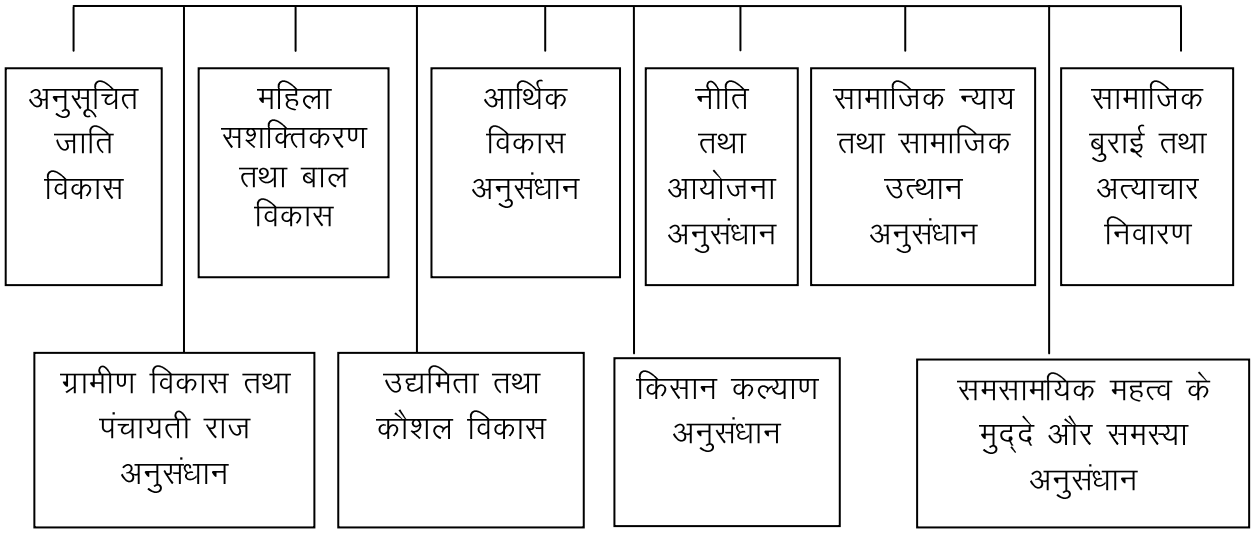

शोध परियोजना

वर्ष 2016–17 में विश्वविद्यालय में निम्नलिखित परियोजनाऐं चल रही हैः–

1. शोध परियोजना का नाम–	मध्यप्रदेश में अनुसूचित जाति बस्ती विकास योजना का मूल्यांकनात्मक अध्ययन।
शोध परियोजना निदेशक–	प्रो. आर.डी. मौर्य
पोषित संस्था–	कार्यालय आयुक्त, अनुसूचित जाति विकास, म.प्र. शासन भोपाल।
परियोजना के उद्देश्य–	1. अनुसूचित जाति बस्ती विकास योजना की वर्तमान भौतिक स्थिति का मूल्यांकन तथा आकलन करना। 2. यह सत्यापित करने के लिए की क्या अन्य विभाग ने एक ही योजना को मंजूरी दी है। 3. मूल्यांकन करने के लिए कि क्या योजनाओं ने अनुसूचित जाति के लाभार्थियों को लाभान्वित किया है या नहीं। 4. स्वीकृत कार्य के अनुसार ही काम किया गया है या काम के स्थान में परिवर्तन किया गया है। 5. क्या वर्तमान में चल रही योजना निरंतर चलनी चाहिये या कोई परिवर्तन की आवश्यकता है। 6. योजनाओं के प्रति अनुसूचित जाति के लाभार्थियों की धारणाओं और प्रतिक्रियाओं को प्राप्त करना।
परियोजना राशि–	(51,67,800/- प्रस्तावित) (प्राप्त राशि–14,10,000/-)

2. शोध परियोजना का नाम–	मध्यप्रदेश में अनुसूचित जाति एवं जनजातियों के विरूद्ध बढते अत्याचारों के कारणों का अध्ययन।(विदिशा, सागर, जबलपुर एवं मुरैना जिलों के विशेष संदर्भ में)
शोध परियोजना निदेशक–	प्रो. आर.डी. मौर्य
पोषित संस्था–	म.प्र. शासन अनुसूचित जाति कल्याण भोपाल द्वारा पोषित।
परियोजना के उद्देश्य–	1. अनुसूचित जाति एवं जनजाति अत्याचार से पीड़ित फरियादी एवं अत्याचार करने वाले व्यक्तियों की सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना। 2. अध्ययन क्षेत्र के अनुसूचित जाति एवं जनजातियों के विरूद्ध बढ़ते अत्याचारों का तत्कालिक एवं दीर्घकालिक कारणों का अध्ययन करना। 3. अनुसूचित जाति एवं जनजातियों तथा समाज के उच्च वर्गो के बीच बढ़ते तनाव एवं संघर्ष के कारणों का अध्ययन करना। 4. अनुसूचित जाति एवं जनजातियों को सुरक्षा प्रदान करने के उपायों के क्रियान्वयन की समस्याओं का अध्ययन करना। 5. अनुसूचित जाति और जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम,1989 एवं संशोधित अधिनियम 2015 के क्रियान्वयन में अनुसूचित जाति एवं

	जनजाति पुलिस थानों एवं विशेष न्यायालय की भूमिका का अध्ययन करना। 6. अध्ययन के निष्कर्षो के आधार पर अत्याचार रोकने के दीर्घकालिक एवं लघुकालिक उपायों के सुझाव प्रस्तुत करना।
परियोजना राशि–	**(16,30,200/- प्रस्तावित) (प्राप्त राशि– 4,00,000/-)**

एम.फिल. शोध प्रबन्ध :

वर्ष 2016–17 के दौरान किसी भी छात्र/छात्राओं द्वारा **एम.फिल. शोध की थिसिस (सामाजिक विज्ञान)** पूर्ण नही की गयी है:–

पीएच.डी. शोध प्रबन्ध

वर्ष 2016–17 के दौरान पूर्ण किये गये पीएच.डी. शोध प्रबंध :–

स.क्र.	पीएच.डी. शोधार्थी का नाम	पीएच.डी. शोध निर्देशक	पीएच.डी. शोध शोध प्रबंध का शीर्षक
1.	सुश्री अमिता चंदेल	प्रो. डी. के. वर्मा	वाल्मीकी समाज की प्रस्थिति एवं गतिशीलता का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (मध्यप्रदेश के जिला इन्दौर के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन)

पीएच.डी. शोध प्रबंध 1 : ''वाल्मीकी समाज की प्रस्थिति एवं गतिशीलता का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन'' (मध्यप्रदेश के जिला इन्दौर के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन)

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्न उद्देश्य हैं :–

1. अध्ययन क्षेत्र में वाल्मीकि समाज की सामाजिक प्रस्थिति का मूल्यांकन करना।
2. वाल्मीकि समाज की सामाजिक गतिशीलता का आंकलन करना।
3. वाल्मीकि समाज की तुलनात्मक प्रस्थिति एवं गतिशीलता का अध्ययन करना।
4. वाल्मीकि समाज की तुलनात्मक प्रस्थिति का इन्दौर क्षेत्र की सामाजिक संरचना के संदर्भ में अध्ययन करना।
5. वाल्मीकि समाज की प्रस्थिति एवं गतिशीलता में अंतर के कारणों का अध्ययन करना।
6. वाल्मीकि समाज की सामाजिक परिस्थिति का परम्परागत जाति व्यवसथा के संदर्भ में अध्ययन करना।

निष्कर्ष एवं सुझाव

भारत में करोड़ों लोगों को स्वतंत्रता से पूर्व अस्पृश्यता के नाम पर मानवीय अधिकारों से वंचित किया गया है और उन्हें निम्न स्तर का जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य किया गया है। इन्हें गाँवों में किसी दूर स्थान पर टूटी–फूटी झोपड़ियों, कच्चे मकानों एवं गंदे स्थानों पर रहना पड़ रहा है। अस्पृश्यता जाति व्यवस्था के साथ जुड़ी है। वैदिक काल में अस्पृश्यता की कोई समस्या नहीं थी, यद्यपि पवित्रता–अपवित्रता की धारणा

अवश्य मौजूद थी। स्मृतिकाल में अस्पृश्यता की भावना ने जन्म लिया और अछूतों को निम्न और हेय व्यवसाय सौंपे गए। मुस्लिम काल में इनकी स्थिति दयनीय हो गई। ब्रिटिश काल में इनकी स्थिति को सुधारने के प्रयास आरंभ हुए, किन्तु उससे कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इनकी सामाजिक समस्याओं पर विशेष ध्यान दिया गया और उन्हें दूर करने के प्रयास किये गये।

घुरिए ने व्यवसाय अथवा आनुष्ठानिक पवित्रता के विचारों को, जिन्हें जाति प्रथा के उद्‌भव के कारकों में गिना जाता ही है, अस्पृश्यता के विचार व प्रचलन की आत्मा कहा है। उनके गंदे माने जाने वाले कार्यों के कारण ही उनको छूना प्रदूषणकारी मान लिया गया। एक सम्मति यह है कि भारत के मूल निवासियों के साथ नस्लीय (रक्त) सम्मिश्रण से बचने के लिए ही आर्यों ने इस प्रणाली को अपनाया। मूल निवासियों ने आर्यों की सम्प्रभुता अथवा आधिपत्य को स्वीकार नहीं किया। वे अपने आर्य विजेताओं के पशु चुरा ले जाते थे, उनके बच्चों एवं स्त्रियों का अपहरण कर लेते थे और लूटमार के द्वारा उन्हें त्रस्त करते थे। अतः समय बीतने पर, आर्यों ने उन्हें दास बना लिया। गाँवों में उनके आवागमन को नियमाधीन बनाया गया, उन पर अरूचिकर कार्य थोपे गये और उन्हें कष्टप्रद निर्योग्यताओं का भागी बनाया गया। अंततः वे अस्पृश्यों की स्थिति में गिरा दिये गये।

सामाजिक, धार्मिक एवं नागरिक अधिकारों से वंचित इन दलितों की स्थिति में सुधार की कोई संभावना नहीं थी। अगाध एवं घोर घृणित दरिद्रता से ग्रस्त और शेष समुदाय की घृणा तिरस्कार के शिकार इन अभागों का कुप्रवृत्तियों को अपनाना और अज्ञान व अंधविश्वास में डूबना स्वाभाविक था। ये बीते हुए ''मृत'' युग में जीते थे और अपर्याप्त आवास, अस्वास्थ्यकर वातावरण तथा सामाजिक अलगाव में अपने कटकर अस्तित्व को घसीटते चलते थे, संक्षेप में, वे अस्पृश्य पैदा होते थे, अस्पृश्य की तरह जीते थे और अस्पृश्य की तरह मर जाते थे।

भारतीय राजनीति व सामाजिक आंदोलन में डॉ. आंबेडकर गांधी का प्रवेश सामान्यतया अस्पृश्यता उन्मूलन (दलितोद्धार) के इतिहास में एक नये युग का नवीन अध्याय की शुरूआत के रूप में देखा जाता है। 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हो गया, इस समय तक जातिप्रथा पर्याप्त क्षीण हो चली थी जिसे व्यक्ति के स्वतंत्र विकास में, राष्ट्र के प्रति निष्ठा में तथा लोकतंत्र और प्रगति में भी बाधक माना जाता था। निम्नतम जातियों पर किये जाने वाले अत्याचारों के विरूद्ध मानवतावादी भावनाएँ उमड़ रही थीं और व्यापक रूप से यह स्वीकार किया जाने लगा था कि स्वतंत्र भारत में जाति का कोई महत्व नहीं होगा और विगत असमानताओं के प्रभावों को दूर करने के लिए कदम उठाये जायेंगे। अतः दलितों को वंचित करना अपराध घोषित किया गया। सेवाओं में उनके लिए स्थान आरक्षित किये गये और शैक्षणिक विकास का कार्यक्रम भी आरंभ किया गया।

वाल्मोकि समाज शूद्रों के अंतर्गत ही आते हैं, जो आज भी समाज की मुख्यधारा से दूर अपनी परम्परागत निर्योग्यताओं को व्यवहारिक रूप से भोग रहे हैं। भारत का संविधान लागू होने के पश्चात कानूनी रूप से सभी नागरिकों को समानता का अधिकार प्रदान किया गया है, किंतु वाल्मीकि समाज के लोगों के साथ भेदभाव समाप्त नहीं हुआ है। औद्योगिकरण एवं नगरीयकरण की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप इस वर्ग पर परम्परागत रूप से चली आ रही नियोग्यताएँ धीरे–धीरे कम होने लगी हैं, किंतु इसकी गति अत्यंत धीमी है। वहीं संवैधानिक संरक्षण एवं सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के कारण वाल्मीकि समाज में सामाजिक एवं आर्थिक गतिशीलता देखने को मिलती है, किंतु आशानुकूल परिणाम आने अभी शेष हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन **''वाल्मीकि समाज की प्रस्थिति एवं गतिशीलता का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन'' (मध्यप्रदेश के जिला इन्दौर के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन)** के अंतर्गत वाल्मीकि समाज में आई सामाजिक एवं आर्थिक गतिशीलता का अध्ययन किया गया है।

अम्बेडकर ने भारत के भावी संविधान में दलितों अस्पृश्यों के लिए जिन सुरक्षा कवचों की मांग रखी उनमें सरकारी सेवाओं में भर्ती, भेदभाव विरोधी विधान और दलित वर्गों की देखरेख के निमित्त विशेष विभाग की स्थापना के साथ ही पृथक निर्वाचन का अधिकार भी शामिल था। गांधीजी इसके विरूद्ध थे। ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड ने इसकी परवाह न करते हुए अगस्त 1932 में घोषित निर्णय के अंतर्गत दलितों को पृथक निर्वाचन अधिकार प्रधान किया। गांधीजी द्वारा इसके विरूद्ध अनशन पर बैठने के बाद पूना अथवा यरवदा समझौते के अंतर्गत दलितों को आरक्षित सीटें प्रदान की गयी।

स्वतंत्रता से पूर्व निम्न एवं अछूत जातियाँ जो जातिगत स्तरीकरण से सबसे निम्न स्थान थी, वर्तमान में ऊँची उठ रही है। सरकारी व गैर सरकारी नौकरियाँ सरकार के विभिन्न पदों एवं चुनावों में निम्न जातियों को

आरक्षण प्रदान किया गया है। संविधान के द्वारा उन्हें अनेक प्रकार से संरक्षण प्रदान किया गया है और छुआछुत को वैधानिक रूप से समाप्त कर दिया गया है। वयस्क मताधिकार ने भी उन्हें शक्ति प्रदान की है। शिक्षा के प्रसार से नए व्यवसायों में प्रवेश के अवसर, राजनीतिक सत्ता में भागीदारी, लोतांत्रिकीकरण, नए कानूनों के द्वारा जाति संरचना में व्यापक परिवर्तन हुआ है। भारतीय संविधान ने अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए शिक्षा का विशेष प्रावधान किया। संसद और विधानसभाओं की सामाजिक प्रस्थिति में काफी सुधार हुआ है। नए व्यवसाय, औद्योगीकरण, नगरीकरण, वाणिज्य की वृद्धि, पाश्चात्य शिक्षा व शिक्षा का प्रसाद, मौद्रिक अर्थव्यवस्था, बैंकों द्वारा ऋण की सुविधा, गांव के विकास के नए कार्यक्रमों के कारण जाति की संरचना और सामाजिक स्तरीकरण में व्यापक परिवर्तन आया है। लेकिन यह भी सही है कि कर्मकाण्डों के कारण सामाजिक संरचना में जाति अब भी प्रभावशाली है और कर्मकाण्डों का प्रभाव पारम्परिक स्तरीकरण बनाए रखने में सहायक सिद्ध हुआ है। जहाँ तक खान–पान और छुआछूत का प्रश्न है स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भारत में जाति की संरचना काफी दुर्बल हुई।

शोध अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत शोध विषयः– ''वाल्मीकि समाज की प्रस्थिति एवं गतिशीलता का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन'' (म.प्र. के जिला इन्दौर के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन)

अध्ययन का समग्र

इन्दौर जिले में वाल्मीकि समाज का परिवार अध्ययन के समग्र होगे।

अध्ययन की इकाई

उत्तरदाताओं में कुल 3000 में से 300 उत्तरदाताओं की प्रस्थिति एवं गतिशीलता का अध्ययन के लिए चयन किया गया है।

निदर्शन विधि

दैव निदर्शन प्रविधि के आधार पर 300 परिवार का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाताओं से प्राप्त तथ्यों की व्यकितगत जानकारी के आधार पर सारणीयन एवं विश्लेषण किया गया है। उत्तरदाताओं से प्राप्त तथ्यों के प्रमुख निष्कर्ष निम्न प्रकार से है–

- अध्ययन में सम्मिलित 112 (37.33%) मैला ढोना, 75 (25.00%) उत्तरदाताओं द्वारा रोड़ व नाली की सफाई का काम किया जाता है। 27 (9.00%) उत्तरदाता निर्माण कार्यों में मजदूरी करते हैं। 43 (14. 33%) उत्तरदाता शासकीय सफाईकर्मी हैं। 38 (12.67%) उत्तरदाताओं द्वारा निजी नौकरी की जाती है एवं 05 (1.67%) उत्तरदाता अन्य आर्थिक कार्य करते हैं।
- सर्वाधिक 91 (30.33%) उत्तरदाता 30 से 50 वर्षों से इन्दौर में निवास कर रहे है। 77 (25.67%) उत्तरदाता 50 वर्ष से अधिक समय से इन्दौर में निवास कर रहे हैं। 83 (27.67%) उत्तरदाता 10 से 30 वर्षों से इन्दौर में निवास कर रहे हैं, जबकि 10 वर्ष से कम समय से इन्दौर में निवास करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 49 (16.33%) रही है। स्पष्ट है कि सर्वाधिक उत्तरदाता 30 से 50 वर्षों से इन्दौर में निवास कर रहे है।
- उत्तरदाताओं के घर में एक से अधिक भौतिक उपयोग के एवं अन्य साधन उपलब्ध हैं। 263 (87.66) उत्तरदाताओं के परिवार में टेलीविजन है। 101 (33.66) उत्तरदाताओं के परिवार में मोटर/स्कूटर/साइकल है। उत्तरदाता को 224 (74.66) के पास साइकल 07 (2.33) उत्तरदाताओं के परिवार में कृषि भूमि है। 104 (34.66) उत्तरदाताओं के परिवार में रेडियो है। 14 (4.66) उत्तरदाताओं के परिवार में बकरा/बकरी है। 108 (36%) उत्तरदाताओं के परिवार में सुअर है। 05 (1.66) उत्तरदाताओं के परिवार में अन्य पशु है। 36 (12%) उत्तरदाताओं के पास व्यवसायिक दुकान है। 03 (1%) उत्तरदाताओं के परिवार में चार पहिया वाहन है। 18 (6%) उत्तरदाताओं के परिवार में रेफ्रिजरेटर है।

18 (6%) उत्तरदाताओं के परिवार में कम्प्यूटर/लेपटाप है, जबकि 29 (9.66%) उत्तरदाताओं के परिवार में अन्य प्रकार के साधन उपलब्ध है। स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं के परिवार में एक से अधिक भौतिक संसाधन उपलब्ध है। रसोई से लेकर रोजगार व्यवसाय एवं मनोरंजन तक इन भौतिक संसाधनों का उपयोग किया जाने लगा है।

- अपनी जाति को सामान्यतः निम्न माने जाने के कारणों को बताने वाले 32 (10.67%) उत्तरदाताओं के अनुसार अशिक्षा के कारण उनकी जाति को निम्न माना जाता है। 53 (17.66%) उत्तरदाताओं के अनुसार गंदा व्यवसाय करने के कारण उनकी जाति को निम्न माना जाता है। 18 (6.00%) उत्तरदाताओं के अनुसार गरीबी के कारण उनकी जाति को निम्न माना जाता है। 41 (13.67%) उत्तरदाताओं के अनुसार परम्परागत दृष्टिकोण के कारण उनकी जाति को निम्न माना जाता है। 04 (1.33%) उत्तरदाताओं के अनुसार अन्य कारणों से उनकी जाति को निम्न माना जाता है, जबकि अधिकांश 152 (50.67%) उत्तरदाताओं के अनुसार उक्त सभी कारणों से उनकी जाति को निम्न माना जाता है। स्पष्ट है कि वाल्मीकि समाज के लोगों के प्रति परम्परागत रूप से चली आ रही मानसिकता में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं आया है। इसका कारण उनके द्वारा किया जाने वाला व्यवसाय है।
- सर्वाधिक 183 (61.00%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके परिवार की प्रकृति संयुक्त है, जबकि 117 (39. 00%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके परिवार की प्रकृति एकांकी है। स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित सर्वाधिक परिवार आज भी संयुक्त रूप से ही रह रहे हैं।
- अध्ययन में सम्मिलित 60 (20.00%) उत्तरदाताओं के परिवार में सदस्यों की संख्या 2–4 है। 97 (32. 33%) उत्तरदाताओं के परिवार में सदस्यों की संख्या 5–8 है। सर्वाधिक 120 (40.00%) उत्तरदाताओं के परिवार में सदस्यों की संख्या 9–12 है, जबकि 13 से अधिक सदस्यों वाले परिवारों की संख्या 23 (7. 67%) रही है। स्पष्ट है कि अध्ययन में संयुक्त परिवारों की अधिकता है इस कारण परिवार में सदस्यों की संख्या भी अधिक है।
- अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं में 245 (81.67%) उत्तरदाता पुरूष है, जबकि 55 (18.33%) उतरदाता महिलाएँ है।
- अध्ययन में सम्मिलित सर्वाधिक 279 (93.00%) उत्तरदाता विवाहित है। 04 (1.33%) उत्तरदाता अविवाहित है। 09 (3.00%) उत्तरदाता विधवा महिलाएँ है। 06 (2.00%) उत्तरदाता विधुर हैं, जबकि 02 (0.67%) उत्तरदाता परित्यक्ता महिलाएँ है।
- अध्ययन में सम्मिलित 15 (5.00%) उत्तरदाता अनपढ़ है। 47 (15.67%) उत्तरदाता साक्षर हैं, पर स्कूल नहीं गए। 43 (14.33 %) उत्तरदाता प्राथमिक स्तर तक शिक्षा प्राप्त हैं। 66 (22.00%) उत्तरदाताओं ने माध्यमिक स्तर तक शिक्षा प्राप्त की। 71 (23.67%) उत्तरदाताओं ने हायर सेकेण्डरी स्तर तक शिक्षा प्राप्त की, जबकि 58 (19.33%) उत्तरदाताओं ने स्नातक/स्नातकोत्तर स्तर तक शिक्षा प्राप्त की है।
- वाल्मीकि समाज के सर्वाधिक 227 (75.67%) उत्तरदाताओं के परिवार के बच्चे शासन द्वारा प्रदत्त शैक्षणिक सुविधाओं का लाभ उठाते हैं। 04 (1.33%) उत्तरदाताओं के परिवार के बच्चे शासन द्वारा प्रदत्त शैक्षणिक सुविधाओं का लाभ नहीं उठाते हैं। 23 (7.67%) उत्तरदाताओं के परिवार के बच्चे कभी–कभी ही शासन द्वारा प्रदत्त शैक्षणिक सुविधाओं का लाभ उठाते हैं, जबकि 46 (15.33%) उत्तरदाताओं के बच्चे पढ़ने नहीं जाते ह। स्पष्ट है कि वाल्मीकि समाज के सर्वाधिक उत्तरदाताओं के बच्चों द्वारा सरकार द्वारा प्रदत्त शैक्षणिक सुविधाओं का लाभ प्राप्त किया जा रहा है।
- उत्तरदाताओं के परिवार में शैक्षणिक सुविधाओं का लाभ नियमित एवं कभी–कभी प्राप्त करने वाले बच्चों द्वारा शासन की एक स अधिक सुविधाओं का लाभ उठाया जाता है। सर्वाधिक 246 (31.49%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके परिवार के बच्चे छात्रवृत्ति का लाभ प्राप्त करते हैं। 145 (18.57%) उत्तरदाताओं के बच्चे निःशुल्क गणवेश का लाभ प्राप्त करते हैं। 182 (23.30%) उत्तरदाताओं द्वारा निःशुल्क पुस्तकें प्राप्त की जाती हैं। 88 (11.26%) उत्तरदाताओं द्वारा मध्यान्ह भोजन का लाभ प्राप्त

किया जाता है। 37 (4.74%) उत्तरदाताओं के परिवार के बच्चे छात्रावास की सुविधा का लाभ प्राप्त करते हैं। 78 (9.99%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके बच्चे निःशुल्क साइकल सुविधा का लाभ प्राप्त करते हैं, जबकि 05 (0.65%) उत्तरदाताओं के बच्चे अन्य प्रकार से शासन की सुविधाओं का लाभ प्राप्त करते हैं।

- सर्वाधिक 178 (59.33%) उत्तरदाताओं का मकान पैतृक है। 70 (23.33%) उत्तरदाताओं ने उनके मकान को स्वयं निर्मित किया है। 02 (0.67%) उत्तरदाताओं का दहेज में मकान प्राप्त हुआ है। 39 (13.00%) उत्तरदाता किराये के मकान में एवं 11 (3.67%) उत्तरदाता शासकीय मकान में निवास करते हैं। स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाता अपने पैतृक मकान में ही निवास करते हैं, यह मकान उन्हें उनके माता–पिता द्वारा प्राप्त हुआ है।
- 105 (35.00%) उत्तरदाताओं का मकान पक्का बना हुआ है। 35 (11.67%) उत्तरदाताओं का मकान कच्चा बना हुआ है, जबकि सर्वाधिक 160 (53.33%) उत्तरदाताओं के मकान अर्द्ध पक्के बने हुए हैं। स्पष्ट है कि वाल्मीकि समाज के अधिकांश उत्तरदाताओं के मकान अर्द्ध पक्के बने हुए हैं।
- अध्ययन में सम्मिलित 80 (26.67%) उत्तरदाताओं के मकान में 2 कमरे हैं। 81 (27.00%) उत्तरदाताओं के मकान में 3 कमरे हैं। 76 (25.33%) उत्तरदाताओं के मकान में 4 कमरे हैं। 43 (14.33%) उत्तरदाताओं के मकान में 5 कमरे हैं, जबकि 20 (06.67%) उत्तरदाताओं के मकान में सर्वाधिक 5 से अधिक करते हैं। स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित वाल्मीकि समाज के अधिकांश उत्तरदाता दो या तीन कमरों के मकानों में निवास करते हैं।
- अध्ययन में सम्मिलित 128 (42.67%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनका मकान उनकी पारिवारिक आवश्यकताओं के अनुरूप है, जबकि सर्वाधिक 172 (57.33%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनका मकान उनकी वर्तमान पारिवारिक आवश्यकताओं के अनुसार पर्याप्त नहीं है। स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित सर्वाधिक उत्तरदाताओं के मकान उनके परिवार की आवश्यकता के अनुरूप पर्याप्त नहीं है। मकान छोटे एवं अस्वास्थ्यकर होने के कारण वे परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाते हैं।
- सर्वाधिक 181 (60.33%) उत्तरदाताओं के मकान में शौचालय की सुविधा उपलब्ध है, जबकि 119 (39. 67%) उत्तरदाताओं के मकान में शौचालय उपलब्ध नहीं है।
- अपने मकान में शौलाचय की सुविधा उपलब्ध नहीं बताने वाले उत्तरदाताओं में से सर्वाधिक 101 (84. 88%) उत्तरदाता शासकीय शौचालय का उपयोग करते हैं। 09 (7.56%) उत्तरदाता नदी/नाले के किनारे शौच हेतु जाते हैं। 05 (4.20%) उत्तरदाता रेल्वे लाइन के पास एवं 04 (3.36) उत्तरदाता अन्य स्थानों पर शौच हेतु जाते हैं। मकान में शौचालय की सुविधा उपलब्ध नहीं होने की स्थिति में अधिकांश उत्तरदाताओं द्वारा शासकीय शौचालयों का उपयोग किया जाता है।
- सर्वाधिक 287 (95.67%) उत्तरदाताओं के पड़ोस में भी वाल्मीकि समाज के लोग रहते हैं, जबकि 13 (4. 33%) उत्तरदाताओं के परिवार में वाल्मीकि समाज क लोग नहीं रहते हैं।
- सर्वाधिक 227 (75.67%) उत्तरदाताओं के मकान में गंदे पानी के निकास की उचित व्यवस्था है, जबकि 73 (24.33%) उत्तरदाताओं के मकान में गंदे पानी के निकास की उचित व्यवस्था नहीं है। स्पष्ट है कि वाल्मीकि समाज के अधिकांश उत्तरदाताओं के मकान में गंदे पानी के निकास की पर्याप्त सुविधा है।
- अध्ययन में सम्मिलित 108 उत्तरदाताओं के पास पालतू पशु हैं। इन उत्तरदाताओं में से सर्वाधिक 84 (28.00%) उत्तरदाताओं के मकान में पालतू पशुओं को रखने के लिए अलग से स्थान है, जबकि 24 (8. 00%) उत्तरदाताओं के मकान मे पालतू पशुओं को रखने के लिए अलग से कोई व्यवस्था नहीं है। सर्वाधिक 192 (64.00%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके मकान में पालू पशु नहीं हैं। स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने पशुओं को नहीं पाला है। जिन उत्तरदाताओं ने पशुओं को पाला है मकान में उनके रहने की जगह अलग से निर्धारित की गई है।
- अध्ययन में सम्मिलित 93 (31.00%) उत्तरदाताओं के परिवार में एकबत्ती बिजली कनेक्शन है। सर्वाधिक 194 (64.67%) उत्तरदाताओं के परिवार में बिजली का सामान्य कनेक्शन है। 05 (1.67%) उत्तरदाताओं

के परिवार में बिजली का कनेक्शन नहीं है, जबकि 08 (2.66%) उत्तरदाताओं के परिवार में बिजली का अवैध कनेक्शन है। स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाताओं के मकान में बिजली का सामान्य कनेक्शन है।

- अध्ययन में सम्मिलित 57 (19.00%) उत्तरदाताओं द्वारा अपने व्यक्तिगत पेयजल स्त्रोत का उपयोग किया जाता है। 18 (6.00%) उत्तरदाताओं द्वारा जातिगत पेयजल स्त्रोत का उपयोग किया जाता है, जबकि सर्वाधिक 225 (75.00%) उत्तरदाताओं द्वारा सार्वजनिक पेयजल स्त्रोत का उपयोग किया जाता है। स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाताओं द्वारा सार्वजनिक पेयजल का उपयोग किया जाता है।
- सर्वाधिक 199 (66.33%) उत्तरदाताओं के पास पेयजल के स्त्रोत के रूप में नल हैं। 15 (5.00%) उत्तरदाताओं के पास पेयजल के स्त्रोत के रूप में कुआं है। 57 (19.00%) उत्तरदाताओं के पास पेयजल के स्त्रोत के रूप में हैण्डपम्प है। 24 (8.00%) उत्तरदाताओं के पास पेयजल के स्त्रोत के रूप में ट्यूबवेल है, जबकि 05 (1.67%) उत्तरदाताओं द्वारा अन्य प्रकार के पेयजल के स्त्रोतों का उपयोग किया जाता है। स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाताओं के यहां पेयजल के स्त्रोत के रूप में नल है। इसके अतिरिक्त हैण्डपम्प, ट्यूबवेल एवं कुएं का भी उपयोग किया जाता है।
- अध्ययन में सम्मिलित सर्वाधिक 261 (87.00%) उत्तरदाताओं के अनुसार वे उनकी आवास की दशाओं से संतुष्ट नहीं है, जबकि मात्र 39 (13.00%) उत्तरदाता ही अपनी आवास की दशाओं से संतुष्ट हैं। स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश उत्तरदाता अपनी आवास की दशाओं से संतुष्ट नहीं है।
- अध्ययन म सम्मिलित 28 (10.73%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके मकान में पानी घुसता है इसलिये वे अपनी आवास की दशाओं से संतुष्ट नहीं है। 44 (16.86%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके मकान के आसपास दुर्गंध आती है, इसलिये वे अपनी आवास की दशाओं से संतुष्ट नहीं है। 31 (11.88%) उत्तरदाआतों के अनुसार उन्हें पीने का पानी साफ नहीं मिलता है, इसलिए वे अपनी आवास की दशाओं से संतुष्ट नहीं हैं, 38(14.55%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके मकान में स्नानागार/शौचालय की पर्याप्त सुविधा नहीं हैं, इसलिए वे अपनी आवास की दशाओं से असंतुष्ट हैं, जबकि सर्वाधिक 120 (45. 96%) उत्तरदाताओं के मकान में उक्त सभी समस्याएँ हैं इसलिए वे अपने आवास की दशाओं से संतुष्ट नहीं हैं। स्पष्ट है कि वर्तमान समय में वाल्मीकि समाज के उत्तरदाताओं द्वारा जहां निवास किया जाता है, उस रहवासी स्थल की दशाएँ अनुकूल नहीं है। उत्तरदाताओं के मकान में अनेक प्रकार की समस्याएँ विद्यमान हैं, जिनका सामना उनके द्वारा प्रतिदिन किया जाता है, किंतु इनका कोई स्थायी हल नहीं हो पाता है।
- सर्वाधिक 256 (85.33%) उत्तरदाताओं के अनुसार वे अपने परिवार के धार्मिक कार्यक्रमों में पण्डित को नहीं बुलाते हैं, जबकि 44 (14.67%) उत्तरदाताओं द्वारा अपने परिवार के धार्मिक कार्यक्रमों में पण्डित को बुलाया जाता है। स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाता अपने घर पर आयोजित पूजा–पाठ आदि कार्यक्रमों में पण्डितों को नहीं बुलाया जाता है। स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाता अपने घर पर आयोजित पूजा–पाठ आदि कार्यक्रमों में पण्डितों को नहीं बुलाते हैं, अपितु वे स्वयं ही पूजा–पाठ संपन्न कर लेते हैं।
- अध्ययन में सम्मिलित 44 उत्तरदाताओं में से 21 (47.33%) उत्तरदाताओं के अनुसार पण्डित उनके आमंत्रण को सहर्ष स्वीकार कर लेते हैं। 08 (18.18%) उत्तरदाताओं के अनुसार परिवार में धार्मिक कार्य के अवसर पर पण्डित उनके आमंत्रण को सहर्ष स्वीकार नहीं करते हैं, जबकि 15 (34.09%) उत्तरदाताओं के अनुसार पण्डित कभी कभी ही उनके आमंत्रत्रण को सहर्ष स्वीकार करते हैं। स्पष्ट है कि वाल्मीकि समाज में उत्तरदाताओं द्वारा पूजा–पाठ हेतु पण्डितों को बुलाये जाने की स्थिति में वे आ जाते हैं, किंतु वे सहज उपलब्ध नहीं होते हैं।
- 57 (19.00%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके समाज की धर्मशाला को अन्य जाति के लोग शादी विवाह के अवसर पर लेते हैं। सर्वाधिक 166 (55.33%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके समाज की धर्मशाला को अन्य जाति के लोग शादी विवाह के अवसर पर नहीं लेते हैं, जबकि 77 (25.67%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके समाज की धर्मशाला को अन्य जाति के लोग कभी कभी ही शादी विवाह के अवसर पर

लेते हैं। स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाताओं के अनुसार अन्य वर्ग के लोगों द्वारा वाल्मीकि समाज की धर्मशाला शादी–ब्याह या अन्य अवसरों पर नहीं ली जाती है।

- अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं ने अपनी जाति पंचायत के एक से अधिक कार्य बताये हैं। इस प्रश्न के संबंध में उत्तरदाताओं से एक से अधिक उत्तर प्राप्त हुआ है। 88 (29.33%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनकी जाति पंचायत का प्रमुख कार्य शिक्षा प्रदान करना है। 153 (51%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनकी जाति पंचायत का प्रमुख कार्य सांस्कृतिक है। 251 (83.66%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनकी जाति पंचायत का प्रमुख कार्य सामाजिक कार्यक्रमों को निभाना होता है। 209 (69.66%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनकी जाति पंचायतों का प्रमुख कार्य धार्मिक है। 14(4.66%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनकी जाति पंचायतों द्वारा अन्य कार्य किये जाते हैं। जबकि सर्वाधिक 282 (94%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनकी जाति पंचायतों द्वारा उक्त सभो कार्यों को संपन्न किया जाता है।
- अध्ययन में सम्मिलित 131 (43.67%) उत्तरदाताओं के अनुसार उन्हें अपने परम्परागत व्यवसाय को छोड़कर अन्य व्यवसाय या कार्य करने की स्वतंत्रता प्राप्त थी, जबकि 169 (56.33%) उत्तरदाताओं के अनुसार उन्हें अपने परम्परागत व्यवसाय को छोड़कर अन्य कार्य करने की स्वतंत्रता प्राप्त नहीं थी। स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाताओं को अपना परम्परागत व्यवसाय बदलने की स्वतंत्रता प्राप्त नहीं थी, किंतु फिर भी उन्होंने अपने पैतृक व्यवसाय को त्यागकर नवीन व्यवसाय को अपनाया है।
- अध्ययन में सम्मिलित 77 (25.67%) उत्तरदाताओं के साथ जातिगत आधार पर भेदभाव होने पर उन्होंने इसकी रिपोर्ट दर्ज करवाई थी। 17 (5.67%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके साथ जातिगत आधार पर भेदभाव होने पर उन्होंने इसकी रिपोर्ट दर्ज नहीं। जबकि सर्वाधिक 206(68.66%) उत्तरदाताओं के साथ जातिगत आधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव नही हुआ।
- अध्ययन में सम्मिलित जातिगत आधार पर भेदभाव किये जाने की स्थिति में पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराने पर 07 (09.09%) उत्तरदाताओं के अनुसार तत्काल कार्यवाही की गई। 31 (40.25%) उत्तरदाताओं के अनुसार पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराने के बहुत समय पष्चात् किसी प्रकार की कार्यवाही की गई थी। 12 (15.58%) उत्तरदाताओं के अनुसार पुलिस द्वारा टालमटोल की गई, जबकि 27 (35.06%) उत्तरदाताओं के अनुसार पुलिस में शिकायत दर्ज कराने के पश्चात् आंशिक रूप से किसो प्रकार की कार्यवाही की गई थी।
- अध्ययन में सम्मिलित अध्ययन में सम्मिलित 23 (29.87%) उत्तरदाताओं के अनुसार न्यायालय द्वारा उनके पक्ष में निर्णय दिया गया था। 04 (5.19%) उत्तरदाताओं के अनुसार न्यायालय द्वारा उनके विपक्ष में निर्णय दिया गया था, जबकि 50 (64.94%) उत्तरदाताओं के अनुसार प्रकरण अभी लम्बित है।
- अध्ययन में सम्मिलित सर्वाधिक 181 (60.33%) उत्तरदाताओं के अनुसार उन्हें सरकार द्वारा चलाई जाने वाली सफाईकर्मी पुनर्वास योजना की जानकारी है। 38 (12.67%) उत्तरदाताओं को सफाईकर्मी पुनर्वास योजना के बारे में जानकारी नहीं ह, जबकि 81 (27.00%) उत्तरदाताओं को सफाईकर्मी पुनर्वास योजना के बारे में आंशिक जानकारी ही है।
- अध्ययन में सम्मिलित सफाईकर्मी पुनर्वास योजना की जानकारी रखने वाले 181 उत्तरदाताओं में से 69 (38.12%) उत्तरदाताओं के अनुसार उन्होंने इस योजना से किसी प्रकार का लाभ प्राप्त किया है, जबकि सर्वाधिक 112 (61.88%) उत्तरदाताओं के अनुसार उन्होंने इस योजना से किसी प्रकार का लाभ प्राप्त नहीं किया है।
- अध्ययन में सम्मिलित ऋण लेकर नवीन व्यवसाय करने वाले 61 उत्तरदाताओं में से 40 (65.58%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके ऋण की अदायगो नियमित रूप से हो रही है, जबकि 21 (34.42%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके ऋण की अदायगी नियमित रूप से नहीं हो रही है।
- अध्ययन में सम्मिलित ऋण की नियमित अदायगी नहीं करने वाले 21 उत्तरदाताओं में से 14 (66.67%) उत्तरदाताओं के अनुसार उन्होंने ऋण की राशि को अन्य कार्य में लगा दिया इसलिये ऋण की अदायगी नियमित रूप से नहीं की जा रही है। 05 (23.80%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनका व्यवसाय

ठीक नहीं चल रहा है इस कारण वे अपने द्वारा लिये गये ऋण की अदायगी नियमित रूप से नहीं कर पा रहे हैं। 02 (9.53%) उत्तरदाताओं के अनुसार वे अन्य कारणों से ऋण की अदायगी नियमित रूप से नहीं कर पा रहे हैं।

- अध्ययन में सम्मिलित सर्वाधिक 267 (89.00%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके मोहल्ले में विकास एवं कल्याण हेतु किसी प्रकार की संस्था कार्यरत है, जबकि 33 (11.00%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके मोहल्ले में कल्याण एवं विकास हेतु किसी प्रकार की संस्था कार्यरत नहीं है।
- अध्ययन में सम्मिलित सर्वाधिक 212 (70.67%) उत्तरदाताओं के अनुसार वे अपने सभी परम्परागत त्यौहारों को मनाते हैं। 05 (1.67%) उत्तरदाताओं के अनुसार वे अपने सभी परम्परागत त्यौहारों को नहीं मनाते हैं, जबकि 83 (27.66%) उत्तरदाताओं के अनुसार वे अपने परम्परागत त्यौहारों को आंशिक रूप से ही मनाते हैं।
- अध्ययन में सम्मिलित 20 (06.67%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके अन्य जातियों के साथ खान–पान के संबंध है। सर्वाधिक 218 (72.67%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके अन्य जातियों के साथ खानपान के संबंध नहीं हैं, जबकि 62 (20.67%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके अन्य जातियों के साथ खानपान के संबंध आंशिक रूप से हैं। स्पष्ट है कि वाल्मीकि समाज के उत्तरदाताओं का अन्य समाज के लोगों के साथ खानपान के संबंध बने हुए है।
- अध्ययन मे सम्मिलित किसी भी उत्तरदाता ने यह नहीं बताया कि अन्य जाति के लोगों के यहाँ वे आते–जाते हैं। 17 (5.67%) उत्तरदाताओं ने बताया कि सिर्फ वे हमारे घर पर आते हैं। 03 (1.00%) उत्तरदाताओं ने बताया कि केवल वे उनके घर जाते हैं, जबकि सर्वाधिक 280 (93.33%) उत्तरदाताओं के अनुसार दोनों ही एक दूसरे के घर नहीं आते जाते हैं। स्पष्ट होता है कि वाल्मीकि समाज के लोगों के यहाँ पर अन्य समाज के लोगों का आना जाना नहीं होता है।
- अध्ययन में सम्मिलित 122 (40.67%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके पिछले पाँच–दस वर्षों में भेदभाव, अत्याचार, अस्पृश्यता संबंधी विवाद हुए हैं, जबकि सर्वाधिक 178 (59.33%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके पाँच–दस वर्षों में इस प्रकार के कोई विवाद नहीं हुए है।
- पिछले पाँच–दस वर्षों में किसी प्रकार के विवाद होने की स्थिति बताते वाले उत्तरदाताओं में से 03 (2.45%) उत्तरदाताओं के शादी ब्याह संबंधी विवाद हुए हैं। 07 (5.74%) उत्तरदाताओं के मजदूरी संबंधी विवाद हुए है। 11 (09.01%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके महिलाओं संबंधी विवाद हुए हैं। 18 (14.75%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके सार्वजनिक स्थल के उपयोग संबधी विवाद हुए हैं। 04 (3.27%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके पानी भरने संबंधी विवाद हुए हैं। 77 (63.11%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके जाति संबंधी विवाद हुए हैं, जबकि 02 (1.64%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके अन्य प्रकार के विवाद हुए हैं। स्पष्ट है कि पिछले पाँच–दस वर्षों में उत्तरदाताओं के अधिकांश विवाद जातिगत आधार पर हुए हैं।
- पिछले पाँच–दस वर्षों में किसी प्रकार का विवाद होने की स्थिति बताने वाले उत्तरदाताओं में से 64 (52.46%) उत्तरदाताओं के अनुसार इस प्रकार के विवाद में केवल पुरूष सम्मिलित थे। 23 (18.86%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके विवाद में केवल महिलाएँ ही सम्मिलित थीं, जबकि 35 (28.68%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके इस प्रकार के विवाद में पुरूष एवं महिलाएँ दोनों ही सम्मिलित थीं।
- सर्वाधिक 287 (95.67%) उत्तरदाताओं के अनुसार गैर अनुसूचित जाति के लोगों द्वारा उन्हें काम पर लेने से मना किया है या कम मजदूरी दी गई, जबकि 13 (4.33%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके साथ गैर अनुसूचित जाति के लोगों द्वारा इस प्रकार का व्यवहार नहीं किया गया। स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाताओं के अनुसार उन्हें गैर अनुसूचित जाति के लोगों द्वारा काम पर लेने से मना किया जाता है या उन्हें कम मजदूरी दी जाती है।
- सर्वाधिक 197 (65.67%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके बच्चों को स्कूल में अन्य जातियों के बच्चों से अलग बैठाया जाता है, जबकि 103 (34.33%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके बच्चों को स्कूल में अन्य

बच्चो के साथ ही बैठाया जाता है और उनसे किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाता है। स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाताओं के अनुसार विद्यालय में उनके बच्चों को अलग बैठाया जाता है और उनके साथ जातिगत आधार पर भेदभाव किया जाता है।

- अध्ययन में सम्मिलित 110 (36.67%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके परिवार को मोहल्ले में शादी ब्याह/ग्रामसभा जैसे कार्यक्रमों में अलग पंगत में बैठाकर भोजन कराया जाता है, जबकि सर्वाधिक 190 (63.33%) उत्तरदाताओं के अनुसार उन्हें अलग पंगत में बैठाकर भोजन नहीं कराया जाता है। स्पष्ट है शादी विवाह के अवसर या अन्य अवसरों पर सामान्यतः वाल्मीकि समाज के लोग भी साथ में बैठकर ही भोजन करते हैं, किंतु कहीं–कहीं पर आज भी इन लोगों को अलग से भोजन ग्रहण करने हेतु बैठाया जाता है।
- अध्ययन में सम्मिलित 38 (12.67%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनकी जाति पर माहल्ले में किसी प्रकार का परम्परागत प्रतिबंध है, जबकि सर्वाधिक 262 (87.33%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनकी जाति पर मोहल्ले में किसी भी प्रकार का परम्परागत प्रतिबंध नहीं है। स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाताओं को जातिगत आधार पर उनके मोहल्ले में किसी प्रकार का कोइ प्रतिबंध नहीं है। वे सामाजिक एवं आर्थिक रूप से अपने निर्णय स्वयं लेते हैं।
- अध्ययन में सम्मिलित सर्वाधिक 215 (71.67%) उत्तरदाताओं के अनुसार उन्हें कार्य के दौरान अस्वच्छ कार्य जैसे मरे जानवर उठाना/साफ–सफाई करने हेतु बाध्य किया जाता है, जबकि 85 (29.33%) उत्तरदाताओं के अनुसार उन्हें मरे जानवर उठाना/साफ–सफाई हेतु किसी प्रकार से बाध्य नहीं किया जाता है। स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाताओं को कार्य के दौरान अस्वच्छ कार्य जैसे मरे जानवर उठाना या साफ/सफाई करने हेतु बाध्य किया जाता है।
- अध्ययन में सम्मिलित परंपरागत व्यवसाय को अपनाने वाले उत्तरदाताओं में 8.02 प्रतिशत अनपढ़ हैं। 25.13 प्रतिशत साक्षर हैं, 19.25 प्रतिशत प्राथमिक स्तर तक शिक्षित हैं, 29.94 प्रतिशत उत्तरदाता माध्यमिक स्तर तक शिक्षित हैं, जबकि 17.64 प्रतिशत उत्तरदाता हाईस्कूल/हायरसेकेण्डरी स्तर तक शिक्षित हैं। स्नातक /स्नातकोत्तर स्तर तक शिक्षित शत प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा शिक्षक, पुलिस, प्रशासनिक सेवा एवं आईएएस/आईपीएस के रूप में अपना व्यवसाय/नौकरी की जा रही है। नवीन व्यवसाय करने वाले उत्तरदाताओं में 11.47 प्रतिशत प्राथमिक स्तर तक, 16.39 प्रतिशत माध्यमिक स्तर तक, 62.29 प्रतिशता हाई स्कूल/हायर सेकेण्डरी स्तर तक एवं 9.83 प्रतिशत उत्तरदाता स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर तक शिक्षित हैं।
- अध्ययन में सम्मिलित 18–25 वर्ष की आयु वाले 53.84 प्रतिशत उत्तरदाता शिक्षक है। 23.07 प्रतिशत उत्तरदाता पुलिस सेवा में हैं, जबकि 23.07 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नवीन व्यवसाय अपना लिया है। 26–35 वर्ष की आयु वाले 5.26 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा परंपरागत व्यवसाय किया जा रहा है। 36. 84 प्रतिशत उत्तरदाता शिक्षक हैं, 18.42 प्रतिशत, 10.52 प्रतिशत प्रशासनिक सेवा, 5.26 प्रतिशत आईएएस/आईपीएस एवं 23.68 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नवीन व्यवसाय अपनाया है। 36–45 वर्ष की आयु समूह के मध्य परंपरागत कार्य करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 55.96 रही है। 2.43 प्रतिशत उत्तरदाता शिक्षक हैं, जबकि 10.56 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नवीन व्यवसाय अपना लिया है। 55 से अधिक आयु वाले शत प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा पंरपरागत व्यवसाय किया जाता है।
- अध्ययन में सम्मिलित 245 पुरूष उत्तरदाताओं में से सर्वाधिक 158(64.48) उत्तरदाताओं द्वारा परंपरागत व्यवसाय किया जाता है। पुरूषों में 10.61 प्रतिशत शिक्षक, 3.68 प्रतिशत पुलिस, 1.63 प्रतिशत प्रशासनिक सेवा, 0.82 प्रतिशत आईएएस/आइपी.एस. एवं 18.78 प्रतिशत ने नवीन व्यवसाय अपनाया है। इसी प्रकार 55 महिला उत्तरदाताओं में से सर्वाधिक 29(52.72) उत्तरदाताओं द्वारा परंपरागत व्यवसाय किया जाता है। 14.55 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं शिक्षक, 3.64 प्रतिशत पुलिस, 1.82 प्रतिशत प्रशासनिक सेवा एवं 27.27 प्रतिशत नवीन व्यवसाय अपनाया है।
- अध्ययन में सम्मिलित पुरूषों की तुलना में महिलाओं में निरक्षरों की संख्या अधिक पाई गई महिलाओं में यह प्रतिशत 9.09 था वहीं, पुरूषों में यह प्रतिशत 4.09 था। साक्षरों में पुरूषों का प्रतिशत 17.96 रहा जो महिलाओं के प्रतिशत 5.45 से अधिक है। प्राथमिक स्तर तक शिक्षा प्राप्त महिलाओं का प्रतिशत 34.55 रहा जबकि पुरूषों में यह प्रतिशत 9.80 रहा। माध्यमिक स्तर तक शिक्षा प्राप्त पुरूषों का प्रतिशत 23.67

रहा जबकि महिलाओं में यह प्रतिशत 14.55 रहा। हाईस्कूल एवं हायर सेकेण्डरी स्तर तक शिक्षा का प्रतिशत महिलाओं एवं पुरूषों में क्रमशः 23.67 एवं 23.63 रहा। स्नातक स्तर तक शिक्षा प्राप्त महिलाओं की तुलना में पुरूषों का प्रतिशत अधिक रहा। महिलाओं में यह प्रतिशत 12.73 था, जबकि पुरूषों में यह प्रतिशत 20.82 रहा था।

- अध्ययन में सम्मिलित 3000 रू. प्रतिमाह से कम में भी 9.33 उत्तरादाता अपना गुजर–बसर कर रहे हैं, इन उत्तरदाताओं में 2–4 सदस्यों की संख्या वाले 16.67 प्रतिशत परिवार हैं, 13.40 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में सदस्येां की संख्या 5–8 है, 1.67 उत्तरदाताओं के परिवारमें 9–12 सदस्य थे, जबकि 13.04 उत्तरदाताओं के परिवार में 13 से अधिक सदस्य हैं। 21.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 3001–6000 रू. के मध्य है, इन उत्तरदाताओं में 20 प्रतिश्ता उत्तरदाताओं के परिवार में सदस्यों की संख्या 2–4 है, 27.84 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में सदस्यों की संख्या 5–8 है, 16. 67 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में सदस्यों की संख्या 9–12 है, जबकि 17.39 प्रतिशत परिवारों में सदस्यों की संख्या 3 से अधिक है। 6001–9000 रू. प्रतिमाह आय वाले परिवारों का कुल प्रतिशत 17 रहा है, जिसमें 13.33 प्रतिशत परिवारों में सदस्यों की संख्या 2–4 रही है, 16.49 प्रतिशत परिवारों में सदस्यों की संख्या 5–8 रही है, 18.33 प्रतिशत परिवारेां में सदस्यों की संख्या 9–12 रही है, 21.74 प्रतिशत परिवारेां में सदस्यों की संख्या 13 से अधिक रही है। 9001 से 12000 रू. तक मासिक आय वाले परिवारों का प्रतिवारों का 14.67 रहा है, जिसमें 15 प्रतिशत परिवारेां में 2–4 सदस्य हैं। 1.03 प्रतिशत परिवारों में 5–8 सदस्य हैं, 27.55 प्रतिशत परिवारों में 9–12 सदस्य हैं, 4.34 प्रतिशत परिवारेां में 13 से अधिक सदस्य है। 12001–15000 रू. तक मासिक आय वाले परिवारेां का कुल प्रतिशत 12.67 रहा है, इन उत्तरदाताओं में 8.33 प्रतिशत परिवारेां में सदस्यों की संख्या 2–4 रही है, 11.34 प्रतिशत परिवारों में 5–8 सदस्य, 16.67 प्रतिशत परिवारों में 9–12 सदस्य, 8.70 प्रतिशत परिवारों में 13 से अधिक सदस्य हैं। 15001 से अधिक आय वाले परिवारों का प्रतिशत 25.33 रहा है, इनमें 26.67 प्रतिशत परिवारेा में सदस्यों की संख्या 2–4 रही है, 29.90 प्रतिशत परिवारों में सदस्यों की संख्या 5–8 रही है, 19.16 प्रतिशत परिवारेां में सदस्यों की संख्या 9–12 रही है, 34.79 प्रतिशत परिवारों में सदस्यों की संख्या 13 से अधिक रही है।
- अध्ययन में सम्मिलित 61 प्रतिशत उत्तरदाता संयुक्त परिवारेां में एवं 39 प्रतिश उत्तरदाता एकाकी परिवारेां में निवास करते हैं। संयुक्त परिवार में निवास करने वाले 26.69 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार उनके परिवार की रहवासी दशा पहले अच्छी थी, सर्वाधिक 56.83 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार उनकी रहवासी दशा पूर्व में खराब थी, किन्तु अब अच्छी हो गई है, जबकि 17.48 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार उनकी रहवासी दशा पूर्व की तुलना में किसी प्रकार का अन्तर नहीं आया है। एकाकी परिवारों में 20.51 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार उनक परिवार की रहवासी दशा पूर्व में अच्छी थी, सर्वाधिक 59.83 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार उनके परिवार की रहवासी दशा पहले खराब थी, जबकि 19.66 प्रतिशत उततरदाताओं के अनुसार उनके परिवार की रहवासी दशा में किसी प्रकार का कोई अन्तर नहीं हुआ है।
- अध्ययन में सम्मिलित 10 (03.33%) उत्तरदाताओं का वर्तमान में मुख्य व्यवसाय मैला ढोना रहा है। 18 (6.00%) उत्तरदाताओं का मुख्य व्यवसाय ड्रेनेज के माध्यम से मैला सफाई करना है। 22 (7.33%) उत्तरदाताओं का वर्तमान में मुख्य व्यवसाय रोड़ व नाली की सफाई करना है। मात्र 43 (14.33%) उत्तरदाता वर्तमान में शासकीय सफाईकर्मी हैं। 37 (12.33%) उत्तरदाता निजी रूप से सफाईकर्मी के रूप में हैं। 32 (10.67%) उत्तरदाताओं ने आज भी जागीरदारी प्रथा को अपना रखा है। 25 (8.33%) उत्तरदाता बेलदारी करते हैं। 28 (9.33%) उत्तरदाता शिक्षक हैं। 11 (3.67%) उत्तरदाता पुलिस सेवा में हैं। 05 (1.67%) उत्तरदाता राज्य प्रशासनिक सेवा में हैं। 02 (0.67%) उत्तरदाता आई.ए.एस./आई.पी. एस. हैं, जबकि 61 (20.33%) उत्तरदाताओं ने नवीन व्यवसाय अपना लिया है।
- अध्ययन में सम्मिलित परंपरागत व्यवसाय को अपनाने वाले 187 उत्तरदाताओं में से 10 (5.34) उत्तरदाताओं द्वारा मैला ढोने का कार्य किया जाता है। 18 (9.63) उत्तरदाताओं द्वारा ड्रेनेज से मैला साफ किया जाता है। 22(11.77) उत्तरदाताओं द्वारा रोड़ व नालियों की सफाई की जाती है। सर्वाधिक

43 (20.00) उत्तरदाता शासकीय सफाईकर्मी है। 37 (19.79) उत्तरदाता अशासकीय सफाईकर्मी है। 32 (17.11) उत्तरदाता भागीदारी का काम करते हैं, जबकि 25 (13.36) प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा बेलदारी का कार्य किया जाता है।

- अध्ययन में सम्मिलित परंपरागत व्यवसाय का त्याग कर नवीन नौकरी/ व्यवसाय को अपनाने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत परंपरागत व्यवसाय करने वाले उत्तरदाताओं की तुलना में कम रहा है। नवीन प्रतिष्ठित नौकरी या व्यवसाय करने वाले 113 उत्तरदाताओं में से 34 (30.08) उत्तरदाताओं द्वारा शिक्षक का कार्य किया जाता है। 11 (09.74) उत्तरदाताओं द्वारा पुलिस का कार्य किया जाता है 5 (4.42) उत्तरदाताओं द्वारा राज्य प्रशासनिक सेवा के अन्तर्गत द्वितीय श्रेणी सेवाएँ प्रदान की जाती हैं। 02 (1. 77) उत्तरदाता आईएएस/आईपीएस बनकर सेवाएँ दे रहे हैं, जबकि 61 (53.99) उत्तरदाताओं द्वारा नवीन व्यवसाय किया जा रहा है।
- अध्ययन में सम्मिलित 28 (9.33%) उत्तरदाताओं की मासिक आय 3000 रू. से कम है। 63 (21.00%) उत्तरदाताओं की मासिक आय 3001 से 6000 रू. के मध्य है। 51 (17.00%) उत्तरदाताओं की मासिक आय 6001 से 9000 रू के मध्य है। 44 (14.67%) उत्तरदाताओं की मासिक आय 9001 से 12000 रू. के मध्य है। 38 (12.67%) उत्तरदाताओं की मासिक आय 12001 से 15000 रू. के मध्य है, जबकि 15001 रू. से अधिक मासिक आय वाले उत्तरदाताओं की संख्या 76 (25.33%) रही है। स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित वाल्मीकि समाज के उत्तरदाताओं की मासिक आय अत्यन्त कम है।
- 71 (23.67%) उत्तरदाताओं के अनुसार पिता/दाता के समय आवास की दशा अच्छी थी, सर्वाधिक 174 (58.00%) उत्तरदाताओं के अनुसार पहले आवास की दशा खराब थी, किन्तु अब अच्छी थी, जबकि 55 (18.33%) उत्तरदाताअें के अनुसार पिता/दादा के समय और आज के समय की रहवासी दशाओं के मध्य किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ है। स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाताओं के अनुसार वे अभी जिस भी स्थिति में रहते हैं, उनकी आवास की दशाएँ उनके पिता/दादा के समय की आवास की दशाओं से अच्छी है।
- सर्वाधिक 147 (49.00%) उत्तरदाताओं को या उनके परिवार के सदस्यों को अन्य जाति के लोग प्रथम नाम से बुलाते हैं। 141 (47.00%) उत्तरदाताओं को या उनके परिवार के सदस्यों को अन्य जाति के लोग उपनाम से बुलाते हैं। 08 (2.67%) उत्तरदाताओं को या उनके परिवार के सदस्येां को अन्य जाति के लोग जातिगत नाम से बुलाते हैं, जबकि 04 (1.33%) उत्तरदाताओं को या उनके परिवार के सदस्यों को अन्य जाति क लोग अन्य नाम से बुलाते हैं। स्पष्ट है कि वर्तमान समय में वाल्मीकि समाज के लोगों के प्रति अन्य समाज के लोगों की धारणाओं में धीरे–धीरे सकारात्मक परिवर्तन आने लगा है, किन्तु इसकी गति अभी धीमी है।
- अध्ययन में सम्मिलित 35 (11.67%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनक परम्परागत व्यवसाय एवं जाति के प्रति लोगों का दृष्टिकोण परिवर्तित हुआ है। 107 (35.67%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके परम्परागत व्यवसाय एवं जाति के प्रति लोगों का दृष्टिकोण परिवर्तित नहीं हुआ है, जबकि 158 (52.66%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके परम्परागत व्यवसाय एवं जाति के प्रति अन्य जाति के लोगों का दृष्टिकोण आंशिक रूप से ही परिवर्तित हुआ है। स्पष्ट है कि वाल्मीकि समाज के लोगों के प्रति अन्य समाज के लोगों का परम्परागत दृष्टिकोण पूर्ण रूप से परिवर्तित नहीं हुआ है। आज भी अधिकांश उत्तरदाताओं के अनुसार उन्हें अन्य समाज के लोगों द्वारा हीन दृष्टि से ही देखा जाता है।
- अध्ययन में सम्मिलित 117 (39.00%) उत्तरदाताओं के अनुसार उन्होंने अपना परम्परागत व्यवसाय अपना रखा है। सर्वाधिक 113 (37.66%) उत्तरदाताओं ने वर्तमान समय में अपना परम्परागत व्यवसाय त्याग दिया है, जबकि 70 (23.33%) उत्तरदाताओं के अनुसार वर्तमान में उन्होंने अपना परम्परागत व्यवसाय आंशिक रूप से अपना रखा है।
- अध्ययन में सम्मिलित वे उत्तरदाता जिन्होंने वर्तमान समय में भी अपने परम्परागत व्यवसाय को अपना रखा है उनमें से 28 (14.95%) उत्तरदाताओं के अनुसार गरीबी के कारण वे अपने परम्परागत व्यवसाय को त्याग नहीं पाये हैं। 56 (28.92%) उत्तरदाताओं के अनुसार अशिक्षा के कारण वे अपने परम्परागत

व्यवसाय को त्याग नहीं पाये हैं। 61 (34.26%) उत्तरदाताओं के अनुसार उन्हें अन्य कोई कार्य नहीं मिल पाने के कारण वे अपने परम्परागत व्यवसाय को नहीं त्याग पाये, जबकि 42 (23.60%) उत्तरदाता उक्त सभी कारणों से अपने परम्परागत व्यवसाय को त्याग नहीं पाये हैं।

- अध्ययन में सम्मिलित सर्वाधिक 187 (62.33%) उत्तरदाताओं के अनुसार उन्होंने वर्तमान समय में अपने परम्परागत व्यवसाय को नहीं बदला है, जबकि 113 (37.67%) उत्तरदाताओं ने अपने परम्परागत व्यवसाय को परिवर्तित कर लिया है।
- अध्ययन में सम्मिलित अपना परम्परागत व्यवसाय बदलने वाले उत्तरदाताओं में से 10 (8.19%) उत्तरदाताओं के अनुसार पूर्व व्यवसाय अलाभकारी होने के कारण उन्होंने बदला परम्परागत व्यवसाय बदला है। 09 (7.38%) उत्तरदाताओं के अनुसार शासकीय योजनाओं का लाभ लेकर उन्होंने अपना परम्परागत व्यवसाय बदला है। 07(5.74%) उत्तरदाताओं के अनुसार उन्होंने आरक्षण का लाभ लेकर अपने परम्परागत व्यवसाय को बदला है। 46(37.71%) उत्तरदाताओं को सरकारी नौकरी प्राप्त होने के कारण उन्होंने अपने परम्परागत व्यवसाय को बदला है। 5(4.09%) उत्तरदाताओं के अनुसार उन्होंने संचार एवं यातायात के साधनों का विस्तार होने के कारण अपने परम्परागत व्यवसाय को परिवर्तित किया है, जबकि 27(22.13%) उत्तरदाताओं ने हीनभावना से ग्रसित होकर अपने परम्परागत व्यवसाय को परिवर्तित किया है।
- नवीन व्यवसाय अपनाने वाले 61 उत्तरदाताओं में से मात्र 35(57.37%) उत्तरदाताओं ने अपने व्यवसाय का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। 11(18.03%) उत्तरदाताओं ने अपने व्यवसाय का प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया है, जबकि 15(24.59%) उत्तरदाताओं ने अपने व्यवसाय का प्रशिक्षण आंशिक रूप से प्राप्त किया है।
- व्यवसाय प्रशिक्षण लेने वाले उत्तरदाताओं में से 19(38.00%) उत्तरदाताओं द्वारा औद्योगिक प्रशिक्षण प्राप्त किया गया था। 31(62.00%) उत्तरदाताओं द्वारा उत्पादन संबंधी प्रशिक्षण प्राप्त किया गया था, जबकि कृषि एवं अन्य राजगार संबंधी प्रशिक्षण किसी भी उत्तरदाता ने प्राप्त नहीं किया है।
- अध्ययन में सम्मिलित सर्वाधिक 274 (91.33%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके परिवार के सदस्य एक ही स्थान से गैर–जाति के लोगों के साथ पानी नहीं भरते हैं। 21 (7.00%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके परिवार के सदस्य एक ही स्थान से गैर जाति के लोगों के साथ पानी भरते हैं, जबकि 05 (1. 67%) उत्तरदाताओं के अनुसार कभी कभी ही उनके परिवार के सदस्य एक ही स्थान से गैर जाति के लोगों के साथ पानी भरते हैं।
- मात्र 23 (7.67%) उत्तरदाताओं के परिवार में किसी महिला सदस्य द्वारा उच्च शिक्षा प्राप्त की गई थी, जबकि सर्वाधिक 277(92.33%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके परिवार में किसी भी महिला सदस्य ने उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं की है। स्पष्ट है कि वाल्मीकि समाज के उत्तरदाताओं के परिवार में महिलाओं द्वारा उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं की जाती है।
- परिवार में किसी महिला द्वारा उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाने के कारणों में उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 60 (21.67%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके परिवार की महिलाओं ने पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी। सर्वाधिक 141 (50.91%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके परिवार की महिलाओं को घर के लोगों ने आगे पढ़ने नहीं दिया। 43 (15.52%) उत्तरदाताओं के अनुसार महिलाओं की शादी हो जाने के कारण वे उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकीं। 24 (8.66%) उत्तरदाताओं के अनुसार कॉलेज घर से दूर होने के कारण वे उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकी, जबकि 09 (3.24%) उत्तरदाताओं के अनुसार महिलाओं द्वारा उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाने के अन्य कारण रहे हैं।
- परम्परागत व्यवसाय को त्यागकर नवीन व्यवसाय/नौकरी करने वाले 111(90.99%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं। 11(9.01%) उत्तरदाताओं के अनुसार नवीन व्यवसाय/नौकरी को अपनाने के पश्चात् उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नही हुआ है, जबकि नवीन व्यवसाय/नौकरी को अपनाने के पश्चात् सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में नकारात्मक परिवर्तन बताने वाले उत्तरदाताओं की संख्या शून्य रही है।

स्पष्ट है कि अपने परम्परागत व्यवसाय को त्यागकर नवीन व्यवसाय अपनाने वाले अधिकांश उततरदाताओं के अनुसार उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति पूर्व से अधिक अच्छी हुई है।

- नवीन व्यवसाय को अपनाने वाले 61 उत्तरदाताओं में से सर्वाधिक 46(75.40%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनकी आमदनी पूर्व के व्यवसाय की तुलना में अधिक है, जबकि 15(24.60%) उत्तरदाताओं के अनुसार उनके नवीन व्यवसाय की आमदनी पूर्व की आमदनी से कम है। स्पष्ट है कि अपने पैतृक व्यवसाय को त्याग कर नवीन व्यवसाय अपनाने वाले उत्तरदाताओ की आर्थिक स्थिति में पूर्व की आर्थिक स्थिति में पूर्व की अपेक्षा अधिक सकारात्मक परिवर्तन हुआ है।
- 38(12.67%) उत्तरदाताओं के अनुसार विवाह/मृत्यु के अवसर पर दोनों एक दूसरे के घर आते–जाते हैं। 25(8.33%) उत्तरदाताओं के अनुसार केवल वे ही हमारे घर आते है। 20(6.67%) उत्तरदाताओं के अनुसार केवल हम उनके यहाँ जाते हैं, जबकि सर्वाधिक 217(72.33%) उत्तरदाताओं के अनुसार दोनों ही एक दूसरे के यहाँ नहीं आते जाते हैं। स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाताओं के अनुसार विवाह/मृत्यु के अवसर पर भी अन्य समाज के लोगों का उनके यहाँ पर आना जाना नहीं होता है।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि वर्तमान समय में शिक्षा, जागरूकता एवं सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयासों के परिणामस्वरूप वाल्मीकि समाज में सामाजिक एवं आर्थिक गतिशीलता देखने को मिलती है, हालाँकि इसकी गति अत्यन्त धीमी है। वाल्मीकि समाज की गतिशीलता में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षा प्राप्त कर वाल्मीकि समाज के युवक–युवतियों द्वारा सरकारी नौकरी एवं रोजगार को अपनाया जा रहा है, जिससे उनमें सामाजिक एवं आर्थिक गतिशीलता हुई है। इसके साथ ही अपने परम्परागत व्यवसाय को त्यागकर नवीन राजगार अपनाने के कारण भी उत्तरदाताओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन हुआ है। औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के परिणामस्वरूप वाल्मीकि समाज पर लादी गई प्राचीन निर्योग्यताओं में कमी आने लगी है।

सुझाव

शोधार्थी द्वारा वाल्मीकि समाज की प्रस्थिति एवं गतिशीलता का अध्ययन वैज्ञानिक शौध पद्धति द्वारा किया गया जिससे महत्वपूर्ण निष्कर्ष सामने आये प्रस्थिति एवं गतिशीलता में परिवर्तन हेतु आ रही समस्याओं के समाधान हेतु महत्वपूर्ण सुझाव व तथ्यात्मक विश्लेषण पर सामने आए जो इस प्रकार है–

1. अध्ययन में पाया गया कि वाल्मीकि परिवारों के बच्चों के साथ स्कूल में भेदभाव होता है। प्राचार्य व अध्यापकों आदि को निर्देश दिया जाना चाहिए कि बच्चों के साथ किसी प्रकार का भेदभाव न हो तथा वाल्मीकि समाज के बच्चों को शिक्षा से संबंधित समस्त सामग्री निःशुल्क या कम कीमत पर उपलब्ध करायी जानी चाहिए।

2. अध्ययन में पाया गया कि वाल्मीकि समाज के अधिकांश बच्चे सरकारी स्कूल में ही पढ़ाई करते है। इन परिवारों के बच्चों को बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में पढ़ाये जाने के लिए औपचारिकता सरल की जाए।

   प्रत्यक्ष अवलोकन के आधार पाया गया कि जिन परिवारों के पास गरीबी रेखा के कार्ड नहीं है, उनके बच्चों को स्कूल में एडमिशन नहीं मिल पाता है। गरीबी रेखा, आय प्रमाण पत्र, जाति प्रमाण पत्र आदि बनवाने की प्रक्रिया सरल की जाए साथ ही साथ इसका दुरूपयोग होने से रोका जाए।

3. वाल्मीकि समाज क लोग अपनी लड़कियों की शादी जल्दी कर देते है। या घर से पढ़ने नहीं दिया जाता आदि कारण है। बालिकाओं को उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। बच्चों को वर्तमान में प्राप्त हो रही छात्रवृत्ति की दर को बढ़ाया जाना चाहिए।

4. वाल्मीकि समाज के लोगों में शिक्षा का अभाव पाया गया है। अतः इन्हें प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र के माध्यम से शिक्षित किया जाना चाहिए। अज्ञानता, अशिक्षा व संकीर्ण विचारधारा में परिवर्तन हेतु राष्ट्रीय साक्षरता अभियान जैसे कार्यक्रम चलाये जाने चाहिए तथा शिक्षा के प्रसार को जन आंदोलन का रूप दना चाहिए जिससे उनमें आत्मविश्वास प्रस्फुटित हो साथ ही निर्णय लेने की क्षमता भी महिलाओं के अंतर्गत जागृत हो।

5. वाल्मीकि समाज के अधिकांश लोगों ने अपना परम्परागत व्यवसाय का त्याग नहीं किया है। परम्परागत व्यवसाय से अलग करने हेतु वैकल्पिक रोजगार उपलब्ध कराना चाहिए। शासकीय एवं अशासकीय स्तर पर प्रेरित किया जाना चाहिए।

प्रत्यक्ष अवलोकन में पाया गया कि वाल्मीकि समाज के लोगों के मन वैकल्पिक व्यवसाय अपनाते समय भय रहता है कि हमारे हाथ से व हमारे द्वारा अन्य वर्ग उत्पाद लेगा अथवा नहीं इस भय को दूर करने व व्यवसाय के लिए दकान आदि की व्यवस्था निगम के माध्यम से उपलब्ध करा कर सही रूप में व्यवसाय परिवर्तन में मदद करना चाहिए।

6. अधिकारियों द्वारा नियमित रूप से निरक्षण व सहयोग नही किया जाता योजनाओं में भ्रष्टाचार व राजनीतिकरण पर अंकुश लगाना चाहिए, जितना समय योजनाओं को क्रियान्वयन में लगता है। भ्रष्टाचार उतना ही अधिक बढ़ जाता है अतः प्रक्रिया सरल तथा जल्द से जल्द प्रदान किया जाना चाहिए।

7. अधिकारियों द्वारा नियमित रूप से निरीक्षण किया जाना चाहिए ताकि कार्यों में पारदर्शिता आए व वाल्मीकि परिवारों को योजनाओं का लाभ व्यवस्थित रूप से, सही समय पर सही व्यक्ति को मिल सके।

8. सरकार की नवीनतम लाभकारी नीतियों, कार्यक्रमों एवं आर्थिक सुविधाओं की जानकारी केवल अनुसूचित जाति के उच्च शिक्षित सदस्यों को ही ठीक से है। एवं वे ही इन सरकारी सुविधाओं का अधिकतम लाभ उठा पाते है। जबकि इन सुविधाओ की सर्वाधिक आवश्यकता गरीब एवं बेरोजगार व्यक्तियों की है।

लोकतंत्र की सफलता के लिए आवश्यक है कि केन्द्र एवं राज्य स्तर की अनुसूचित जाति से संबंधित योजनाओं की जानकारी सही और निष्पक्ष तरीके से स्वयं सरकार द्वारा जनता को दी जानी चाहिए इसके लिए संचार माध्यमों के द्वारा अधिक से अधिक प्रचार प्रसार होना चाहिए।

9. वाल्मीकि समाज के जो लोग अपना परंपरागत व्यवसाय त्यागकर अन्य नवीन व्यवसाय प्रारंभ करना चाहते है। उन लोगों को व्यवसाय का समुचित प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए उन्हें बिना ब्याज दर ऋण उपलब्ध कराया जाना चाहिए जा लोग किसी कारण नौकरी नहीं कर पाये है उन्हें व्यवसाय करने हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए।

10. नवीन व्यवसाय का प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके वाल्मीकि समाज के लोगों को भविष्य में यदि अपने व्यवसाय से संबंधित किसी प्रकार की कठिनाई आती है, तो उसका समाधान भी त्वरित रूप से किया जाना चाहिए।

11. वाल्मीकि समाज की महिलाओं की घरेलू उद्योग प्रारंभ करने हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए उद्योग प्रारंभ होने पर उनके द्वारा उत्पादित माल को सरकार द्वारा क्रय किया जाना चाहिए।

12. अन्य जाति के लोगों को चाहिए कि वे वाल्मीकि समाज के लोगों के साथ किसी प्रकार का दुर्व्यवहार नहीं करे, उनकी परम्परागत मानसिकता में परिवर्तन लाना चाहिए। जातिगत आधार पर भेदभाव किये जाने वाले व्यक्ति के विरूद्ध तुरंत कठोरतम दण्ड का प्रावधान होना चाहिए।

प्रत्यक्ष अवलोकन में पाया गया कि उच्च जाति के सदस्यों की एक आम धारणा है कि अनुसूचित जाति के उच्चधिकारी अयोग्य एवं अमर्थ है तथा बुद्धि एवं जानकारी में पिछड़े हुए है लेकिन आरक्षण के कारण उच्च पद प्राप्त करने में सफल रहे है।

प्रत्यक्ष अवलोकन में यह भी पाया गया कि सामाजिक आर्थिक एवं व्यवसायिक दृष्टि से विकसित वाल्मीकि समाज के सदस्य अपनी जाति एवं समुदाय की अपेक्षा उच्च जातियों के अधिक निकट आना चाहते है तथा अपनी जाति का नाम तक बताने में शर्म एवं संकोच का अनुभव करते है।

13. अध्ययन में पाया गया कि अनुसूचित जातियों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति को सुधारने में शिक्षा सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक है यही वजह है कि वाल्मीकि समाज के सदस्य भी उन परम्परागत व्यवसायों को जो निम्न प्रस्थिति कम आमदनी एवं घृणा के प्रतीक है, त्यागकर अन्य स्वच्छ एवं सम्मानजनक व्यवसाय अपनाने लगे है तथा अपनी संतानों को भी परम्परागत व्यवसाय दिलाने के पक्ष में नहीं है।

14. सरकार को वाल्मीकि समाज के लोगों की दशा सुधारने हेतु सस्ते आवास उपलब्ध कराने चाहिए परम्परागत शौचालयों के स्थान पर नवीन ड्रेनेज लाइन युक्त शौचालय का निर्माण किया जाना चाहिए।

15. कोई भी नई कॉलोनी काटने पर जिसमें एस.सी./एस.टी.के लिए आरक्षित मकान होते है उनमें भी कुछ आरक्षण अलग से वाल्मीकि समाज को दिया जाना चाहिए जिससे वे अपनी बस्तियों से निकलकर बाहर रहने लगे।

16. वाल्मीकि समाज के परिवारों की आर्थिक स्थिति इतनी सुदृढ़ नहीं होती है कि वे स्वयं की आवश्यकताओं के अनुरूप मकान निर्मित कर सकें सरकार को बिना ब्याज के ऋण उपलब्ध करना चाहिये।

17. वाल्मीकि समाज के उत्तरदाताओं को शोचालय निर्माण हेतु जागरूक किया जाना चाहिए साथ ही राज्य सरकारों को नये शासकीय शोचालय सर्व सुविधायुक्त बनवाने चाहिये।

18. वाल्मीकि समाज के विकास एवं कल्याण में काम करने वाली संस्था को सरकार द्वारा पुरस्कृत किया जाना चाहिए जिससे अन्य संस्थाओं को भी प्रेरणा मिलें।

19. वाल्मीकि पंचायत के वरिष्ठ सदस्य को सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं, प्रशिक्षण एवं शिक्षा में जागरूकता कम उम्र में लड़कियों की शादी एवं स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं एवं उनकी योजनाओं की जानकारी समय समय पर दी जानी चाहिये जिससे वे विकासात्मक कार्य के लिए आवश्यक कदम उठा सके तथा जन जागरूकता व जन सहभागिता में वृद्धि हेतु उचित भूमिका निभा सके तथा प्रशिक्षण में नई तकनीक व संचार व्यवस्था का प्रयोग करना चाहिए।

20. वाल्मीकि समाज के लोग अपना परम्परागत व्यवसाय त्याग नहीं कर पा रहे है। सरकार को अनुसूचित जाति में वाल्मीकि जाति को अति पिछड़ी हुई जाति घोषित कर सरकार द्वारा परम्परागत व्यवसाय से मुक्ति दिलाने हेतु विशेष प्रयास करने चाहिये।

21. वाल्मीकि समाज के परिवारों की आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नही है कि अच्छी स्वास्थ्य सुविधा का लाभ ले सके लोगों को निःशुल्क स्वास्थ्य–सुविधाएं एवं दवाईयां प्रदान की जानी चाहिए।

प्रत्यक्ष अवलोकन में पाया गया कि वाल्मीकि परिवार के सदस्य जो सफाई कार्य में संलग्न है। सफाई के दौरान उनके स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है जैसे घंटों पानी में काम करना जिसेस गठिया, जुखाम (ठंडाई से संबंधित बिमारियां) अस्थमा मुँह में धुल मिट्टी घूस जाती है। ऐसिट की वजह से आँखों की रोशनी कम या चली जाती है। हाथ, पैर जल जाते है। ड्रेनेज में उतर कर काम करने वालों की दूषित गैस आदि वजह से मर जाते है। सरकार उन्हें मुआवजा भी नहीं देती है। सफाई में संलग्न व्यक्तियों का जीवन बीमा व मेडिक्लेम सुविधा सरकार की ओर से किया जाना चाहिए।

22. सरकार द्वारा वाल्मीकि समाज के लोगों के पुनर्वास हेतु नवीन योजनाओं को क्रियान्वित किया जाना चाहिए।

23. वाल्मीकि समाज के लोगों को वर्तमान में प्राप्त आरक्षण का प्रतिशत बढ़ाया जाना चाहिए। वाल्मीकि समाज के परिवार में से कम से कम एक व्यक्ति को सरकारी नौकरी सफाई व्यवसाय से इत्तर प्रदान की जानी चाहिए।

24. वाल्मीकि समाज के लोगों को राष्ट्र की मुख्य धारा में जोड़ने हतु शासकीय एवं अशासकीय प्रयास किये जाने चाहिए तथा समाज की राजनैतिक सहभागिता तय करने के लिए उनके लिए सिटों का आरक्षण अलग से किया जाना चाहिए जिससे नेतृत्व उभरने में सहायता मिले।

वाल्मीकि समाज की वास्तविक सशक्तिकरण के लिए उनमें नेतृत्व क्षमता व संचार प्रवीणता के विकास की जरूरत है। हरित क्रांति, संचार एवं सूचना के साधनों (इल्ट्रॉनिक मीडिया के कवरेज, मोबाईल के इस्तेमाल आदि) के विकास की बदौलत हुए आधुनिकरण के बावजूद भारत के शहरी व ग्रामीण समाज में जातिवाद संबंधित मानसिकता अभी भी जारी है वाल्मीकि समाज इससे और भी अधिक पीड़ित है इसकी समाप्ति के लिए

एक सामाजिक आंदोलन चलाने जाना चाहिए। सिविल सोसाइटी, सामाजिक आंदोलन को चलाने के लिए एकजूट होकर प्रयास कर सकती है।

इस दिशा में विद्वानों, मीडिया, स्वयं सेवी संस्थाओं और स्वयं वाल्मीकि समाज के पढ़े लिखे और प्रभुत्व वर्ग द्वारा एक असरदार भूमिका निभाती चाहिए।

अंतिम किंतु सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जब तक अमूल चूक बदलाव के जरिये शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में जाति से संबंधित सामाजिक, आर्थिक, आधार में तब्दीली नहीं लाई जाती तब तक शासन के प्रयास निरर्थक ही साबित होगे। अतः वास्तविक रूप से वाल्मीकि समाज में सशक्तिकरण और गतिशीलता लाने के लिए संपूर्ण सामाजिक संरचना में परिवर्तन करना आवश्यक है।

अन्ततः स्वयं वाल्मीकि समाज को डॉ. आम्बेडकर की विचारधारा के अनुरूप एक सशक्त सामाजिक व धार्मिक क्रांतिकारी आंदोलन चलाना होगा व उसी अनुरूप समाज को एक नई दिशा देनी होगी। अपने परम्परागत जातिगत व्यवसाय को छोड़ना होगा तभी डॉ. आम्बेडकर के सपनों के अनुरूप एक समतामुलक समाज का निर्माण संभव हो सकेगा।

पीएच.डी. शोध कार्य जारीः—

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 1 : भील जनजाति में शैक्षणिक गतिशीलता : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (इंदौर जिले के आदिवासी बाहुल्य विकासखण्ड मानपुर के विशेष संदर्भ में)

अध्ययन के उद्देश्य :—

1. भोल जनजाति की वर्तमान सामाजिक संरचनाओं, परम्पराओं एवं मान्यताओं का अध्ययन करना ।
2. शैक्षणिक गतिशीलता के फलस्वरूप उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक स्थिति में हुए परिवर्तनों का अध्ययन करना।
3. सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिवर्तनों हेतु उत्तरदायी कारकों का आंकलन करना।
4. भोल समाज की सामाजिक व्यवस्था एवं मूल्यों पर शैक्षणिक गतिशीलता के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि :—

1. **अध्ययन का क्षेत्र :—**
   प्रस्तुत शोध हेतु मध्यप्रदेश के इंदौर जिले का चुनाव किया गया।
2. **अध्ययन का समग्र :—**
   अध्ययन के समग्र से तात्पर्य उस समूह अथवा जनसंख्या से हैं, जिसमें स निदर्शन का चुनाव किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन के समग्र में इंदौर जिले के आदिवासी बाहुल्य भोल जनजाति के लोगों तथा उनके परिवारों का चयन किया जाएगा।
3. **अध्ययन की इकाई :—**
   अध्ययन की ईकाई के रूप में इंदौर जिले के आदिवासी बाहुल्य ब्लॉक मानपुर के भोल जनजाति के लोग तथा उनके परिवार हैं।
4. **निदर्शन विधि :—**
   समग्र की इकाईयां जो समग्र का उचित प्रतिनिधित्व करें, जिनमें समग्र की आधारभूत विशेषताऐं विद्यमान हो, निदर्शन कहलाती हैं।
   प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत शोध की प्रकृति एवं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए इंदौर जिले के आदिवासी बाहुल्य ब्लॉक मानपुर के 11 चिन्हित भोल जनजाति वाले ग्रामों म से 220 परिवारों का दैव निदर्शन विधि द्वारा चुनाव किया जाएगा।

कार्य प्रगति :— प्राथमिक तथ्यों को एकत्रित किया गया एवं प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण कार्य जारी है।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 2 : वाल्मिकी समाज की प्रस्थिति एवं गतिशीलता का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (मध्यप्रदेश के जिला इन्दौर के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन)

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. अध्ययन क्षेत्र में स्थित वाल्मिकी समाज की सामाजिक प्रस्थिति का मूल्यांकन करना।
2. वाल्मिकी समाज की सामाजिक गतिशीलता का आंकलन करना।
3. वाल्मिकी समाज की तुलनात्क प्रस्थिति एवं गतिशीलता का अध्ययन करना।
4. वाल्मिकी समाज की तुलनात्मक प्रस्थिति का इन्दौर क्षेत्र की सामाजिक संरचना के संदर्भ में अध्ययन करना।
5. वाल्मिकी समाज की प्रस्थिति एवं गतिशीलता में अन्तर के कारणो का अध्ययन करना।
6. वाल्मिकी समाज की सामाजिक प्रस्थिति का परम्परागत जाति व्यवस्था के सन्दर्भ में अध्ययन करना।

प्रगति रिपोर्ट :– प्राथमिक तथ्य एकत्रित कर तथ्यों का विश्लेषण कार्य जारी है।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 3 : विशेष पिछड़ी जनजातियों में सामाजिक परिवर्तन एवं विकास की प्रक्रियाएं एवं प्रतिमान (मध्यप्रदेश की बैगा, भारिया एवं सहरिया जनजाति की शासकीय नीति एवं कार्यक्रमों के विशेष सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन)

अध्ययन के उद्देश्य –

1. विशेष पिछड़ी जनजातियों की प्रस्थिति एवं विशेषताओं का अध्ययन करना।
2. मध्यप्रदेश की विशेष पिछड़ी जनजाति के विकास में शासकीय नीति एवं कार्यक्रमों के फलस्वरूप हो रहे सामाजिक परिवर्तन एवं विकास का अध्ययन करना।
3. विशेष पिछड़ी जनजाति समूहों में सामाजिक विकास हेतु प्रभावी कारकों एवं प्रतिमानों का अध्ययन करना।
4. विशेष पिछड़ी जनजाति समूह के सामाजिक परिवर्तन एवं विकास को प्रभावित करने वाली नीतियों एवं योजनाओं का अध्ययन करना ।
5. विशेष पिछड़ी जनजाति के विकास हेतु उपयुक्त सम्भावनाओं एवं सुझावों को प्रस्तुत करना।

अध्ययन का क्षेत्र –

मध्यप्रदेश राज्य वनीय सम्पदा से जाना जाता है और अधिकतर वनीय क्षेत्रों में जनजातीय समूह निवास करती है। 46 जनजातियाँ मध्यप्रदेश में नामांकित हैं जिसमे से विशेष पिछड़ी जनजातियां सहरिया, बैगा, एवं भारिया को चिन्हित किया गया है। मध्यप्रदेश में 20.27 प्रतिशत (जनगणना 2001) अनुसूचित जनजातियाँ निवास करती हैं। मध्यप्रदेश में सहरिया, बैगा एवं भारिया विशेष पिछड़ी जनजातियों का अध्ययन का क्षेत्र निम्न है :–

1. ग्वालियर जिले की डबरा तहसील 2. बालाघाट जिले की बैहर तहसील 3. छिन्दवाड़ा जिले की तामिया तहसील प्रस्तुत अध्ययन का प्रस्तावित अध्ययन क्षेत्र है।

अध्ययन का समग्र –

अध्ययन क्षेत्र मे निवासरत् समस्त् विशेष पिछड़ी जनजाति सहरिया, बैगा एवं भारिया जनजातीय परिवार अध्ययन के समग्र हैं।

अध्ययन की इकाई –

विशेष पिछड़ी जनजातियां सहरिया, बैगा एवं भारिया जनजातीय परिवार अध्ययन की इकाई है।

शोध प्रगति विवरण –

पंजीयन के बाद शोध संक्षेपिका में तुलनात्मक अध्ययन का मार्गदर्शन दिया गया। जिसके आधार पर कार्य किया जा रहा है। छः माह का कोर्स वर्क जनवरी 2013 से मई 2013 के बीच देवी अहिल्या वि.वि., इन्दौर में अध्ययन किया। साक्षात्कार अनुसूची तथा ग्राम अवलोकन की प्रारम्भिक जानकारी के लिए क्षेत्र का भम्रण

किया। अनुसूची मे संशोधन कर पुनः ग्वालियर एवं छिन्दवाड़ा का फील्ड वर्क किया। अभी तक 3 शोध पत्र लिखे जा चुके है। सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया जा रहा है तथा फील्ड वर्क द्वारा जानकारी एकत्रित करने का कार्य जारी है। पिछड़ी जनजातिया की सामाजिक पृष्ठभूमि मे वैश्वीकरण का प्रभाव दिखाई देने लगा है। मोबाईल, टी.वी., आधुनिक वस्त्र तथा वाहनो की आवाजाही बढ़ी है। स्कूलो में दाखिला है लेकिन घर के कार्यो तथा मजदूरी के लिए बच्चो की मदद ली जाती है जिससे प्राथमिक शिक्षा मे नैतिक विकास का अभाव दिखाई पड़ता है।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 4 :आरक्षण के फलस्वरूप अनुसूचित वर्गो की शासकीय नौकरी पेशा महिलाओं की सामाजिक – आर्थिक प्रस्थिति एवं भूमिका में हो रहे परिवर्तन का समाजशास्त्रीय अध्ययन (मध्यप्रदेश के बालाघाट जिले के विशेष संदर्भ में)

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. आरक्षित वर्गो में शासकीय नौकरी पेशा महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति की विशेषताओं का अध्ययन करना।
2. आरक्षित वर्गो की नौकरी पेशा महिलाओं की प्रस्थिति एवं भूमिका को प्रभावित करने वाले कारणों का अध्ययन करना।
3. आरक्षित वर्गो की महिलाओं में आरक्षण लाभ पूर्व एवं पश्चात् आये सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
4. आरक्षण के फलस्वरूप शासकीय नौकरी पेशा महिलाओं की पारिवारिक भूमिका एवं निर्णय लेने की क्षमता में हुए परिवर्तन का अध्ययन करना।
5. आरक्षण आधारित महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया एवं उसके फलस्वरूप आये सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन करना।

प्रगति रिपोर्ट :– साहित्य का पुनरावलोकन, साक्षात्कार अनुसूची का निमार्ण कार्य जारी है।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 5 : भारिया जनजाति के आर्थिक एवं सामाजिक विकास का समालोचनात्मक अध्ययन (तामिया, पातालकोट विकासखण्ड के विशेष संदर्भ में)

प्रस्तावना :

मध्यप्रदेश के छिन्दवाड़ा जिला मुख्यालय से 65 किलोमीटर दूर एक स्थान जो पातालकोट के नाम से प्रसिद्ध है, जो मानव संस्कृति एवं सभ्यता की मान्यताओं से जुड़ी दो जनजातीयों भारिया एवं गोण्ड को समेटे हुए है। यह 79 वर्ग किलोमीटर का ऐसा क्षेत्र है जिसकी संरचना एक कटोरे के समान है। चारों ओर से ऊँची–ऊँची पहाड़ियों में गड्ढे जसा यह समतल क्षेत्र पातालकोट के नाम से जाना जाता है तथा 1200–1600 फिट की गहराई पर स्थित है। भारत में पहाड़ के ऊँचे से ऊँचे स्थानों पर कई जनजातियाँ रहती आई है लेकिन धरती के इतने नीचे रहने वाली केवल भारिया जनजाति है। पातालकोट को छोड़कर शेष जनजातियां भूमियों, भारिया, भइयाँ, भूंइहार और अन्य जनजातियों के लोग जंगलों और मैदानों में ऊँची जगह में निवास करते है। पातालकोट के भारिया ऊपर रहने वाले लोगों के लिए सदैव आकर्षण का केन्द्र रहा है। सन् 2011 के आंकड़े के अनुसार मध्यप्रदेश राज्य की कुल जनसंख्या 72, 597,565 है। जनजातीय समुदाय की जन संख्या का 21.07 प्रतिशत है (जनगणना 2011)। 46 जनजातियां संवैधानिक प्रावधानों द्वारा नामांकित है।

सहरिया, बैगा एवं भारिया विशेष पिछड़ी जनजाति (Primitive Tribal group & Most Vulnurable group) में चिन्हित है जिन्हें पूर्व में आदिम जनजाति भी कहा गया। भारतीय संविधान की पांचवी अनुसूची के अधिकारों और आदिवासी क्षेत्र के हितों के संरक्षण व संवर्धन के लिए मध्यप्रदेश शासन प्रतिबद्ध है इस समूह के लिए मध्यप्रदेश में विशेष प्राधिकरण एवं योजनाएं चलाई गई है मध्यप्रदेश में विशेष जनजाति की कुल जनसंख्या 5,50,608 (जनगणना 2001) हैं ।

सहरिया 1,31,425, बैगा 4,17,171 भारिया 2,012 उक्त तीनों विशेष जनजातियों की तुलना करने पर पाया गया कि बैगा जनजाति, सहरिया जनजाति की अपेक्षा भारिया जनजाति की जनसंख्या 2,012 (जनगणना 2001) बहुत ही कम है। विशेष पिछड़ी जनजाति की पहचान के कुछ मापदण्ड सुनिश्चित किए गए है जो निम्न नुसार हैं:

(अ) कृषि में पूर्व प्रोद्योगिकी

(ब) साक्षरता का न्यूनतम स्तर

(स) अत्यंत पिछड़े एवं दूरदराज के क्षेत्रों में निवास करना।

(द) स्थिर या घटती जनसंख्या

भारत सरकार द्वारा मध्यप्रदेश की अनुसूचित जनजाति की सूची में तीन विशेष पिछड़ी जनजातियां बैगा, भारिया एवं सहरिया को रखा गया है। मध्यप्रदेश की विशेष पिछड़ी जनजाति के विकास हेतु योजनाऐं बनाने एवं क्रियान्वयन हेतु 11 अभिकरण कार्यरत है। जिनका कार्यक्षेत्र 15 जिलों में है। इन विशेष पिछड़ी जनजातीयों के विकास हेतु मध्यप्रदेश शासन द्वारा जो अभिकरण गठित किये गये उनमें भारिया विकास अभिकरण का मुख्यालय तामिया (पातालकोट) जिला छिन्दवाड़ा में है। तामिया विकासखण्ड के पातालकोट क्षेत्र में 12 आबाद ग्राम है। वर्ष 2004 में किये गये सर्वेक्षण के अनुसार पातालकोट की कुल जनसंख्या 2,786 पाई गयी इसमें भारिया जनजाति की जनसंख्या 2,135 है, जिसमें 1,060 पुरूष एवं 1,075 महिलाएं है। वर्ष 2009 माह मई में भारिया परिवार का पुनः सर्वेक्षण कराया गया जिसके अनुसार भारिया परिवारों की संख्या 503 एवं पातालकोट की कुल भारिया जनजाति की जनसंख्या 2,561 पाई गई। जो भारिया परिवारों की जनसंख्या में वृद्धि दर्शाता है।

शोध समस्या का चयन :

प्रस्तुत शोध मध्यप्रदेश की विशेष पिछड़ी जनजातीय समूह जिसके अन्तर्गत सहरिया, बैगा, भारिया जनजाति समूह आते है, इन समूहों में से भारिया जनजाति के पूर्व अध्ययन बताते है कि भारिया अपनी विशिष्ट सामाजिक परिस्थितिकीय स्थितियों के कारण अतिसंरक्षित (Most vulnurable group) है। यह जनजाति दुर्गम स्थान में निवासरत होने के कारण अन्य समुदायों से इनका सम्पर्क ज्यादा नहीं हो पाता है। विकास नीति हाने के बावजूद भी यह जनजाति सामाजिक एवं आर्थिक रूप से कमजोर है।

भारिया जनजातियों के सामाजिक एवं आर्थिक विकास के प्रभाव का अध्ययन करना है, जिससे भारिया जनजाति की सामाजिक व आर्थिक स्थिति को समझने एवं इनके सांस्कृतिक प्रतिमानों में आये परिवर्तनों को उजागर करने तथा विकास में आ रही समस्याओं को समझकर समाधान प्रस्तुत करने हेतु शोध समस्या का चयन किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. भारिया जनजातियों की वर्तमान आर्थिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. भारिया जनजातियों के आर्थिक एवं सामाजिक विकास का अध्ययन करना।
3. भारिया जनजातियों के सामाजिक एवं आर्थिक प्रस्थिति एवं विकास पर प्रभाव डालने वाले कारकों का अध्ययन करना।
4. पातालकोट क्षेत्र की परम्परागत जनजातीय सामाजिक संरचना एवं संस्थाओं का अध्ययन करना।
5. जनजातियों की सामाजिक संस्थाओं के परम्परागत स्वरूप में आये परिवर्तन का अध्ययन करना।
6. भारिया जनजाति के विकास हेतु वर्तमान में संचालित योजनाओं के प्रभावों का अध्ययन करना।

अध्ययन की प्रासंगिकता :–

1. भारिया जनजातियों की वर्तमान सामाजिक, आर्थिक स्थिति की जानकारी उपलब्ध हो सकेगी।
2. भारिया जनजातियों के आर्थिक विकास के वर्तमान स्वरूप की जानकारी उपलब्ध हो सकेगी।
3. जनजातियों की सामाजिक संस्थाओं के परम्परागत स्वरूप में आये परिवर्तनों की जानकारी उपलब्ध हो सकेगी।

4. जनजातीय समूह के सामाजिक विकास के प्रारूप सामने आ सकेंगे जिसमें अतिसंरक्षित जनजातियों के लाभार्थ राज्य और अधिक पभावी योजना बना सकेगा।
5. भारिया जनजाति का आकार एवं विस्तार ज्ञात हो सकेगा।

शोध प्रविधि :

अध्ययन का अभिकल्प – शोध कार्य की प्रकृति को देखते हुये वर्णनात्मक शोध अभिकल्प के आधार पर अध्ययन कार्य किया जायेगा।

अध्ययन का क्षेत्र – मध्यप्रदेश के छिन्दवाड़ा जिले के तामिया विकासखण्ड के पातलकोट क्षेत्र अध्ययन का क्षेत्र होगा ।

अध्ययन का समग्र – अध्ययन क्षेत्र में निवासरत समस्त भारिया जनजातियों के परिवार अध्ययन का समग्र होंगे।

अध्ययन की इकाई – अध्ययन क्षेत्र में निवासरत भारिया जनजातीय परिवार अध्ययन की इकाई होंगे ।

शोध विधि – प्रस्तुत शोध में मध्यप्रदेश के छिन्दवाड़ा जिले के तामिया विकासखण्ड में पातालकोट के समस्त 12 आबाद ग्रामों का अध्ययन नृजातिय पद्धति के द्वारा किया जायेगा, इसके साथ ही 12 ग्रामों के समस्त परिवारों के कुल 503 परिवारों का ग्रामवार जनगणना विधि से अध्ययन किया जायेगा।

तथ्य संकलन के स्त्रोत –

प्राथमिक स्त्रोत – साक्षात्कार, अवलोकन, अनुसूची, समूह चर्चा

द्वितीयक स्त्रोत – पुस्तक, वार्षिक रिपोर्ट, साहित्य, शोध पत्रिकाएं, इंटरनेट, समाचार पत्र ।

यंत्र एवं तकनीक – सर्वेक्षण, अवलोकन, साक्षात्कार, कैमरा, पी.आर.ए.

विश्लेषण एवं पृष्ठ भूमि – सारणीयन संकेतन, मास्टर चार्ट, कार्ड परीक्षण एवं टी. परीक्षण ।

निष्कर्ष एवं सुझाव – प्राप्त आंकड़ो तथा तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष एवं सुझाव प्रस्तुत किये जायेंगे।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 6: अनुसूचित जातियों पर अत्याचार की प्रकृति एवं कारणों का समाजशास्त्रीय अध्ययन (इन्दौर जिले में अनूसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम 1989 के विशेष संदर्भ में)

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. अधिनियम के विभिन्न प्रावधानो के क्रियान्वयन की स्थिति का मूल्यांकन करना।
2. पीड़ित व्यक्तियों के लिए राहत एवं पुनर्वास क्रार्यक्रमों का अध्ययन करना।
3. अधिनियम के क्रियान्वयन में आने वाली बाधाओं/कमियो का पता लगाना तथा उन्हे दूर करने के उपाय सुझाना।
4. अत्याचार निवारण अधिनियम से सम्बन्धित प्रावधानों, प्रक्रियाओं एवं क्रियान्वयन का अध्ययन करना।
5. विषय सम्बन्धी सन्दर्भ ग्रन्थों का अध्ययन करना।

कार्य प्रगति :– साहित्य का पुनरावलोकन, साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण कार्य जारी है।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 7: पंचायतराज में महिलाओं की भूमिका का अध्ययन (मध्यप्रदेश के देवास जिले के विशेष संदर्भ में)

शोध के उद्देश्य :–

1. पंचायतराज संस्था महिला प्रतिनिधियों की सामाजिक, आर्थिक प्रस्थिति का अध्ययन करना।
2. पंचायतराज संस्था महिला प्रतिनिधियों की नेतृत्व एवं सशक्तिकरण का अध्ययन करना।

3. पंचायतराज संस्था महिला प्रतिनिधियों के विकास एवं सशक्तिकरण की समस्याओं का अध्ययन करना।
4. पंचायतराज संस्था महिला प्रतिनिधियों की सामाजिक प्रस्थिति में आये परिवर्तनों का अध्ययन करना।
5. पंचायतराज संस्था महिला प्रतिनिधियों की सामाजिक एवं पारिवारिक भूमिका में आये परिवर्तनो का अध्ययन।
6. पंचायतराज संस्था महिला प्रतिनिधियों की नियोजन, भागीदारी एवं भूमिका मे आ रही मुख्य बाधाओं का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि :–

शोध प्रविधि के अंतर्गत उद्देश्यों को ध्यान में रखकर वर्णनात्मक शोध प्ररचना का प्रयोग किया जायेगा। इसमें शोध संबंधित तथ्यो का व्यवस्थित एवं क्रमबद्व तरीके से संकलन, तथ्यों का निर्माण, नियमों का सत्यापन, मूल्यांकन एवं नियमों का सैद्वान्तीकरण किया जायेगा।

अध्ययन क्षेत्र :

देवास जिले को अध्ययन क्षेत्र के रूप में चुना गया है।

अध्ययन का समग्र :–

लाटरी पद्वति के माध्यम से जनपदो का चयन समग्र के रूप में किया जायेगा।

अध्ययन की इकाई :–

चयनित जनपदो एवं ग्राम पंचायत में महिला पंचायत प्रतिनिधि का चयन अध्ययन की इकाई के रुप में किया जायेगा।

निदर्शन पद्वति :–

प्रस्तुत शोध में दैव निदर्शन पद्वति का प्रयोग किया जायेगा। जिसके अंतर्गत महिला प्रतिनिधियो का चयन अध्ययन के निदर्शन के रुप में किया जायेगा।

कार्य प्रगति :– साहित्य का पुनरावलोकन, द्वितीयक तथ्यों का संकलन का कार्य किया जा रहा है और अध्ययन क्षेत्र का प्रारम्भिक भ्रमण कार्य किया गया तथा सम्बन्धित विभागो से द्वितीयक तथ्य प्राप्त किये गये।

Ph.D. Research Topic No. 8 : Impact of Land Reforms on Socio-Economic Life of Scheduled Castes: A Geographical Study (With Special Reference to Aligarh District of U.P.)

Objectives of the study

1. To study the socio-economic background of Scheduled Castes.
2. To study the allotment, size and structure of agriculture land allotted to Scheduled Castes for cultivation purpose in the study area.
3. To assess the impact of the allotted agriculture land on the socio- economic condition of the Scheduled Castes.
4. To study the problem faced by Scheduled Castes for possession of agricultural land.
5. To assess the overall success of the redistributive programme of government land in the study area.

Research Methodology :

Area of Study:

Aligarh district of Uttar Pradesh would be the study area.

Universe of the study :

The total 1072 number of Scheduled Castes household's population which got agriculture land (patta) during 2007-2012 under land reforms of Aligarh district would be the universe of the study.

Unit of the study :

An individual member of Scheduled Castes families who got agriculture land (patta) during 2007-2012 under land reforms would be the unit of the study.

Sampling : Stratified random sampling would be adopted for selection of respondents.

Progress report - Study the Review of literature; collected the secondary data from concern departments.

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 9: समपोषणीय कृषि उत्पादकता का अनुसूचित जनजातियों के सामाजिक–आर्थिक विकास पर प्रभाव : (मध्यप्रदेश के डिण्डौरी जिले के विशेष संदर्भ में स्थानिक विश्लेषण।)

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. अध्ययन क्षेत्र के अनुसूचित जनजाति के कृषक परिवारों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. जनजातियों की परम्परागत कृषि का स्तर तथा उसमें हुए परिवर्तन का अध्ययन करना।
3. जनजातियों द्वारा अपनायी जा रही कृषि पद्धतियों, तकनीकों एवं विपणन प्रक्रियाओं का अध्ययन करना।
4. जनजातियों में समपोषणीय कृषि उत्पादकता से हुए परिवर्तन एवं उनके सामाजिक – आर्थिक जीवन पर प्रभाव का अध्ययन करना।
5. अनुसूचित जनजाति क्षेत्रों में स्थानीय भौगोलिक संरचना एवं कारकों के आधार पर आधुनिक कृषि आधारित सम्भावनाओं एवं अवसरों के आधार पर एक विकास प्रारूप तैयार करना।

वर्तमान कार्यो का संकलन

1. शोध समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन किया जा रहा है।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 10 : अनुसूचित जाति एवं जनजाति की महिलाओं के सामाजिक परिवर्तन में नगरीकरण के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्य :–

(1) अनुसूचित जाति एवं जनजाति की महिलाओं के परिवर्ती जीवन प्रतिमान के संबंध में ज्ञान प्राप्त करना।

(2) अनुसूचित जाति एवं जनजाति की महिलाओं के विवाह, परिवार, शिक्षा, व्यवसाय, जाति, धर्म और राजनीति आदि के प्रति अर्थात् उनके सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टिकोणों में हुये परिवर्तन की प्रक्रिया का ज्ञात करना।

(3) अनुसूचित जाति एवं जनजाति महिलाओं के पंरपरागत विचारों पर नगरीकरण के प्रभाव के अंतर को जानने हेतु।

(4) नगरीय संस्कृति एवं जीवन शैली का अनुसूचित जाति एवं जनजाति की महिलाओं पर पड़ने वाले प्रभावों के अंतर को ज्ञात करना।

(5) अनुसूचित जाति एवं जनजाति महिलाओं में नगरीकरण के फलस्वरूप बच्चों के पालन–पोषण के तरीकों पर पड़ने वाले प्रभाव के अंतर को ज्ञात करना।

(6) नगरोयकरण के प्रभाव स्वरूप अनुसूचित जाति एवं जनजाति की महिलाओं में बढ़ती सामाजिक सांस्कृतिक गतिशीलता को ज्ञात करना।

(7) नगरीकरण के फलस्वरूप अनुसूचित जाति एवं जनजाति महिलाओं में वैज्ञानिक उपकरणों के बढ़ते उपयोग की प्रवृत्ति के अंतर को जानने हेतु।

कार्य प्रगति :–

साहित्य का पुनरावलोकन एवं द्वितीयक तथ्यों का संकलन किया जा रहा है।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 11 :" राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना का अनुसूचित जाति कृषक – मजदूर हितग्राहियों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति पर प्रभाव" (मझगवाँ विकासखण्ड जिला सतना म.प्र. के विशेष संदर्भ में)

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना का कृषक मजदूरों के आर्थिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. चयनित ग्रामीण अनुसूचित जाति कृषक मजदूरों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी कार्यक्रम में रोजगार के सृजन में योगदान का अध्ययन करना।
4. राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी कार्यक्रम का कृषक–मजदूरों पर प्रभाव का अध्ययन करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 12 :"अनुसूचित जातियों में सामाजिक न्याय एवं विकास के बदलते प्रतिमानों का समाजशास्त्रीय अध्ययन" (उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के विशेष सन्दर्भ में)

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. अनुसूचित जातियों के उत्तरदाताओं की सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. भारतीय संविधान में अन्तर्निहित सामाजिक न्याय एवं विकास के प्रावधानों का अनुसूचित जातियों के विकास पर हुए प्रभाव का अध्ययन करना।
3. भारत की अनुसूचित जातियों के सामाजिक न्याय एवं विकास के परिवर्तित प्रतिमानों का अध्ययन करना।
4. अनुसूचित जातियों के सा.न्याय एवं विकास के रास्ते में बाधक तत्वों का अध्ययन करना।
5. सा.न्याय एवं विकास की नीतियाँ एवं कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में आने वाली मुख्य बाधाओं का पता लगाना।
6. अनुसूचित जातियों के विकास के लिए शोध पर आधारित उपर्युक्त सुझाव प्रस्तुत करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 13 : आधुनिक संचार साधनों का अनुसूचित जनजातियों की महिलाओं एवं पुरुषों के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन (म.प्र. के खण्डवा जिले के विशेष संदर्भ में)

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. अनुसूचित जनजातियों की महिलाओं एवं पुरुषों की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. आधुनिक संचार साधनों का अनुसूचित जनजातियों की महिलाओं एवं पुरुषों में आधुनिकीकरण के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. आधुनिक संचार साधनों का अनुसूचित जनजातियों की महिलाओं एवं पुरुषो के सामाजिक एवं आर्थिक विकास पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. आधुनिक संचार साधनों का अनुसूचित जनजातियों की महिलाओं एवं पुरुषों के शैक्षणिक विकास पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. आधुनिक संचार साधनों का अनुसूचित जनजातियों की महिलाओं एवं पुरुषों के सांस्कृतिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. अनुसूचित जनजातियों की महिलाओं एवं पुरुषों के जीवन में आधुनिक संचार साधनों के महत्व का अध्ययन करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 14:अनुसूचित जाति को महिलाओं के राजनीतिक नेतृत्व व सशक्तिकरण में 73वें संविधान संशोधन अधिनियम की भूमिका एक अध्ययन (उ.प्र. के अलीगढ मण्डल के विशेष संदर्भ में)

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. अनुसूचित जाति की निर्वाचित ग्राम प्रधान महिला उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. 73वें संविधान संशोधन अधिनियम के अंतर्गत प्रावधानों (विशेष रूप से पंचायतों में महिलाओं की भागीदारी सम्बन्धी) के क्रियान्वयन की स्थिति का अध्ययन करना।
3. अनुसूचित जाति की निर्वाचित ग्राम प्रधान महिलाओं को 73वें संविधान संशोधन अधिनियम के अंतर्गत प्राप्त अधिकारों, दायित्वों के निर्वहन की स्थिति एवं निर्वहन में आनेवाली बाधाओं का अध्ययन करना।
4. अनुसूचित जाति महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी, नेतृत्व विकास एवं सशक्तिकरण का उनके सर्वांगीण जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
5. पंचायत राज में अनुसूचित जाति की महिलाओं की भागीदारी से उनके व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन पर सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलुओं का अध्ययन करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 15 :क्षेत्रीय विकास में ग्रामीण सेवा केन्द्रो की भूमिका (मध्यप्रदेश के सिवनी

जिले के विशेष सन्दर्भ में)

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. अध्ययन क्षेत्र के केन्द्रीय कार्य और उन्हें करने वाले सेवा केन्द्रों का प्रकार्य विभाजन करना।
2. सेवा केन्द्रों की वर्तमान स्थिति एवं सेवा क्षेत्र का अध्ययन करना।
3. सेवा केन्द्रों की केन्द्रीयता का मापन करना और उनकी वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
4. केन्द्रियता के आधार पर अध्ययन क्षेत्र के सेवा केन्द्रों का भिन्न–भिन्न क्रमिक वर्गों में विभाजन करना अर्थात पदानुक्रमण वितरण करना।
5. आधारभूत सेवाओं के विकास केन्द्रों की पहचान करना।
6. विकास केन्द्रों अभिकेन्द्रों एवं अपकेन्द्रीय शक्तियों का अध्ययन करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 16 :बांछड़ा समुदाय में सामाजिक एवं व्यावसायिक गतिशीलता का अध्ययन

(मध्यप्रदेश के मंदसौर जिले के विशेष सन्दर्भ में)

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. समुदाय के सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों में आय परिवर्तनों का अध्ययन करना।
2. समुदाय में देह व्यापार के कारणों का अध्ययन करना।
3. समुदाय में देह व्यापार उन्मूलन हेतु शासकीय एवं गैर सरकारी संगठनों के कार्यों का मूल्यांकन करना।
4. समुदाय पर देह व्यापार के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. समुदाय के विकास के लिए शासन एवं गैर सरकारी संगठनों के कार्यों का मूल्यांकन करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 17: भूमंडलोकरण का अनुसूचित जातियों के शैक्षणिक एवं सामाजिक

विकास पर प्रभाव

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. अनुसूचित जाति के उत्तरदाताओं की सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. अनुसूचित जातियों मे शिक्षा के प्रति जागरूकता एवं भागीदारी के स्तर का अध्ययन करना।
3. भूमंडलीकरण का शिक्षा की नीतियों एवं कार्य्रकमों पर प्रभाव का अध्ययन करना ।
4. निजीकरण का अनुस्चित जातियो के शैक्षणिक एवं सामाजिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन करना।
5. अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलाब्धियों के स्तर पर उपलब्ध सुविधाओं का अध्ययन करना ।
6. अनुसूचित जातियों के शैक्षणिक विकास में बाधक सामाजिक एवं आर्थिक कारकों का अध्ययन करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 18 :जनजातियों में मद्यपान एवं नशे के रोकथाम में गैर–सरकारी संगठनों की भूमिका (म.प्र. के अलीराजपुर जिले के विशेष संदर्भ में)

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. आदिवासी समुदाय के प्रचलित मद्यपान एवं नशे के सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व का अध्ययन करना।
2. पारंपरिक मद्यपान एवं नशे की ओर प्रेरित करने वाले कारकों, पहलुओं तथा उनके जनजीवन पर हो रहे प्रभावों का अध्ययन करना।
3. गैर सरकारी संगठनों द्वारा नशामुक्ति हेतु क्रियान्वित प्रतिरोधात्मक एवं उपायात्मक कार्यक्रमों का अध्ययन करना।
4. गैर सरकारी सगठनों द्वारा क्रियान्वित कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
5. मद्यपान एवं नशा मुक्ति की ओर किये जा रहे गैर–शासकीय प्रयासों में अवरोधात्मक कारकों का अध्ययन करना।
6. मद्यपान एवं नशामुक्त समाज के लिए उचित प्रतिरोधात्मक, उपायात्मक एवं पुनर्वसनात्मक सुझाव प्रस्तुत करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 19 : एच.आई.वी. एड्स ग्रसित व्यक्तियों की सामाजिक स्थिति का एक

समाजकार्य अध्ययन (मध्यप्रदेश के झाबुआ जिले के विशेष संदर्भ में)

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. एच.आई.वी. एड्स ग्रसित व्यक्तियों पर बीमारियों के कारण हुये मानसिक आघात तथा समाज द्वारा लगाये गये कलंक की प्रकृति एवं प्रभावों का अध्ययन करना।
2. एच.आई.वी एड्स से ग्रसित व्यक्तियों में बीमारी के कारण स्वयं के प्रति अविश्वसनीयता की स्थिति एवं परिणामों का अध्ययन करना।
3. एच.आई.वी. एड्स ग्रसित व्यक्तियों के उपचार हेतु उपलब्ध सामाजिक पुर्नवास तथा चिकित्सा सुविधाओं की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
4. एच.आई.वी. एड्स ग्रसित व्यक्तियों में तेज गति से फैल रही बीमारी तथा उसके शारीरिक दुष्प्रभाव पर रोकथाम करने में परिवार तथा समाज की भूमिका का अध्ययन करना।
5. एड्स ग्रसित व्यक्तियों के उपचार में व्यावसायिक समाज कार्यकर्ता की प्रभावी भूमिका एवं हस्तक्षेप के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 20 : उच्च शिक्षा में निःशक्त महिलाओं की भागीदारी की चुनौतियाँ : एक

अध्ययन (म.प्र. के पश्चिम निमाड़ के विशेष संदर्भ में)

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. निःशक्त महिलाओं द्वारा उच्च शिक्षा ग्रहण करने में अनुभव की गई कठिनाइयों तथा चुनौतियों का अध्ययन करना।
2. निःशक्त महिलाओं के उच्च शिक्षा हेतु शासकीय योजनाओं, संवैधानिक/कानूनी प्रावधानों के क्रियान्वयन एवं प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
3. उच्च शिक्षा प्राप्त निःशक्त महिलाओं की वर्तमान सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
4. निःश्क्त महिलाओं की उच्च शिक्षा एवं व्यावसायिक गतिशोलता को बढ़ावा देने एवं हतोत्साहित करने वाले कारको का अध्ययन करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 21 :जातीय भेदभाव उन्मूलन मं शासकीय योजनाओं के प्रभाव का अध्ययन

(मध्यप्रदेश के खरगोन जिले के विशेष संदर्भ में)

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. शासकीय योजनाओं का हितग्राहियों पर प्रभाव एवं मूल्यांकन का अध्ययन करना।
2. शासकीय योजनाओं का जातिभेद निर्मूलन में योगदान का अध्ययन करना।
3. शासकीय योजनाओं का अर्न्तजातीय विवाह को बढ़ावा देने में भूमिका का अध्ययन करना।
4. जाति निर्मूलन में शासकीय योजनाओं की भूमिका और डॉ. आंबेडकर के जातिभेद निर्मूलन उपायों का तुलनात्मक मूल्यांकन करना।
5. अध्ययन स्त्रोत से प्राप्त जानकारी के आधार पर शासकीय योजनाओं और डॉ. आंबेडकर के उपायों का विश्लेषण कर निष्कर्ष निकालना और व्यवहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 22 :राष्ट्रीय राजीव गांधी छात्रवृत्ति योजना का अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के उच्च शिक्षा विकास का तुलनात्मक अध्ययन (म. प्र.राज्य के इंदौर, उज्जन, जबलपुर विश्वविद्यालय के विशेष सन्दर्भ में)

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. राजीव गाँधी राष्ट्रीय छात्रवृत्ति के हितग्राही अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति शोधार्थी के शैक्षणिक उपलब्धि में योजना के योगदान का अध्ययन करना।
2. राजीव गाँधी राष्ट्रीय छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले शोधार्थियों की सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक स्थिति का अध्ययन करना।
3. राजीव गाँधी राष्ट्रीय छात्रवृत्ति योजनाओं का अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति शोधार्थियों क उच्च शिक्षा विकास पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. राजीव गाँधी राष्ट्रीय छात्रवृत्ति योजनाओं के क्रियान्वयन में आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना।
5. राजीव गाँधी राष्ट्रीय छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजातियों के शोधार्थियों की समस्याओं के समाधान के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 23 : तंग बस्तियों में निवासरत् किशोर बालकों के विकास की चुनौतियाँ :

(मध्यप्रदेश के इन्दौर शहर के विशेष संदर्भ में)

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. किशोर बालकों के परिवार की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. किशोर बालकों के विकास पर परिवार की जीवन शैली के प्रभावों का अध्ययन करना।
3. किशोर बालकों की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उनके परिवारों द्वारा अपनाये गये तरीकों का अध्ययन करना।
4. किशोर बालकों के विकास में आने वाली बाधाओं का अध्ययन करना।
5. तंग बस्तियों के विकास हेतु शासन की योजनाओं की जानकारी प्राप्त करना।
6. किशोर बालकों के विकास हेतु नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 24 : गरीबी उन्मूलन में लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली की भूमिका का अध्ययन (सतना जिलें के सन्दर्भ में)

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली के हितग्राहियों की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली के उद्देश्य, संचालन तथा क्रियान्वयन का अध्ययन करना।
3. लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली का हितग्राहियों की आजीविका में खाद्यान्न की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
4. हितग्राहियों का लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली के प्रति जागरूकता एवं दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
5. लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली में उपयुक्त सम्भवनाओं एवं सुझावों को प्रस्तुत करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 25 : परिवार नियोजन का बारेला जनजाति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन (खरगोन जिले के विशेष संदर्भ में)

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. बारेला जनजाति महिलाओं की सामाजिक, सांस्कृतिक स्थिति का अध्ययन करना और उनमें परिवार नियोजन के प्रचलन का आकलन करना।
2. परिवार नियोजन में जनजाति महिला एवं पुरूषों के परिवार नियोजन से संबंधित नसबंदी कराने वाले योगदान का अध्ययन करना।
3. बारेला जनजाति महिलाओं में परिवार नियोजन व शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन में आने वाली अड़चनों का अध्ययन करना।
4. डॉ. आंबेडकर के परिवार नियोजन संबंधित विचारों और जनजाति के विकास का आंकलन करना।
5. डॉ. आंबेडकर के विचारों, सरकारी परिवार नियोजन तथा जनजाति विकास का वर्तमान तथ्यों के संदर्भ में मूल्यांकन करना।
6. सामाजिक, सांस्कृतिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 26 : डॉ. आंबेडकर के शिक्षा संबंधी विचारों का वर्तमान शिक्षा नीति पर प्रभाव : अनुसूचित जातियों के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन (म.प्र. के धार जिले के विशेष संदर्भ में)

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. अनुसूचित जातियों में शैक्षणिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।

2. अनुसूचित जातियों में डॉ. आंबेडकर के शिक्षा संबंधी विचार और वर्तमान शिक्षा नीति के प्रभाव का आंकलन करना।
3. अनुसूचित जातियों के शैक्षणिक विकास में आने वाली कठिनाइयों व चुनौतियों का अध्ययन करना।
4. अनुसूचित जातियों की शैक्षणिक प्रगति तथा उपलब्धियों पर वर्तमान शिक्षा नीति तथा डॉ. आंबेडकर के शैक्षणिक विचारों के प्रभाव का तुलनात्मक तथा मूल्यांकनात्मक आंकलन करना।
5. तथ्यों पर आधारित विषय से संबंधित निष्कर्ष निकाल कर शिक्षा नीति एवं भावी योजनाओं हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 27 :धार जिले के पीथमपुर औद्योगिक क्षेत्र की मलिन बस्तियों में निवासरत्

परिवारों की सामाजिक–आर्थिक एवं पयावरणीय कारकों का विश्लेषणः

एक भौगोलिक अध्ययन।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. औद्योगिक क्षेत्र में मलिन बस्तियों के निर्माण के कारणों का अध्ययन करना।
2. मलिन बस्तियों में निवासरत् परिवारों का सामाजिक–आर्थिक एवं पर्यावरण कारकों का अध्ययन करना।
3. मलिन बस्तियों का पर्यावरण से संबंध तथा नगरीय व्यवस्था का अध्ययन करना।
4. व्यक्ति गुणवत्ता सूचकांक ज्ञात करना।
5. मलिन बस्तियों में चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं का प्रभाव ज्ञात करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 28: विकलांगों की विकासात्मक योजनाओं की उपयोगिता का अध्ययन (मध्यप्रदेश के इन्दौर जिले के विशेष संदर्भ में)

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. विकलांगों की सामाजिक व आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. विकलांगों के व्यक्तित्व विकास में आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना।
3. विकलांगों के रोजगारोन्मुखी विकास की समस्याएं तथा कारणों का अध्ययन करना।
4. विकलांगों का संवैधानिक प्रावधानों के प्रति जागरूकता स्तर का अध्ययन करना।
5. विकलांगों के विकास हेतु चलाई जा रही योजनाओं का प्रभाव तथा क्रियान्वयन का अध्ययन करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 29: सहरिया जनजाति की किशारियों में हीमोग्लोबिन स्तर तथा आयरन

फोलिक एसिड की ग्रहणशीलता के प्रभाव का अध्ययन।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. सहरिया जनजाति की किशोरियों के सामाजिक, आर्थिक, एवं सांस्कृतिक स्थिति का अध्ययन करना ।
2. सहरिया जनजाति की किशोरियों में हीमोग्लोबिन के स्तर को ज्ञात करना।
3. सहरिया जनजाति की किशोरियों में हीमोग्लोबिन के स्तर को सुधारने हेतु शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन का अध्ययन करना।
4. सहरिया किशोरियों के पोषण में प्रोटीन तथा लौह तत्व के स्तर को ज्ञात करना।
5. हीमोग्लोबिन के स्तर एवं शिक्षा के मध्य संबंध ज्ञात करना।
6. हीमोग्लोबिन के स्तर एवं सामाजिक, आर्थिक स्थिति के मध्य संबंध ज्ञात करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 30 : भील जनजाति के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर आधुनिकीकरण के प्रभाव का अध्ययन (म.प्र. के झाबुआ जिले के विशेष संदर्भ में)

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. भील जनजाति के उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक, एवं शैक्षणिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. आधुनिकीकरण का भील जनजाति के सामाजिक एवं आर्थिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. भील जनजाति के सांस्कृतिक जीवन पर आधुनिकीकरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. आधुनिकीकरण का भील जनजाति की व्यवसायिक गतिशीलता व सामाजिक प्रस्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
5. भील जनजाति की परम्परागत संस्थाओं एवं सामाजिक मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 31 :बदलते कृषि भू–दृश्य के परिप्रेक्ष्य में जनजातीय क्षेत्रों में कृषि विकास स्तरों का मापन मध्यप्रदेश के जिला मण्डला के विशेष संदर्भ में।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. जनजातीय क्षेत्रों में कृषि भूमि उपयोग में हुये बदलाव का विश्लेषण करना।
2. जनजातीय क्षेत्रों में कृषि विकास, स्तरों का मापन कर परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
3. नवीन तकनीक एवं नवाचार गृहिता के स्तर का मापन करना।
4. शासकीय योजनाओं एवं कार्यक्रमों का आंकलन करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 32 : जनजातीय विकास में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका, कार्यप्रणाली

एवं उपागम का विश्लेषणात्मक अध्ययन मध्यप्रदेश के बड़वानी जिले के विशेष संदर्भ म

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. जनजातीय विकास हेतु गैर सरकारी संगठनों द्वारा क्रियान्वित विविध कार्यक्रमों का अध्ययन करना।
2. जनजातीय विकास कार्यक्रमों के क्रियान्वयन हेतु गैर सरकारी संगठनों द्वारा अपनाई गई पद्धतियों का अध्ययन करना।
3. गैर सरकारी संगठनों द्वारा संचालित विकास कार्यक्रमों के क्रियान्वयन की समस्याओं का अध्ययन करना।
4. गैर सरकारी संगठनों द्वारा क्रियान्वित जनजातीय विकास कार्यक्रमों से जनजातीय समुदाय की सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में हुए परिवर्तनों का अध्ययन करना।
5. शोध अध्ययन द्वारा प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण कर निष्कर्ष निकालना एवं नीतिगत सुझाव देना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 33 : पंचायती राज संस्थाओं में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित

जनजाति की निर्वाचित महिलाओं की भागीदारी का उनकी सामाजिक गतिशीलता पर प्रभाव (मध्यप्रदेश के मण्डला जिले के विशेष संदर्भ में।)

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. पंचायती राज संस्थाओं में निर्वाचित अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की महिलाओं की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. पंचायती राज संस्थाओं में निर्वाचित अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की महिलाओं की भागीदारी के स्तर का अध्ययन करना।
3. अनुसूचित जाति एवं जनजाति की महिलाओं की पंचायत राज संस्थाओं में भागीदारी का उनके सामाजिक, आर्थिक जीवन पर प्रभाव का अध्ययन।
4. पंचायती राज संस्थाओं में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की महिलाओं की भागीदारी का उनकी सामाजिक गतिशीलता पर प्रभाव का अध्ययन करना।
5. पंचायती राज संस्थाओं में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की महिलाओं में राजनैतिक सशक्तिकरण एवं नतृत्व विकास पर प्रभाव का अध्ययन करना।
6. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति महिलाओं की पंचायत राज संस्थाओं में भागीदारी में आनेवाली बाधाओं का अध्ययन करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 34: अनुसूचित जनजाति महिलाओं की शैक्षणिक उपलब्धियों का उनके

व्यवसायिक एवं सामाजिक गतिशीलता पर प्रभाव : एक अध्ययन पश्चिमी मध्यप्रदेश के बड़वानी जिले के विशेष संदर्भ में।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. अनुसूचित जनजाति महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. अनुसूचित जनजाति महिलाओं शैक्षणिक उपलब्धियों के स्तर का अध्ययन करना।
3. अनुसूचित जनजाति महिलाओं के लिए संचालित विभिन्न नीतियों एवं कार्यक्रमों के क्रियान्वयन की स्थिति का अध्ययन करना।
4. अनुसूचित जनजाति महिलाओं शैक्षणिक विकास एवं उपलब्धियों की चुनौतियों का अध्ययन करना।
5. अनुसूचित जनजाति महिलाओं शैक्षणिक उपलब्धता का उनके व्यवसायिक एवं सामाजिक गतिशीलता पर प्रभाव का अध्ययन करना।
6. अनुसूचित जनजाति महिलाओं की विभिन्न शैक्षणिक समस्यायों का अध्ययन एवं उनके हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 35: आदिवासी बच्चों के पोषण स्तर पर पोषण पुनर्वास केन्द्रो की भूमिका।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. आदिवासी बच्चो की सामाजिक, आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. आदिवासी बच्चो में कुपोषण के कारको तथा स्वास्थ के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
3. आदिवासी बच्चों के लिये चलाई जा रही स्वास्थ्य एवं पोषण संबंधी शासकीय योजनाओं की भूमिका का अध्ययन करना ।
4. आदिवासी क्षेत्रों में पोषण पुनर्वास केन्द्रों की भूमिका का अध्ययन करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 36: ग्रामीण बाजारों पर नगरीकरण का प्रभाव, मध्यप्रदेश के बैतूल जिले में लगने वाले साप्ताहिक ग्रामीण बाजारों क विशेष संदर्भ में।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. अध्ययन क्षेत्र के अंतर्गत चयनित ग्रामीण बाजारों के स्थान एवं अवस्थिति से संबंधित विशेषताओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना ।
2. अध्ययन क्षेत्र में लगने वाले ग्रामीण बाजारो में विभिन्न वस्तुओं की दुकानों की अवस्थिति को केन्द्रीय स्थल सिद्धांत की सहायता से पहचान कर विश्लेषण करना।
3. अध्ययन क्षेत्र में लगने वाले ग्रामीण बाजारों की संरचना एवं कार्यो के बदलते प्रतिरूप में नगरीकरण की भूमिका का विश्लेषण करना।
4. अध्ययन क्षेत्र में नगरीकरण के कारण ग्रामीण बाजारो में आ रहे परिवर्तना का ग्रामीण दुकानदारों एवं उपभोक्ता की आर्थिक–सामाजिक स्थिति पर प्रभावों का मूल्यांकन करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 37 : पश्चिमी मध्यप्रदेश की अनुसूचित जनजातीय महिलाओं में शैक्षणिक विकास स्तर का भौगोलिक अध्ययन।

शोध अध्ययन के उददेश्य :–

1. पश्चिमी मध्यप्रदेश में उपलब्ध शैक्षणिक सुविधाओं का स्थानिक प्रतिरूप ज्ञात करना।
2. अध्ययन क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति महिलाओं में शैक्षणिक स्थिति का स्थानिक प्रतिरूप ज्ञात करना।
3. अध्ययन क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति में दशाब्दी परिवर्तन/ सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन करना।
4. अध्ययन क्षेत्र की अनुसूचित जनजाति महिलाओं में आयु एवं पारिवारिक स्तरों पर शैक्षणिक असमानता की स्थिति ज्ञात कर एवं अंतरों की व्याख्या करना ।
5. अध्ययन क्षेत्र की अनुसूचित जनजाति महिलाओं में बालिकाओं द्वारा शाला त्यागने के कारणों का अध्ययन करना।
6. अनुसूचित जनजाति महिलाओं की शिक्षा को प्रभावित करने वाले करकों का अध्ययन करना।
7. अनुसूचित जनजाति शैक्षणिक स्थिति के मोडल का निर्माण तथा असमानता व पिछडेपन को दूर करने संबंधी सुझाव प्रस्तुत करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 38 : अनुसूचित जाति महिलाओं के शैक्षणिक विकास में बाधक

सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक कारकों का समाजशास्त्रीय अध्ययन (मध्यप्रदेश के खरगोन जिले के विशेष संदर्भ में)

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. अनुसूचित जाति की महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक विकास का अध्ययन करना।
2. अनुसूचित जाति की महिलाओं में शैक्षणिक स्तर एवं भागीदारी का अध्ययन करना।
3. अनुसूचित जाति की महिलाओं के शैक्षणिक विकास की नीतियों एवं कार्यक्रमों के उनके शैक्षणिक विकार पर अध्ययन करना।
4. अनुसूचित जाति की महिलाओं में सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक विकास पर शैक्षणिक विकास के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. अनुसूचित जाति की महिलाओं के शैक्षणिक विकास में बाधक कारकों का अध्ययन करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 39: नर्मदा नदी (अमरकंटक) के तटीय क्षेत्र में बसे भूमिया जनजाति के

औषधीय–वनोपज–निर्भर जीवनचर्या पर आधुनिक परिवेश के प्रभाव का समाजशास्त्रीय अध्ययन।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. भूमिया जनजाति के जीवनचर्या पर आधुनिक परिवेश के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. भूमिया जनजाति के औषधीय–वनोपज–निर्भर जीवनचर्या को सुगम तथा समाजीकरण हेतु विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करना।
3. भूमिया जनजाति के औषधीय ज्ञान को रोजगार परक एवं रूचिकर बनाकर आयुर्वैदिक दृष्टिकोण से उन्नति करने हेतु कारणों का अध्ययन करना।
4. भूमिया जनजाति के समाजीकरण एवं सभ्य समाज की मुख्यधारा में लाने के लिये समाजशास्त्रीय कारकों का अध्ययन करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 40 : राजीव गांधी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन में स्वयं सहायता समूह की महिला सदस्यों की भागीदारी एवं व्यावसायिक गतिशीलता का अध्ययन। मध्यप्रदेश के धार जिले के गंधवानी विकासखण्ड के विशेष संदर्भ में।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. राजीव गांधी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन के अंतर्गत महिला सशक्तिकरण की दिशा में किये गये प्रयासों का अध्ययन करना।
2. राजीव गांधी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन के अंतर्गत महिला लाभार्थियों की लाभ के पूर्व एवं पश्चात की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. राजीव गांधी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन के अंतर्गत लाभार्थी महिलाओं के व्यक्तिगत तथा पारिवारिक जीवन पर हुए सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों का अध्ययन करना।
4. राजीव गांधी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन के अंतर्गत कार्यक्रमों के प्रभावी क्रियान्वयन विशेष रूप से महिलाओं की सहभागिता तथा सशक्तिकरण में आ रही कठिनाईयों का अध्ययन करना।
5. राजीव गांधी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन की गतिविधियों के संचालन क्रियान्वयन हेतु आदर्श योजना का निर्माण कर सुझाव प्रस्तुत करना।

पीएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 41: बैगा जनजाति विकास की शासकीय योजनाओं का उनके सामाजिक जीवन पर प्रभाव का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन : पूर्वी मध्यप्रदेश के बालाघाट जिले के विशेष संदर्भ में।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. बैगा जनजाति के वर्तमान सामाजिक जीवन पर शासकीय योजना के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. बैगा विकास अभिकरण के कार्यक्रमों मे बैगा जनजाति की जन भागीदारी का अध्ययन करना ।
3. बैगा जनजातियों के शैक्षणिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास का आंकलन करना।
4. शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन में आने वाली कठिनाईयों (बाधाओं) का अध्ययन कर उसके कारणों का पता लगाना और उसके कारण बैगा जनजाति कैसे प्रभावित हुई का बोध करना।
5. बैगा जनजाति के समाजशास्त्रीय अध्ययन का अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त समंकों के आधार पर मूल्यांकन करना और तथ्यात्मक निष्कर्षों के साथ शासकीय योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु सुझाव देना।

पोएच.डी. शोध शीर्षक क्र. 42:आदिवासी महिलाओं में मातृ तथा शिशु मृत्यु दर की स्थिति एवं जननो सुरक्षा योजना के क्रियान्वयन का अध्ययन करना। मध्यप्रदेश के डिंडोरी जिले के विशेष संदर्भ में।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. ग्रामीण आदिवासी महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं स्वास्थ्यगत स्थिति का अध्ययन करना।
2. आदिवासी महिलाओं में मातृ एवं शिशुमृत्यू के कारणों तथा इन्हें कम करने संबंधी योजनाओं का अध्ययन करना।
3. माता के पोषण तथा स्वास्थ्य शिक्षा संबंधी जागरूकता का अध्ययन करना।
4. जननी सुरक्षा योजना की प्रभावशीलता तथा कियान्वयन में आने वाली बाधाओं का अध्ययन करना।

Ph.D. Research topic No 43: Household Decision Making Process and Empowerment of Women, With Special Reference to Bhil Women of Jhabua District of Madhya Pradesh

Objectives of research:-

1. To study socio-economic and cultural norms prevalent among Bhil tribes
2. To study attern of household decision and explore encouranging and discouraging factors for womens participation in the process.
3. To assess the impact of women's involvement into household decision on family relation in general and on women in particular.
4. To indentify and study the situation that causes conflict and ascertain any relation of it with the household decision making.
5. To assess the impact of capacity building programmes implemented by Government and NGO's on Bhil women's decision making capacity.

Ph.D. Research topic No. 44 : Domestic Violence: Causes and Consequances, A Sociological Study of Ahmedabad City in Gujrat

Objectives of research:-

1. To analyzed causes of domestic violence in study area.
2. To analyzed nature, extent and magnitude of domestic violence in the Ahmedabad City.
3. To analyzed and study age, religion, cast, family income, and education of victim of Domestic violence.
4. To analyzed and study changes in familial relation of victim in sociological perspective.

विस्तार, प्रशिक्षण एवं अकादमिक

बाबा साहेब की प्रतिमा का माल्यार्पण करते हुए माननीय मत्री श्री लालसिंह आर्य एवं

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए करते हुए माननीय मत्री श्री लालसिंह आर्य

14 अप्रैल 2017 दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

विश्वविद्यालय में 14 अप्रैल 2017 को डॉ. अम्बेडकर की 126 वीं जयंती के शुभ अवसर पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी **'सामाजिक न्याय एवं सामाजिक सौहार्दता का राष्ट्र निर्माण में विशिष्ट महत्व'** विषय पर डॉ. अम्बेडकर प्रतिष्ठान सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित की गई। मुख्य अतिथि श्री माननीय श्री लालसिंह आर्य, मंत्री सामान्य प्रशासन एवं नर्मदा घाटी विकास, मध्यप्रदेश शासन थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री चन्द्रशेखर, कलेक्टर रतलाम, भारतीय राजस्व सेवा के श्री अशोक रतन, डॉ. अजय प्रताप मिश्रा, श्री सूरज कैरो उपस्थित रहे। अध्यक्षता कुलपति डॉ. आर.एस. कुरील ने की। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. बाबा साहेब एवं भगवान बुद्ध की प्रतिमा एवं माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलन द्वारा हआ। उसके पश्चात् शोधार्थियों द्वारा विश्वविद्यालय के कुलगीत की प्रस्तुति दी गयी। दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की विस्तृत रूपरेखा संगोष्ठी के संयोजक प्रो. सी.डी. नाईक द्वारा प्रस्तुत की गई

मंत्री श्री लालसिंह आर्य को लाईफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित करते हुए कुलपति, कुलसचिव एवं अतिथिगण

न्यज लेटर का विमोचन करते हुए मंत्री लालसिंह आर्य, कुलपति डॉ. आर.एस. कुरील, कुलसचिव एवं अतिथिगण

विश्वविद्यालय के कुलसचिव ने स्वागत उद्‌बोधन देते हुए कहा कि राष्ट्र सर्वोपरि है, उसके ऊपर कोई भी नहीं। समाज में सामाजिक सौहार्द्र स्थाहपत करना है तो सभी को साथ लेकर चलने की आवश्यकता है। मुख्य अतिथि माननीय मंत्री श्री लालसिंह आर्य ने अपने सारगर्भित उद्‌बोधन में कहा कि बड़े हर्ष का विषय है कि विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित आज की इस संगोष्ठी का विषय डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर के विचार एवं उनके दर्शन से छून वाला विषय है। उन्होंने कहा कि संस्कारों से ही हृदय का परिवतन होता है। जीवन में हम महापुरूशों के मार्ग पर नहीं चल पाते, यह एक बड़ी विडम्बना है। बाबा साहेब ने हम सभी को जो संविधान का कवच दिया है उसी के कारण आज हम सभी उच्च पदों पर आसीन हैं, इसी का परिणाम है कि आज सम्पूर्ण विश्व बाबा साहेब को नमन कर रहा है। बाबा साहेब ने अपने जीवन में बहुत कष्ट सहे लेकिन इसके बावजूद भी उनके द्वारा समता मूलक समाज के निर्माण के लिये सर्वोच्च कृति की रचना कर देश को एक मजबूत संविधान दिया गया।

उन्होंने आगे कहा कि जहाँ व्यक्तियों को सामाजिक न्याय नहीं मिलता वहीं से विद्रोह होता है। सम्पूर्ण भारत मनुष्य के शरीर के समान है। देश के किसी भी भाग में यदि कभी कुछ अप्रिय घटना घटती है तो कष्ट की अनुभूति होती है। भारत गरीबों की कुटिया में बसता है। जब तक हम इनको विकास की राह पर नहीं ले जायेंगे तब तक सच्चे अर्थों में राष्ट्र का निर्माण संभव नहीं होगा। यह देश करूणा, मर्यादा, बंधुत्व तथा आपसी प्रेम पर चलने वाला देश है। जब ये समाज धारायें एक मिलेगी तभी सामाजिक न्यायएक सामाजिक सौहार्द्रता भी स्थापित होगी। अंत में उन्होंने कहा कि, समाज में जब सभी को सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक रूप से लाभ मिलेगा तो सामाजिक की स्थापना स्वतः ही हो जायेगी।

मंचासीन कुलपति डॉ. आर.एस.कुरील, कुलसचिव डॉ. बी. भारती श्री वी. चंद्रशेखर, श्री अशोक रतन एवं डॉ. अजय प्रताप

सभा में उपस्थित श्रोतागण

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपति डॉ. आर.एस. कुरील ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि, जब तक समाज को सभी को एक जैसे समान अवसर उपलब्ध नहीं होंगे तब तक वास्तविक रूप से राष्ट्र का निर्माण संभव नहीं होगा। आज देश के संगठित बनाये रखना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। उन्होंने चिंता व्यक्त करते हए कहा कि देश के लगभग 98 प्रतिशत लोग संसाधनहीन है। निजीकरण एवं वैश्वीकरण के कारण बहुत से लोग रोजगार विहीन हो गये हैं इन विषयों पर भी गहन चिंतन–मनन करने की आवश्यकता है। उन्होंने प्रबुद्ध वर्ग का आव्हान करते हुए कहा कि राष्ट्र को कैसे आगे बढ़ाया जाये। एकता तथा अखंडता कैसे स्थापित की जाये, इन बिंदुओं पर चिंतन–मनन करना चाहिए, जिससे देश में वास्तविक रूप से सामाजिक न्याय एवं सामाजिक सौहार्द्र स्थापित किया जा सके। इस पावन अवसर पर माननीय मंत्री श्री लालसिंह आर्य को विश्वविद्यालय की ओर से **डॉ. अम्बेडकर रत्न सम्मान'** एवं **'लाइफ टाईम एचीवमेंट अवार्ड'** से कुलपति डॉ. आर.एस. कुरील द्वारा सम्मानित किया गया। विशेष अतिथियों को भी विश्वविद्यालय का प्रतीक चिन्ह, संविधान की प्रस्तावना एवं बुद्ध स्टाम्प भेट किये गये। विशिष्ट अतिथि श्री अशोक रतन को उनके राजस्व सेवा में चयनित होने पर कुलपति द्वारा उनके माता–पिता को इस उपलब्धि के लिए **'लाइफ टाईम एचीवमेंट अवार्ड'** से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित न्यूज लेटर का अंक 7 एवं अंक 8, हिन्दी एवं अग्रेजी की दो शोध पत्रिकाओं का विमोचन माननीय मंत्री, कुलपति महोदय एवं अतिथियों द्वारा किया गया। इसके साथ ही विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल के रीजनल डायरेक्टर डॉ. जी.एस. चौहान द्वारा लिखित पुस्तक का भी विमोचन किया गया। इस अवसर पर महाराष्ट्र से बाबा साहेब की जन्म स्थली तक साईकिल यात्रा की समाप्ति पर श्री राजेन्द्र पाटील को माननोय मंत्री श्री लालसिंह आर्य द्वारा विश्वविद्यालय का प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया तथा उसक उत्कृष्ट कार्य की भूरि–भूरि प्रशंसा की गई। शुभारंभ सत्र का संचालन डॉ. मनीषा सक्सेना ने किया।

दिनांक 15 अप्रैल 2017 को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन सत्र आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता कुलपति डॉ. आर.एस. कुरील द्वारा की गई। दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में कुल चार तकनीकि सत्र आयोजित किये गये जिसमें देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों, संस्थाओं, जिनमें प्रमुख रूप से चेन्नई विश्वविद्यालय से प्रो. एम. थंगराज, जोधपुर से डॉ. साधना मेघवाल एवं श्री तातारात, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय (हरियाणा) सं प्रो. एस.के. चहल एवं प्रो. अजीत चहल, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल से डॉ. जी.एस. चौहान, फैज़ाबाद विश्वविद्यालय से डॉ. आर.के. दोहरे द्वारा शोध पत्रों का वाचन करने के अतिरिक्त प्रदेश के छात्रों, समाज वैज्ञानिकों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं सहित के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के संकाय शोध छात्रों, समाज वैज्ञानिकों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं सहित कुल 100 प्रतिभागियों द्वारा संगोष्ठी में भाग लिया गया। महाराष्ट्र में नागपुर से लगभग 35 भिक्षुणी संघ द्वारा भी राष्ट्रीय संगोष्ठी में अपने–अपने विचार

प्रस्तुत किये। दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का सारांश, संचालन एवं आभार संगोष्ठी के संयोजक प्रो. सो.डी. नाईक द्वारा व्यक्त किया गया।

14 अप्रैल 2017 – भारत रत्न डॉ. अम्बेडकर कोचिंग सेन्टर का शुभारंभ

कोचिंग सेंटर का शंभारंभ करते हुए मंत्री श्री लालसिंह आर्य, कुलपति डॉ. आर.एस.कुरील, कुलसचिव डॉ. बी. भारती श्री वी. चंद्रशेखर, श्री अशोक रतन एवं डॉ.

शोधार्थियों से चर्चा करते हुए श्री अशोक रतन, श्री वी. चंद्रशेखर, कुलपति डॉ. आर.एस.कुरील, कुलसचिव एवं संकाय सदस्य

विश्वविद्यालय में 14 अप्रैल 2017 को डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर की 126 वीं जयंती के पावन अवसर पर सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार, नईदिल्ली द्वारा **डॉ. अम्बेडकर कोचिंग सेंटर** का शुभारंभ श्री लालसिंह आर्य (माननीय मत्री मध्यप्रदेश शासन), श्री अशोक रतन (भारतीय राजस्व सेवा, वित्त मंत्रालय, भारतसरकार) कुलपति डॉ. आर.एस. कुरील, कुलसचिव डॉ. बी. भारती, संकाय सदस्य एवं गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति म किया गया।

इस अवसर पर श्री अशोक रतन ने आश्वासन दिया कि कोचिंग सेंटर के लिए अधिक से अधिक सुविधायें उपलब्ध करवाई जायेगी। कुलपति डॉ. आर.एस. कुरील ने बताया कि सेंटर में विद्यार्थियों को आई.ए.एस., पी.एस.सी. आदि प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी एवं पुस्तकालय में प्रतियोगी परीक्षाओं की पुस्तकें उपलब्ध करवाई जायेगी। कुलसचिव डॉ. बी. भारती ने कोचिंग सेंटर के शुभारंभ पर बधाई दी और विद्यार्थियों से आह्वान किया कि लगन एव मेहनत से तैयारी करें सफलता अवश्य मिलेगी।

14 अप्रैल 2017– उपडाकघर का लोकार्पण

विश्वविद्यालय परिसर में 14 अप्रैल 2017 को डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर की जयंती के शुभ अवसर पर **उप डाकघर** का लोकार्पण श्री लालसिंह आर्य (सामान्य प्रशासन एवं नर्मदा घाटी विकास विकास मंत्री)

मध्यप्रदेशासन शासन एवं विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपति डॉ. आर.एस. कुरील के मख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। इस अवसर पर इंदौर डाक परिक्षेत्र की निदेशक, डाक सवाएं श्रीमति प्रीति अग्रवाल विशेष रूप से उपस्थित रही। उनके द्वारा उपस्थित नागरिको को डाकघर की विभिन्न लाभकारी योजनाएं जैसे मात्र 50 रुपये खाता खोलने पर एटीएम कार्ड मुफ्त दिया जावगा। इस कार्ड को किस भी बैंक की एटीएम मशीन में उपयोग किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त स्पीड पोस्ट, रजिस्टर्ड पत्र, अटल पेंशन योजना, सुकन्या योजना, किसान विकासपत्र, मासिक आय योजना, डाक जीवन बीमा, ग्रामीण डाक जीवन बीमा तथा बचत खातों के माध्यम से भारत सरकार द्वारा संचालित योजनाओं का विशेष लाभ लेने की अपील की गई। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. बी. भारती, प्रो. सी.डी. नाईक, प्रो. आर. डी. मौर्य, श्री भगवानदास गांडाने, श्री एम. के. निवास, निदेशक (प्रथम) क्षेत्रीय कार्यालय इंदार, अधीक्षक डाकघर इंदौर, श्री नगरेतर मंडल विशेष रुप से उपस्थित रहे। नये उप डाकघर के लोकार्पण पर कुलपति डॉ. आर. एस. कुरील ने बधाई दी।

डाकघर का लोकार्पण करते हुए मंत्री श्री लालसिंह आर्य, कुलपति डॉ. आर.एस.कुरील, कुलसचिव डॉ. बी. भारती श्रीमती प्रीति अग्रवाल एवं अन्य

लोकार्पण के अवसर पर उपस्थित माननीय मंत्री, कुलपति, कुलसचिव, इंदौर डाकघर परिक्षेत्र निदेशक एवं अधिकारीगण

3 जनवरी 2017 – सावित्रीबाई फूले जयंती

विश्वविद्यालय द्वारा जनवरी 2017 को सावित्रीबाई फूले जयंती के अवसर पर एक दिवसीय परिचर्चा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि डॉ. रमा पांचाल थी। कार्यक्रम का संयोजन प्रो. डी. के. वर्मा ने किया। कुलपति डॉ. आर. एस. कुरील ने अध्यक्षता की। शुभारंभ भगवान बुद्ध, सावित्रीबाई एवं बाबा साहेब की प्रतिमा के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलन द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. पांचाल ने अपने उद्‌बोधन में बताया कि सन् 1800 ई. में शूद्र अर्थात् वर्तमान में अनुसूचित जाति, जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग के बालक–बालिकाओं को सनातनी वर्ण व्यवस्था के अनुसार शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नहीं था और न ही उस

समय आज की तरह पाठशालायें थी। 19वीं सदी के पूर्वार्ध में भी यह स्थिति यथावत् थी। आगे चलकर उन्होंने नारी उद्धार के साथ सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए जीवन भर काम किया।

कुलपति डॉ. आर. एस. कुरील ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि, आज से लगभग 150 वर्ष पूर्व माता सावित्रीबाई फ्ले ने अपने पति के साथ मिलकर शिक्षा की जो ज्योति जलाई उसी के कारण भारत की संपूर्ण नारियों व शूद्र शिक्षा प्राप्त करने के अधिकारी बने। शिक्षा के द्वार खोलने वाली सावित्री फुले ही हैं लेकिन भारत के इतिहासकार, शिक्षाविदों ने सामाजिक शिक्षा में इतने बड़े क्रांतिकारी को इतिहास में महत्व नहीं दिया और न ही समाज तथा राजनेताओं एवं सरकार ने कोई ध्यान दिया। आज देश में शिक्षा का अधिकार कानून बन चुका है अब शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक बालक–बालिका का कानूनी व मौलिक अधिकार है जिसे बच्चों का भी समझना चाहिये। कार्यक्रम का संचालन श्री प्रदीपकुमार ने किया। आभार कुलसचिव डॉ. बी. भारती ने व्यक्त किया।

13 जनवरी 2017 –विश्वविद्यालय का स्थापना दिवस

13 जनवरी को विश्वविद्यालय का स्थापना दिवस के अवसर पर एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला "वंचित वर्गों के सामाजिक– आर्थिक तथा शैक्षणिक उत्कृष्टता हेतु नीतिगत अनुसंधान एवं नियोजन" विषय पर आयोजित की गई। मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल म.प्र. के प्रमुख सचिव श्री अजय तिर्की थे। अध्यक्षता कुलपति डॉ. आर. एस. कुरील ने की। कार्यशाला संयोजक प्रो. डी. के. वर्मा ने कार्यशाला की रूपरेखा के बारे में विस्तार से बताया। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए श्री अजय तिर्की ने सभी को बधाई देते हुए कहा कि संस्थान को इस उँचाई तक लाने में आप सभी का अथक परिश्रम लगन एवं मेहनत है तथा सभी ने अपने–अपने तरीके से इस कार्य को पूर्ण करने में परिश्रम किया है। उन्होंने कहा कि बाबा साहेब ने अपने कर्मो से महानता प्राप्त की। हमारे देश का सविधान अन्य देशों के सविधान की अपेक्षा बहुत की प्रगतिशील है।

कुलपति डॉ. आर. एस. कुरील ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि विश्वविद्यालय का अधिनियम ही विश्वविद्यालय का संविधान है। इसे संभाल कर रखना है तभी सभी को अच्छी तरह से इसे समझना है। विश्वविद्यालय की दिशा इस अधिनियम के द्वारा ही संचालित होगी। उन्होंने विद्यार्थियों को संदेश देते हुए कहा कि सभी विद्यार्थी बड़े–बड़े सपने देखें तथा उनको पूरा करने के लिए उसी प्रकार प्रयास करे जिस प्रकार से डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर ने सफलता प्राप्त करने के लिए अथक प्रयास एवं संघर्ष किए थे। कुलसचिव डॉ. बी. भारती ने स्वागत उद्‌बोधन दिया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि को लाइफ टाईम अचीवमेंट पुरस्कार तथा भगवान बुद्ध की प्रतिमा प्रदान कर सम्मानित किया गया। संचालन सहायक प्राध्यापक श्री प्रदीपकुमार द्वारा किया गया। आभार कुलसचिव डॉ. बी. भारती ने माना।

26 जनवरी 2017 – गणतंत्र दिवस कार्यक्रम

गणतंत्र दिवस के अवसर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आर. एस. कुरील ध्वजारोहण करते हुए

गणतंत्र दिवस के अवसर विश्वविद्यालय के कुलपति शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों को संबोधित करते हुए

26 जनवरी 2017 को गणतंत्र दिवस कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय परिसर में संपन्न हुआ। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आर. एस. कुरील द्वारा ध्वजारोहण किया गया। उसके पश्चात् राष्ट्रगान गाया गया। कुलपति डॉ. आर. एस. कुरील ने गणतंत्र दिवस के अवसर पर ब्राउस परिवार के सदस्यों को शुभकामनायें दी और बताया कि आज के ही दिन हमारे देश में बाबा साहेब द्वारा रचित संविधान को लागू किया गया। जिसमें समाज के नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समानता प्राप्त कराने के लिये तथा उनमें सबमें व्यक्तिकी गरिमा और राष्ट्र की एकता और बंधुता बढ़ाने का समावेश है।

इस अवसर पर सभी को पुनः बधाई देते हुए कहा कि लगन और मेहनत से कार्य करें तो सफलता प्राप्त होगी। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. बी. भारती ने कहा कि विश्वविद्यालय नया–नया है सभी को लगन मेहनत से कार्य कर इसे प्रसिद्धि दिलाये, यही हम सबका प्रयास है।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर उपस्थित विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी एवं छात्र छात्राऐं

"समाज के कमजोर वर्गों के प्रति संवेदनशीलता" कार्यक्रम

विश्वविद्यालय द्वारा 30 जनवरी से 01 फरवरी 2017 तक "समाज के कमजोर वर्गों के प्रति संवेदनशीलता" विषय पर विशेष प्रशिक्षण कार्यशाला का प्रथम चरण आयोजित किया गया। शुभारंभ सत्र के मुख्य अतिथि पूर्व महानिदेशक म.प्र. पुलिस एवं पूर्व महानिदेशक बानीस श्री एस. के. दास थे। अध्यक्षता कुलपति डॉ. आर. एस. कुरील ले की। विशेष अतिथि डॉ. एस.एल. थाउसन अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक, अनसूचित जाति कल्याण म.प्र. शासन एवं अधिवक्ता श्री अनिल त्रिवेदी थे। शुभारंभ बाबासाहेब एवं भगवान बुद्ध की प्रतिमा पर माल्यार्पण व दीप प्रज्ज्वल द्वारा हुआ। कार्यक्रम संयोजक प्रो. आर. डी. मौर्य ने कार्यक्रम की रुपरेखा प्रस्तुत की। मुख्य अतिथि श्री दास ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि समाज में एक हिस्सा ऐसा है जो कमजोर वर्ग के प्रति असंवेदनशील है और उन्हें न्याय देने में आनाकानी करता है। चाहता है कि ऐसी स्थिति बनी रहे। डॉ. थाउसन

ने कहा कि पुलिस अधिकारियों को अपने पूर्वाग्रह को दूर रखकर अत्याचार निवारण के लिए कार्य करना चाहिये एवं अत्याचार की घटनाओं की विवेचना पूरी गंभीरता एवं ईमानदारी से विवेचनाकर पीड़ित को न्याय दिलाना चाहिये जिससे कि समाज में पुलिस की सकारात्मक भूमिका का संदेश जा सके तथा पीड़ितों को समुचित न्याय मिल सके। कुलपति डॉ. आर. एस. कुरील ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि पुलिस तथा कार्यपालिका भी महत्वपूर्ण इकाई है तथा अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विरूद्ध हो रही अत्याचार की घटनाओं को रोकने में संरक्षण प्रदान करना चहिये। संचालन प्रो. आर. डी. मौर्य ने किया।

1 फरवरी 2017 को तीन दिवसीय विशेष प्रशिक्षण कार्यशाला के समापन में डॉ. आर. एस. कुरील ने कहा कि, सामाजिक न्याय दिलाने में पुलिस की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। उन्होंने कहा कि, पुलिस प्रशिक्षण कार्यशाला पुलिस अधिकारियों को इन वर्गों के विरुद्ध होने वाले अत्याचारों की वास्तविकता से अवगत कराती है एवं उसके रोकथाम हेतु संवैधानिक प्रावधानों के बारे में जागरुक बनाती है जिससे उन्हें इस तरह के प्रकरणों में सामाजिक न्याय सुनिश्चित कराने में सहायता प्रदान करती है। कुलसचिव डॉ. बी. भारती ने कहा कि पुलिस हमारे समाज का महत्वपूर्ण अंग है। पुलिस अधिकारियों को न्याय सुनिश्चित कराने में पूर्ण संवेदनशीलता एवं निर्भीकता के साथ अपने दायित्वो का निर्वहन करना चाहिये। प्रो. डी. के. वर्मा ने दोनों सत्रों की अध्यक्षता की एवं अपने सुझाव देते हुए बताया कि आज भी अत्याचार से पीड़ित अनुसूचित जाति/जनजातीय परिवारों को न्याय मिलने म देरी एवं दोशमुक्ति का प्रमुख कारण फरियादी एवं गवाहों द्वारा अपने बयानों पर कायम नहीं रहना एवं रजामंदी या समझौता करना है जो गंभीर चिंतन का विषय है। कार्यशाला में न्यायाधीश श्री. आर. बी गुप्ता, न्यायाधीश श्री हेमंत जोशी, न्यायाधीश श्री ऋषिराज त्रिवेदी, जवाहरलाल नेहरु वि.वि. नई दिल्ली के प्रो. आनंदकुमार, प्रो. नरेन्द्रकुमार, श्री मनोज श्रीवास्तव, एस.पी. सागर ने भी संबोधित किया। प्रो. सी.डी. नाईक ने दो तकनीको सत्रों की अध्यक्षता कर अपने विचार प्रस्तुत किये। कार्यशाला में 3 दिनों मे कुल 9 तकनीकि सत्रों का आयोजन किया गया। जिसमें अत्याचार निवारण, सशक्तीरण महिलाओं के विरुद्ध होने वाले अत्याचार निवारण पर चर्चा हुई। संचालन प्रो. आर. डी. मौर्य ने किया। आभार कुलसचिव डॉ. बी. भारती ने माना।

4 फरवरी 2017 –मुख्यमंत्री कौशल विकास प्रशिक्षण योजना कार्यक्रम

विश्वविद्यालय द्वारा दिनांक 4 फरवरी 2017 को मुख्यमंत्री कौशल विकास प्रशिक्षण योजना 'फैशन' डिजायनिंग 'ट्रेड' पाठ्यक्रम पूर्ण होने पर प्रमाणपत्र एवं मानदेय राशि प्रदाय करने हेतु कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अनुसूचित जाति विकास के प्रमुख सचिव श्री अशोक शाह थे। अध्यक्षता डॉ. आर. एस. कुरील ने की। विशेष अतिथि प्रतिभा सिन्थेटिक्स प्रा.लि. कंपनी के डायरेक्टर श्री वी. के. अग्रवाल थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान बुद्ध एवं बाबा साहेब की प्रतिमा का माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि श्री शाह ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि विकास क्या है, जिस गति से हम आगे बढ़ रहे हैं। उसे विकास नहीं कहा जा सकता है। जब तक हम चल नहीं सकते आगे नहीं बढ़ सकते तथा विकास नहीं कर

सकते हैं। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से पूछा कि प्रशिक्षण प्राप्त करके क्या करोगे। हमारे माननीय प्रधानमंत्री भी कौशल विकास प्रशिक्षण पर जोर दे रहे हैं। अब वह समय नहीं रहा कि आपको कोई रास्ता दिखायेगा। आपको स्वयं अपनी राह बनाकर जिस क्षेत्र में रुचि हो उस पर आगे बढ़कर अपनी राह बनाना होगी। उन्होंने आगे कहा कि अगर जिम्मेदारी से जीना है तो गपशप से दूर रहना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि प्रार्थना में बताया गया है कि 'अत दीपो भव' की तरह ऊर्जा नहीं आयेगी तो जल नहीं सकते। म सभी से आग्रह करना चाहूंगा कि देखो, समझो, सुनने की क्षमता रखो और आगे बढ़ो। अध्यक्षता कर रहे कुलपति डॉ. आर. एस. कुरील ने सभी प्रशिक्षणार्थियों करे शुभकामनायें देते हुये कहा कि मनुष्य ने जितनी चीजे बनाई, सब अप्राकृतिक है है। कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम भारत सरकार के साथ प्रशिक्षण की कार्य योजना बनाये और प्रशिक्षण कार्यक्रम करे। कार्यक्रम समन्वयक श्री भगवानदास गोंडान ने कहा कि एक चिंतक, लेखक, कुशल प्रशासक, श्री शाह हमारे विश्वविद्यालय के शोधार्थियों, प्रशिक्षणार्थियों को जो ज्ञानवर्धक बातें बताई हैं। उसका जरुर लाभ उठाये। कार्यक्रम में सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रणाण पत्र, तीन हजार रुपये का चेक, प्रतिभा सिन्थेटिक्स कंपनी की ओर से प्रतिमाह 9 हजार रुपये पर नियुक्ति पत्र भी दिया गया। इसके साथ ही विश्वविद्यालय का सत्र 2017 का वार्षिक कैलेण्डर भी प्रदान किया गया। संचालन एवं आभार कार्यक्रम समन्वयक श्री भगवानदास गोंडाने द्वारा किया गया।

13 से 15 फरवरी 2017 – पुलिस कर्मचारियों की विशेष प्रशिक्षण कार्यशाला

विश्वविद्यालय द्वारा 13 से 15 फरवरी 2017 को मध्यप्रदेश के पुलिस अधिकारियों की विशेष प्रशिक्षण कार्यशाला का द्वितीय चरण "समाज के कमजोर वर्गों के प्रति संवेदनशीलता" विषय पर आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि श्री आर. पी. सिंह, डीआईजी इंदौर रेंज व श्री एच.एम. मिश्रा डीआईजी इंदौर थे। अध्यक्षता कुलपति डॉ. आर. एस. कुरील ने की। विशिष्ट अतिथि डॉ. आर. आर. प्रसाद, सलाहकार, हैदराबाद थे। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन बाबा साहेब एवं भगवान बुद्ध की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन द्वारा हुआ। प्रशिक्षण की रूपरेखा का विवरण संयोजक प्रो. आर. डी. मौर्य ने प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि श्री आर. पी. सिंह ने अपने उद्बोधन म व्यक्ति के मानसिक परिवर्तन पर विशेष बल दिया। श्री मिश्रा ने एन. सी. आर. बी. की रिपोर्ट का जिक्र करते हुए बताया कि अनुसूचित जाति व जनजाति के प्रति घटनाऐं म.प्र. के कुछ क्षेत्रों में अधिक है। कुछ घटनाओं की प्रवृत्ति ऐसी होती है जिससे असंवेदना की स्थिति बन जाती है।

कुलपति डॉ. आर. एस. कुरील ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि सख्त कानून होने के बावजूद म. प्र. में अपराधों की संख्या अधिक है। अपराधों को कम करने के लिये थानों में संवेदनशील वातावरण बनाने की आवश्यकता है। इससे अत्याचारों से पीड़ित कमजोर वर्ग विशेषकर अनुसूचित जाति व जनजाति के व्यक्ति निःसंकोच होकर अपनी रिपोर्ट दर्ज करवा सके। कुलसचिव डॉ. बी. भारती ने अपने उद्बोधन में कहा कि समाज

के लोग समानना की भावना से चले। किसी भी सेवा में स्टार नहीं मिलता, केवल पुलिस अधिकारियों को मिलता है। उद्घाटन सत्र का संचालन प्रो. आर. डी. मौर्य ने किया। प्रो. सी. डी. नाईक ने आभार माना।

15 फरवरी को इस तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का समापना समारोह आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि एस.डी.एम. श्री संदीप जी. आर. ने बताया कि, पुलिस अधिकारी कई जिम्मेदारियों में व्यस्त रहते हैं फिर भी पुलिस द्वारा अत्याचार, शोषण, अपराधों की घटनाओं का प्रमुखता से समाधान करना चाहिये। कार्यक्रम की अध्यक्षता वि.वि. के कुलपति डॉ. आर. एस. कुरील ने की।

20 फरवरी 2017 – विश्व सामाजिक न्याय दिवस

विश्वविद्यालय द्वारा 20 फरवरी 2017 को स्कूल ऑफ विधि एवं सामाजिक न्याय के तत्वाधान में "विश्व सामाजिक न्याय दिवस" के अवसर पर एक दिवसीय बौद्धिक परिचर्चा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. वी. आर. उपाध्याय थे। अध्यक्षता कुलपति डॉ. आर. एस. कुरील ने की। कार्यक्रम संयोजक प्रो. डी. के. वर्मा ने परिचर्चा की रुपरेखा प्रस्तुत करते हुए बताया कि 2009 म विश्वस्तर पर सामाजिक न्याय दिवस को 20 फरवरी को मनाया जा रहा है। विश्व के सभी देशों के संविधान की अवधारणा हमारे देश के संविधान की अवधारणा से भिन्न है। क्योंकि हमारा संविधान सामाजिक न्याय पर आधारित है। मुख्य अतिथि डॉ. उपाध्याय ने अपने उद्बोधन में कहा कि सामाजिक न्याय की अवधारणा को परिभाषित करते हेतु सामाजिक चिंतन के विभिन्न पहलुओं पर भी चर्चा होनी चाहिये। अध्यक्षता कर रहे कुलपति डॉ. आर. एस. कुरील ने अपने उद्बोधन में कहा कि संविधान की उद्देशिका में न्याय की अवधारणा के क्रम में देखें ता न्याय को तीन रूपों में परिभाषित किया है– सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक। उन्होंने कहा कि हमारे देश में जाति व्यवस्था है। देश का विधि तंत्र सामाजिक न्याय की बात नहीं कर पा रहा है। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार श्री प्रदीप कुमार द्वारा व्यक्त किया गया।

23 फरवरी 2017 – संत गाड्गे जयंती

23 फरवरी 2017 को संत गाड्गे जयंती के अवसर पर "अनुसूचित जाति/जनजाति में सामाजिक गतिशीलता" विषय पर एक दिवसीय बौद्धिक परिचर्चा का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि प्रो. जे. पी. मिश्रा थे। अध्यक्षता डीन प्रो. सी.डो. नाईक ने की। शुभारंभ बाबासाहेब की प्रतिमा एवं संत गाड्गे के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलन द्वारा हुआ। मुख्य अतिथि श्री मिश्रा ने अपने उद्बोधन में कहा कि, स्वयं को पहचान कर समाज उपयोगी कार्य करने पर बल दिया जिससे समाज एवं मानव जाति का कल्याण हो। प्रो. नाईक ने अपने अध्यक्षीय उद्बाधन में कहा कि संत गाड्गे बाबा के दर्शन, विचारों की प्रासंगिकता, सामाजिक गतिशीलता पर दार्शनिक एवं समकालीन आयाम के आधार पर महत्वपूर्ण विचार रखे। प्रो. डी.के. वर्मा ने विषय की प्रासंगिकता, सामाजिक गतिशीलता के सिद्धांतों एवं प्रकारों पर तथ्यात्मक रुप से प्रकाश डाला और छात्रों

को इनके विषय पर शोध करने के लिये प्रेरित किया। कार्यक्रम में डॉ. अरूण कुमार, डॉ. आर.वी.एस. गौतम, विजेन्द्र गहलोत, रवि मेड़ा, नितिन लाहोरे ने भी अपने– अपने विचार रखे। कार्यक्रम का आभार एवं संचालन डॉ. धनराज डोंगरे द्वारा किया गया।

27 फरवरी 2017 – एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

विश्वविद्यालय की अम्बेडकर पीठ द्वारा "विकास का अधीनस्थवादी परिप्रेक्ष्य तथा डॉ. अम्बेडकर विचार" विषय पर दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गई। अध्यक्षता कुलपति डॉ.आर. एस. कुरील ने की। मुख्य अतिथि डॉ. एम.के. एस. मोरे प्रोफेसर डा. बाबा साहब अम्बेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय लखनऊ थे। विशेष अतिथि डॉ. प्रफुल्ल गढ़वाल, प्रोफेसर राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान उत्तराखंड थे। संगोष्ठी के संयोजक प्रो. सी.डी. नाईक ने संगोष्ठी के विषयपर प्रकाश डालते हुए विश्व विकास का जिक्र करते हुए मार्क्सवादी, यूरापीय देशों के बारे में बताया। डीन प्रो. जे.पी. मिश्रा द्वारा राष्ट्रीय संगोष्ठो में विकास का महत्व बतलाते हुए अनुसूचित जाति एवं जनजाति तथा पिछडा वर्ग पर जोर दिया एवं महिला सशक्तिकरण के महत्व को बताया। प्रो. आर.डी. मौर्य ने अपने उद्बोधन में सामाजिक, आर्थिक और सुसंगति का विस्तृत वर्णन किया। उन्होंने शोषित वर्ग की शैक्षणिक एवं दलित वर्ग की समस्याओं के बारे में बताया। डीन प्रो. डी.के. वर्मा ने अपने उद्बोधन में मार्क्सवादी दृष्टिकोण को बताया एवं गामीण समाज तथा भारतीय समाज का उल्लेख करते हुए साहित्य के पुनरावलोकन के बारे में बताया। मुख्य वक्ता प्रो. प्रफुल्ल गढ़पाल ने अम्बेडक द्वारा कमजोर वर्ग की भूमिका का जिक्र कर कहा कि कमजोर वर्गों का किस तरह से विकास किया जाये, इसका उल्लेख बाबा साहेब के चिंतन व मानवतावाद में झलकता है। मुख्य अतिथि प्रो. मोरे ने अपने उद्बोधन में विकास के अधिनस्थवादी दृष्टिकोण के अंतर्गत मार्क्स, काम्टे, एड्म स्मिथ आदि के दृष्टिकोण को समझाया। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार डीन एवं संयोजक प्रो. सी.डी. नाईक द्वारा किया गया।

28 फरवरी से 2 मार्च 2017 – पुलिस अधिकारियों की विशेष प्रशिक्षण कार्यशाला

विश्वविद्यालय द्वारा 28 फरवरी से 2 मार्च 2017 तक पुलिस अधिकारियों की विशेष प्रशिक्षण कार्यशाला का तृतीय चरण "समाज के कमजोर वर्गों के प्रति संवेदनशीलता" पर आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. पन्नालाल पूर्व अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक थे। अध्यक्षता कुलपति डॉ. आर.एस. कुरील ने की। विशिष्ट अतिथि श्री अनिल त्रिवेदी अधिवक्ता उच्च न्यायालय एवं मुख्य वक्ता डॉ. आर.के. श्रीवास्तव, ने अपने उद्बोधन में कहा कि पुलिस तथा समाज के मध्य मध्यस्थता हेतु अंतर संबंध बनाने वाली एक कड़ी की आवश्यकता है जिससे लोगों का विश्वास पुलिस पर कायम किया जा सके। कमजोर वर्गों की पुलिस को आवाज बनना चाहिये। मुख्य अतिथि डॉ. पन्नालाल ने कहा कि समाज में आज भी अस्पृश्यता मौजूद है। अत्याचार के कारण अनपढ़ के

साथ–साथ शिक्षित वर्ग भी पीड़ित होता है, जो एक मानसिकता पर आधारित अपराध है। विशिष्ट अतिथि श्री अनिल त्रिवेदी ने अने वक्तव्य में अनुसूचित जाति एवं जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम के बारे में विस्तृत चर्चा करते हुए समाज को समझने के लिये नये नजरिये की आवश्यकता को महत्वपूर्ण बताया।

मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए डॉ. आर. के. श्रीवास्तव ने कहा कि, म.प्र. के जिन जिलों में अत्याचार कम हुए हैं उनकों पुरस्कृत किया जाना चाहिये और जिन थाना क्षेत्रों में अत्याचार अधिक हुए हैं वहां और सतर्कता के साथ और अधिक संवेदनशील तरीके से कार्य करने की आवश्यकता है। एस पी अजाक इंदौर श्री मनोज श्रीवास्तव ने कहा कि समाज में कमजोर वर्ग जो कि अशिक्षित है वह आथिक रुप से कमजोर है पुलिस अधिकारियों को उनकी ओर ध्यान देना चाहिये और उनकी समस्यायें सुननी चाहिये। कुलसचि डॉ. बी. भारती ने कहा कि समाज में यह धारणा है कि पुलिस प्रशासन के द्वारा अनुसूचित जाति एवं जनजाति को संरक्षण मिलेगा क्योंकि उनके पास लॉ एंड आर्डर की शक्ति है। शुभारंभ सत्र का संचालन एवं आभार प्रो. आर. डी. मौर्य ने व्यक्त किया।

2 मार्च को तीन दिवसीय विशेष पुलिस कार्यशाला का समापन हुआ। समापन सत्र में मुख्य अतिथि केंद्रीय मंत्री माननीय डॉ. थावरचंद गेहलात थे। विशिष्ट अतिथि डॉ. एस.एल. थाउसन, अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (अजाक) म.प्र., श्री मनोज गोरकेला, सुप्रीम कोर्ट अधिवक्ता थे। अध्यक्षता कुलपति डॉ. आर.एस. कुरील ने की।

मुख्य अतिथि डॉ. गेहलोत ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश में संविधान लागू किया गया जिसमें सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक एवं शैक्षणिक विषमता दूर करने के प्रावधान किये गये। देश में अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विरुद्ध अत्याचार की घटनाओं को रोकने के लिए अनुसूचित जाति एवं जनजाति निवारण अधिनियम 1989 बनाया गया तथा इसे और कारगर बनाने के लिए 2016 में संशोधन किये गये हैं। विशिष्ट अतिथि डॉ. थाउसन ने कहा कि पीड़ित पर सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक कई प्रकार का दबाव होता है, यह बात वास्तव में सही है। कुलसचिव डॉ. बी. भारती ने कहा कि कोई भी राष्ट्र तब तक विकसित नही हो सकता जब तक कि उस देश के सभी नागरिकों को समान अधिकार प्राप्त न हो। हम किसी पद पर जाने से पहले मानव है। कार्यशाला के संयाजक प्रो. आर.डी. मौर्य ने कार्यशाला का विवरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि पीड़ित व्यक्ति को न्याय मिलना चाहिये और और अपराधी को दड मिलना चाहिये। कार्यशाला में म. प्र. राज्य के विभिन्न जिलों के पुलिस अधीक्षक, उप अधीक्षक, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एवं निरीक्षक स्तर के अधिकारियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण में भाग लेने वाले प्रशिक्षिणार्थियों को प्रमाणपत्र प्रदान किये एवं प्रशिक्षणार्थियों ने अपने अनुभव साझा किये। कार्यक्रम का संचालन प्रो. आर.डी. मौर्य ने किया। अभार प्रो. डी.के. वर्मा ने माना।

"समाज के कमजोर वर्गों के प्रति संवदेनशीलता" विषय पर मध्यप्रदेश पुलिस, अनुसूचित जाति कल्याण, भोपाल द्वारा प्रायोजित एवं डॉ. बी.आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, डॉ. अम्बेडकर

नगर(महू) म.प्र. द्वारा आयोजित तीन दिवसीय पुलिस प्रशिक्षण वर्ष 2016–17 में आयोजित प्रशिक्षण कार्यशाला का प्रतिवेदन।

प्रशिक्षण कार्यशाला के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए विशिष्ट अतिथि डॉ. एस.एल. थाउसन, अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक, अनुसूचित जाति कल्याण, म.प्र. शासन।

प्रशिक्षण कार्यशाला के समापन कार्यक्रम में अतिथियों के साथ प्रशिक्षणार्थियों के समूह फोटो।

वर्ष 2016–17 की प्रथम प्रशिक्षण कार्यशाला (30.01.2017 से 01.02.2017) विश्वविद्यालय द्वारा **"समाज के कमजोर वर्गो के प्रति संवेदनशीलता विषय पर म.प्र. पुलिस अधिकारियों की विशेष कार्यशाला"** का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति डॉ. आर. एस. कुरील ने की। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि माननीय पूर्व महानिदेशक म.प्र. पुलिस व पूर्व महानिदेशक बानीस श्री एस. के. दास थे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. एस.एल. थाउसन, भा.पु.से., अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक, अनुसूचित जाति कल्याण, म.प्र. शासन एवं सम्मानीय अतिथि एडवोकेट श्री अनिल त्रिवेदी थे। प्रशिक्षण कार्यशाला के संयोजक प्रो. आर.डी. मौर्य थे।

द्वितीय प्रशिक्षण कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति डॉ. आर. एस. कुरील, मुख्य अतिथि श्री आर.पी. सिंह, डीआईजी, इन्दौर रेंज व श्री एच.एन. मिश्रा, डीआईजी इन्दौर, कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. आर. आर. प्रसाद, सलाहकार, NIRD/PR हैदराबाद व कार्यशाला के संयोजक प्रो. आर.डी. मौर्य।

प्रशिक्षण कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्री आर.पी. सिंह, डीआईजी, इन्दौर रेंज।

वर्ष 2016–17 की द्वितीय प्रशिक्षण कार्यशाला (13.02.2017 से 15.03.2017) विश्वविद्यालय द्वारा **"समाज के कमजोर वर्गो के प्रति संवेदनशीलता विषय पर म.प्र. पुलिस अधिकारियों की विशेष कार्यशाला"** का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति डॉ. आर. एस. कुरील ने की। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि श्री आर.पी. सिंह, डीआईजी, इन्दौर रंज व श्री एच.एन. मिश्रा, डीआईजी

इन्दौर थे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. आर. आर. प्रसाद, सलाहकार, NIRD/PR हैदराबाद थे। प्रशिक्षण कार्यशाला की संक्षिप्त रुपरेखा का विवरण कार्यशाला के संयोजक प्रो. आर.डी. मौर्य ने प्रस्तुत की।

तृतीय प्रशिक्षण कार्यशाला समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय केन्द्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. थावरचंद गहलोत कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए।	**प्रशिक्षण कार्यशाला समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय डॉ. थावरचंद गहलोत का स्वागत करते हुए कार्यक्रम संयोजक प्रो. आर.डी. मौर्य।**

वर्ष 2016–17 की तृतीय प्रशिक्षण कार्यशाला (28.02.2017 से 02.03.2017) उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि डॉ. पन्नालाल, पूर्व आईजी, इन्दौर रेंज थे। कार्यक्रम के सम्मानीय अतिथि अनिल त्रिवेदी, हाई कोर्ट अधिवक्ता थे। मुख्य वक्ता डॉ. आर.के. श्रीवास्तव NIRD/PR हैदराबाद थे। कार्यक्रम समापन के मुख्य अतिथि माननीय डॉ. थावरचंद गहलोत थे। विशिष्ट अतिथि डॉ. एस.एल. थाउसन, अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (अ.जा.क.), म.प्र. व श्री मनोज गोरकेला, सुप्रीम कोर्ट अधिवक्ता थे। कार्यक्रम के समापन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति डॉ. आर.एस. कुरील ने करते हुए कहा कि पुलिस अधिकारियों को शोध के लिए विश्वविद्यालय हमेशा स्वागत है। प्रशिक्षण कार्यशाला के संयोजक प्रो. आर.डी. मौर्य थे।

प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय प्रशिक्षण कार्यशाला में कुल 105 पुलिस अधिकारियों द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त किया। अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विरूद्ध अत्याचार की घटनाओं को रोकने के लिये पुलिस अधिकारियों में कमजोर वर्गो के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने के उद्देश्य से आयोजित कार्यक्रमों में देश के ख्यातमान विषय विशेषज्ञ एवं जाने माने समाज शास्त्रीयों द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया। साथ ही विश्वविद्यालय के संकाय सदस्यों द्वारा भी सहयोग एवं अपने अनुभवों का लाभ प्रदान किया गया।

15 मार्च 2017– मान्यवर कांशीराम जयंती कार्यक्रम

विश्वविद्यालय द्वारा 15 मार्च 2017 को मान्यवर कांशीराम जयंती के अवसर पर एक दिवसीय परिचर्चा "सामाजिक अभियांत्रिकी और मान्यवर कांशीराम का जीवन दर्शन" विषय पर आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि, संकाय सदस्यों, समन्वयक एवं संयोजक की गौरवमयी उपस्थिति में भगवान बुद्ध, बाबा साहेब की प्रतिमा एवं मान्यवर कांशीरामजी के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलन द्वारा हुआ।

प्रो. डी.के. वर्मा ने परिचर्चा की संकल्पना एवं मान्यवर कांशीरामजी के योगदान को बताते को बताते हुए कहा कि सामाजिक अभियात्रिकी की संकल्पना, सिद्धांत एवं विशेषताओं पर प्रकाश डाला। कुलपति डॉ. कुरील ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि, कांशीराम जी एक लेखक, चिंतक, सफल राजनेता थे। उन्होंने बाबा साहेब के मिशन को आगे बढ़ाया और बहुजन समाज को सत्ता में पहुंचाकर बाबा साहेब के सपने को साकार किया। प्रो. सी. डी. नाईक न कहा कि मान्यवर कांशीरामजी का व्यक्तित्व सहज और सादगीपूर्ण था। उन्होंने देश के बहुजनों में नई चेतना का संचार किया। कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ. बी. भारती, प्रो. डी.के. वर्मा, प्रो. आर.डी मौर्य, प्रो. थंगराज ने भी अपने– विचार मान्यवर कांशीरामजी के जीवन दशन के विषय पर दिये। संचालन प्रो. डी.के. वर्मा ने किया। आभार प्रो. सी.डी. नाईक ने माना।

विश्वविद्यालय प्रकाशन

UNIVERSITY'S PUBLICATIONS:

S. No	Title of the Book/Articles/Journals	Name of the Author(s)/ Edited by Prof. C.D. Naik	Name of the Publisher, Year and Month of Publication	Price of the Book if any
1.	डॉ. आम्बेडकर सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका. Vol. XXIV, वर्ष 2016 (हिन्दी)	Edited	BRAUSS, 2015	Rs.100/-
2.	Ambedkar Journal of Social Development & Justice, Vol.XXIV, Year 2016 (English)	Edited	BRAUSS, 2015	Rs.100/-
3.	Dr. Ambedkar Memorial Lecture Part – II (pp. 1-180)	Author	BRAUSS, 2015	Rs.225/-
4.	Social Emancipation (pp. 1-232)	Author	BRAUSS, 2015	Rs.225/-
5.	Manual Scavenging (pp. 1-256)	Author	BRAUSS, 2015	Rs.225/-
6.	Symbol of Knowledge Dr. B.R. Ambedkar	Author	BRAUSS, 2015	Rs.500/-
7.	सामाजिक बौद्ध संदेश	Author	BRAUSS, 2015	Rs.750/-
8.	Ideology and Thoughts of Dr. B.R. Ambedkar : Contributions in Nation Building"	Author	Dr. Ambedkar Journal of Social Development and Justice, Vol. XXIII, 2015, pp. 1-8	Rs.100/-
9.	Model of Dalit Emancipation in India	Author	Dr. Ambedkar Journal of Social Development and Justice, Vol. XXIII, 2015, pp. 53-70	Rs.100/-
10.	Unemployment : Problem and Eradication in India	Author	Dr. Ambedkar Journal of Social Development and Justice, Vol. XXIII, 2015, pp. 142-153	Rs.100/-
11.	भारत में बाल श्रमिकों की स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन	Author	Dr. Ambedkar Samajik Vigyan Shodh Patrika, Vol. XXIII, 2015, pp. 125-131	Rs.100/-
12.	Dr. Ambdkar on Nation and Nationalism	Author	ed. by Dr. Pradeep Aglave, Professor Dr. Ambedkar Chair, R.T.M. Nagpur University, 2015 (pp. 83-90)	
13.	Reminiscences on Ven. Jhyanaratna	Author	ed. by Samyak Prakashan, New Delhi,2015 (pp.22-27)	Rs.20/-
14.	Impact of Ambedkarism on World	Author	Vishwa Leader,Mumbai, Jan. 2016 (P.9-12)	Rs.25/-

संकाय सदस्यों के अकादमिक एवं प्रशासनिक योगदान

Contribution of Faculty:
Prof. C.D. Naik :

1. Projects

Long term Projects submitted for approval of the Director of Dr. Ambedkar Foundation for Dr. Ambedkar Chair Professor at Dr. B. R. Ambedkar University of Social Sciences were as follows:

Title:

1. Synoprtic view of Dr. Babasaheb Ambedkar's Writings and speeches scattered across the 21 volumes published by Education Department, Government of Maharashtra, Mumbai
2. Transalations of Marathi journals/weeklies/fortnightlies launched by Dr. Ambedkar
3. Ambedkar A to Z an enclopaedia of thought and philosophy of Dr. B. R. Ambedkar

Project Director: C D Naik, BRAUSS

Sponsoring Agency: Dr. Ambedkar Chair, DAF/BRAUSS

Budget: ten to twenty lakh each project (tentative)

Objective: to study and present Dr. Ambedkar Thought and Philosophy fluently and lucidly in one place

Progress: The chair has fund for the project to the tune of Rs. 1.5 lakh, which can be utilized for the purpose with the permission of the BRAUSS competent authority

Recommendation: BRAUSS may permit to launch the above projects simultaneously

2. Supervision of M.Phil. and Ph.D. scholars

sn	M.Phil. scholars	Ph.D. Scholars
1	**Samoti Muzalda**, M.Phil., History Madhya Pradesh ke Dhar zile mein aitihasik paryatan sthal ke vikas ka vartman swarup ka adhyayan-Mandu ke vishesh sandarbh mein (2016)	**Dharmu Prasad Kushwah**, Economics, Garibi unmulan mein lakshit sarvajanik vitran pranali ki bhumika ka mulyankan – Madhya Pradesh ke satna zile ke sandarbh mein, 2017
	Objectives: to assess the present status of Mandu	**Objectives**: to analyse the public distribution system as a factor affecting poverty
	Hypotheses: there are more number of tourists visiting the site than earlier	**Hypotheses**: properly run pds can reduce poverty to some extent
	Findings: present status of the study area is better than earlier	**Findings**: targeted pds has potential to eliminate poverty
	Suggestions: however it can be improved further	**Suggestions**: pds should be targeted for this cause
2	**Anita Muvel**, Madhya Pradesh mein rashtriya gramin rojgar guarantee yojana ka kriyanvayan	**Ramavtar Saket**, Rashtriya Grameen Rojgar guarantee Yojana ka anusuchit jati krishak-majdoor

	tatha labharthiyon par prabhav: ek adhyayan (Madhya Pradesh ke Dhar Zille ke Manavar tehsil ke vishesh sandarbha mein) 2016 **Objectives**: to study the scheme and its impact on its beneficiaries **Hypotheses:** the scheme has positively helped to enhance opportunity of job for the beneficiary **Findings**: national rural employment guarantee scheme is not uniformly implemented to get the fruitful result **Suggestions**: It should be implemented honestly to reap the expected fruits of the same	hitgrahiyon ki arthik aur samajik sthiti par prabhav-mazgavan vikas khand, zila Satna, Madhya Pradesh ke vishesh sandarbha mein, 2017 **Objectives**: study the effect of the scheme on sc farmers and workers **Hypotheses:** the scheme has positive impact on the SC farmers and workers **Findings:** The scheme needs to be properly implemented for its purpose **Suggestions**: there is much to be desired in the implementation of the scheme
3	**Rakesh Kumar Satnami**, Anusuhit Jatiya Samudayon mein Rajnitik Chetna va shaikshanik vikas ka adhyayan- Madhya Pradesh ke satna zille ke vishesh sandarbh mein 2016 **Objectives**: to study the political consciousness and educational development of SC group **Hypotheses:** political consciousness led to educational development **Findings**: political consciousness partially led to educational development of the group concerned **Suggestions**: further improvement in the group's political awareness is desired.	**Varsha Gohil**, Domestic Violence: Causes and consequences (A Sociological Study of Ahmedabad city in Gujrat) 2016 **Objectives:** to study domestic violence in Ahmedabad city **Hypotheses**: life partner does not fall prey to domestic domination and cause violence Findings: In most cases life partner proved a weak factor **Suggestions**: inferior status of women in society has much to do with domestic violence
4	**Mahipal Chauhan**, Pol. Sci., Anusuchit Janjatiyon ki Panchayati raj mein bhagidari ka unke rajnitik netritva vikas par prabhav-Madhya Pradesh ke dhar zille ki Gandhvani tehsil ke vishesh sandarbh mein, 2016-17 **Objectives**: to study participation of STs in gandhvani panchayat **Hypotheses:** participation of STs in gandhvani	**Uttama**, Buddhist Studies, 2016-17 **Title:** A Study of Psycho-Ethical Aspect of Mind in Theravada Buddhism with special reference to San Chaung, Yangon, Myanmar **Objectives:** to study the psycho-ethical aspect of mind in Buddhism **Hypotheses:** there is applicable aspect of Buddhist

panchayata is active and satisfactory

Findings: it shows that STs have not actively and satisfactorily participated in Gandhvani tehsil

Suggestions: The ST members of the panchayata needs to be encouraged for more and more participation.

5 **Nanda Dodwe**, Economics, Sarvajanik Vitran Pranali ka Madhya Pradesh ke Anusuchit Janjatiya parivaron ki ajivika par prabhav ka ek adhyayan- Madhya Pradesh ke dhar Zille ki Manavar Vikas Khand ke vishesh sandarbh mein, 2016

Objectives: to study effect of pds on livelihoods of STs

Hypotheses: PDS has impact on livelihoods of STs

Findings: well implemented PDS affected livelihoods of STs of the stury area

Suggestions: Such PDS as enhancing livelihoods of STs be well established

6 **Sangeeta Dodwe**, Economics, Anusuchit janjati ke shaikshnik vikas par sarva shiksha abhiyan ke prabhav ka ek adhyayan- Madhya Pradesh ke Dhar Zille ke Manavar Tehsil ke vishesh sandarbh mein 2016

Objectives: to study effect of sarva shiksha abhiyan on STs educational development

Hypotheses: Sarvashiksha Abhiyan has impacted educational development of STs

Findings: SSA has positively contributed towards educational development of STs of the study area

Suggestions: sarva shiksha abhiyan should be seriously implemented to benefit STs

psycho-ethical teachings for society in our daily life

Findings: both sutamaya and bhavanamaya nana (knowledge) are to be differentiated and applied in practice

Suggestions: there is a need of right method to get the right result

Ashin Tay Za Ni Ya, Buddhist Studies, 2016-17

Title: An Analytical study of the four noble truths in Theravada budhism with special reference to Lammadaw township, yangon, Myanmar

Objectives: to study the four noble truths of Buddhism

Hypotheses: exact meaning of four noble truths is not settled in Buddhism

Findings: there is relationship between understanding four noble truths and studying saccavibhangasutta

Suggestions: highlighting some key aspects of saccavibhanga sutta will lead to clear grasp of four noble truths.

Sanadarwara, Buddhist Studies, 2016-17

Title: Realizing of right view in Theravada Buddhism with special reference to Lammadaw township, Yangon, Myanmar

Objectives: to study the right view deeply

Hypotheses: right view is important in development of human beings.

Findings: It is the highest wisdom which penetrates the intrinsic nature of mentality and materiality.

Suggestions: experience of noble fruition is another benefit of developing right view

educationally

7 **Santosh Kumar Verma**, Adim Jati Kalyan Vibhag ki Yojnaon ka Anusuchit Jatiyon ke vikas par Prabhav- Madhya Pradesh ke satana zille ke vishesh sandarbh mein, 2016-17

Objectives: to study ST welfare Deptt's schemes and their impact on development

Hypotheses: ST welfare Deptt schemes have impacted development of STs

Findings: STs were developed through schemes of ST Deptt's schemes

Suggestions: ST deptt's schemes should be strictly implemented for further development

8 **Jyoti Verma**, Social work, Kamjor vargon mein rashtriya kshay niyatran ke karyanvaan tatha is yojna ke antargat kshay rog ki roktham ke upayon ka adhyayan – Madhya Pradesh ke khargone zille ke vishesh sandarbh mein 2016-17

Objectives: to study eradication of tb through national scheme of tb control

Hypotheses: tb control among weaker sections has increased through national scheme of tb control

Findings: more tb control was found to be possible through national scheme of tb control

Suggestions: the national scheme should be promoted for the benefit of tuberculosis patients

9 Dharmendra Thakur, Krishi evam Pashupalan ke kary evam aay mein Gramin mahilayon ki bhagidari- Madhya Pradesh ke dhar zille ke Dharampuri Tehsil ke vishesh sandarbh mein 2016

Objectives: to study participation of women in

Aggavamsa, Buddhist Studies, 2016-17

Title: An analytical Study of the nature of the world in Buddhist view with special reference to Kyeemyindine Township, Yangon, Myanmar

Objectives: to find real refuge view for mankind

Hypotheses: world would become free of danger if every person behaves well.

Findings: see four noble truths to cut off cycle of rebirth

Suggestions:Buddhist philosophy is must for achieving real happiness

Jatila, Buddhist Studies, 2016-17

Title: The value of human life in Buddhism with special reference to Mottama(Mawlamyine) state of Mon, Myanmar

Objectives: to study human values and their socio-economic consequences

Hypotheses: there is relationship between human values and Buddhist teaching of insight, morality and concentration

Findings: such relationship will be established after study

Suggestions: Buddhist and human values are vitally important to attain both mundane and supramundane gains

agriculture and husbandry

Hypotheses: substantial participation of women is found to be extant in agriculture and animal husbandry in the study area

Findings: percentage of participation of rural women in agriculture and animal husbandry is more as per data of study area

Suggestions: more facilities should be provided for such productive rural women

10 **Itishree Choudhury**, Economics, Vulnerabilities and insecurities of Informal sector workers: A Case Study of Street Vendors of Twin Cities in Odisha(Cuttack and Bhubaneshwar), 2017

Objectives: to study vulnerabilities and insecurities of street vendors

Hypotheses: in Cuttack and Bhubaneshwar street vendors suffer loss from vulnerabilities and insecurities of their job

Findings: street vendors of the study area face more risks due to nature of their job

Suggestions: unorganized sector should be made more acceptable in terms of less risks and be eventually brought under organized sector

3. Other heads

Extension:

1. Attended interchair programme at iipa, new delhi, Shri J S Meena was addressing, then backward class development corporation manager‘s address followed on loan to safai karmachari, scs and skill development giving 100 crore rupees of loan which was properly utilized by south indian State, further session resumed in which experience was shared and presented, among the present invitees such as Prof. Aglave, Prof. Parashar, Prof. Sushma, and other chair professors except, patna and jaipur Chairs, meeting ended with vote of thanks,

Training:

1. Attended and addressed police training programme and its valedictory session at BRAUSS, on Sc and ST atrocity prevention act amended and its rules of 2015/16, where Professor Anand, JNU and Adv. Gaurkela addressed, police enjoyed entertainment evening facilitated

2. Chaired the two sessions of the workshop (1) on acquittal of cases and (2) on atrocity, prevention act as social act and (3) cast vote of thanks

Academic activities:

1. Worked on 125 national contributions of Dr. Ambedkar on his 125th birth anniversary celebrated at BRAUSS
2. gave tv interview to cnn,
3. Chaired Parag Abyankar's address at the function on **sant parampara and samarasta** at DAVV University Auditorium Hall, Indore with Manjit Singh Bhatia speaking on theme and the chair person concluding his address on samrasta, constitution, Ambedkar and Buddha,
4. conducted objective test for students for selecting candidates for Chair fellowship
5. exhibition organized and books displayed at programme at Rau as per directive of JS, DAF New Delhi
6. question paper setting for examinees in different subjects at 25 centres across India
7. concept of samajik vikas kendra corrected and admission in pali, and Buddhist studies and students for this session were sought
8. Corrected matter on samajik vikas Kendra.
9. Engaged common class on mon, tue and wed at 12.30 pm to 1.30 pm.,
10. Kabir jayanti at BRAUSS started under my chairmanship, presidential speech on Kabir with reference to Phule, Asoka, Buddha, Chandragupta delivered, programme ended with vote of thanks.
11. took up charge of social sciences, management and rural development
12. Commemorated Kargil victory day was chaired by Leutenant General Datar
13. prepared syllabus for edd and seep compulsory subjects for PG, M.Phil. and Ph.D.
14. rdc pre-registration for scholars with topic for doctoral work,
15. workshop on research problems, issues and research topic,
16. As chairman of the function of 108th ganeshotsava presented address and two songs on university and Buddha,
17. Corrected advertisement of Dr. Ambedkar Memorial award
18. Organized andhashraddha nirmulan programme through ringan play
19. Atended unveiling Lord Buddha statue at Buddha Vihara with chants of Pali gathas,
20. drafted 26th Nov. 16 Samvidhan diwas proceeding
21. Addressed students on observation and write up on science, technology, environment, weaker sections upto 400 words
22. prepared book on constitution day, essay completion and question-answer competition were held at BRAUSS
23. Worked on result of exam. at BRAUSS
24. Prepared notes on edd and seep, compulsory papers
25. Drafted content of Dr Ambedkar memorial volume part-ii along with vc's message, editor's preface, and contributors' profiles
26. Held programme on contributions towards nation
27. Engaged class from 10.30 to 11.30 am
28. Engaged in 125 contributions of Dr. B. R. Ambedkar as well as equal number of descriptions to mark Dr. Ambedkar's 125th birth anniversary

Seminars:

1. organized international seminar where Hon'ble Minister, Gyan Singh was chief guest, and introduced the theme, former DG Dr. Ramphal was present, VC from Bhoj Uni, Dr. Jafar addressed in the inaugural session, Bharat Uday stambh was inaugurated, post lunch session was chaired by self, research papers were presented on participation in decision making and nation building in this session, at valedictory session Shri I S Rao and Dr. Ramphal were guests and scholars received certificates
2. Organized seminar on Dr. Ambedkar's vision for economic development and empowerment
3. Addressed seminar on Dr B R Ambedkar's vision for water policy in which Delhi team of Prof. Sanghamitra, Prof. Muhmed, and Shri Gobinda arrived,
4. Teacher's day was coordinated with understanding of social exclusion and discrimination talk that I had delivered in the inaugural session, screening committee meeting was held after lunch and after celebrating teacher's day in the main building organized by registrar, where I addressed as chairman of the function and gave example of Satyendra Ray (for calcium phosphate) and his disciple Manvendranath bose (for being bsc and teaching MSc classes).
5. Delivered lecture at Christian Eminent College seminar, Indore during the period in question
6. Seminar on acquittal cases of M.P. began in main building conference hall and commented on Gujrat conviction rate and it resumed in the Buddha vihara, I chaired first and second sessions with other judges as guest speakers, thereafter further two sessions were conducted before valedictory session was held, employees including Anil, officers including dkv were awarded prize certificates with an award of rs. 2100 each,
7. Organized national seminar, which Hon'ble VC chaired, Prof. More as chief guest and Prof. Prafull as principal speaker, Prof. RD Maurya and Prof. Mishra participated, in first technical session, PhD scholars presented papers, Prof. More and Prof. Prafulla appreciated presentation, valedictory session was held in which certificates were distributed among those who were present, and seminar ended.
8. P. Sainath delivered Dr Babasaheb Ambedkar memorial lecture, followed by question and answer session, it was a live and inspiring occasion.

Symposiums:

1. organized programme of discussion on the theme "Our Duties towards our nation" at BRAUSS
2. Organized symposium on Dr. Ambedkar's Dhammakranti, Buddhism in world, chaired by VC, Bhante Chandima, Shri Yashpal, Arunkumar and Paramjit from outside and faculty and scholars of BRAUSS participated and addressed the gathering and read their papers, vote of thanks was cast by Shri Gondane, later report was flashed in the newspaper Dainik Bhaskar
3. organized Sardar Patel national integrity day and Indira Gandhi sankalp day at BRAUSS
4. Organized function on role of Dr. Ambedkar in the making of Constitution of India and other aspects of constitution, Hon'ble VC chaired, Shri Ravi Tripathi, Member, Law Commission and S S Upadhyaya delivered their addresses,
5. Organized symposium on State's fiduciary and administrative obligations and Dr. Ambedkar's Economic Thought at BRAUSS on 6th Dec. 2016
6. Organized education and skill development programme at the Buddha vihar, Shri Ashok Shah chaired, Shri Agrawal, an owner of the factory and other guest participated,
7. Vishwa samajik nyay diwas was organized
8. Organized birth anniversary of Gadge Baba at BRAUSS

Workshops:

1. Attended three-day workshop on understanding social exclusion and discrimination, Dr Afroz Ahmed was present at its technical session, workshop on research, synopsis preparation for rdc, second day of seminar, and Valedictory session of was over with VC chairing and casting vote of thanks
2. Chair lecture was organized, with the guest Hon'ble judge and advisor to his excellency the governor of UP, Shri S S Upadhyay
3. workshop on weaker section socio-economic development and Govt. policy, chaired by Hon'ble VC with chief guest Shri Tirkey, came to an end at BRAUSS
4. chaired the first session of workshop on sensitizing police officers towards sc/sts (prevention of atrocity) Act, after inauguration addressed by Anil Trivedi advocate, S K Das, Kureel and registrar, first session resource person was AJK Srivastav, RDM introduced and Chair concluded, and post lunch session started in which Parmar from Gujrat (who did his research on Prevention of atrocity Act) addressed in presence of Mishraji, then I chaired and Shukla addressed on clause 3(1) da and dha for lokdrshti, followed by question answer session including questions on social media giving indignified exposure about Ambedkar and hostile witness etc and they can be challenged further in higher court, workshop's second day started at 10.30 am, and Anand Kumar arrived and addressed for the first session of the day, VC chaired, and then Adv. Wankhede spoke and S P Meena chaired, thereafter Gondane chaired and Shobha Sudras spoke followed by Parashar, on workshop's final day, narendra kumar spoke and Srivastav intervened, vc chaired, valedictory session attended by faculty, and others including, reg and Narendra Kumar, certificates were distributed, one of their representative bearing sikha (topknot) spoke and appreciated the function,
5. Anusuchit jati and Anusuchit Janjati Atyachar Nirodhak Adhiniyam 1989 and new amended rules 2015 workshop for field officers, first and second session chaired by self from 11.30 am to 2 pm, attended workshop on sensitization of mp police officers, and cast a vote of thanks, and workshop ended for this day,

Administrative contributions:

1. As an expert suggested corrections in murals installed at Janmasthali by the artist Shri Prabhat Rai
2. attended meeting for discussion on 14th April jayanti, international seminar and putting exhibition,
3. attending community programme at Indore with vc
4. engaged in land grant paper work at collectorate, Umariya for BRAUSS
5. As kendradhyaksha conducted brauss exams with other assisting staff during April 28 to May 10 in both shifts,
6. meeting with collector on management on janmasthali on occasion of 14th April Jayanti of Dr. B. R. Ambedkar
7. all the documents of chair progress since 2011 till the present, were despatched from our office to DAF, New Delhi,
8. Conducted entrance examination for centres in all India for the session 2016-17
9. Prepared subject and three expert with contact details, and meeting was held among faculty members on result and starting mba and PhD in management,
10. entrance exam in 25 exam centres across India reduced to seven centres, teams with material requisites were sent to different centres by taxis as time was short and exam was conducted in the morning from 10 am to 12 pm and from 2 pm to 4 pm in the afternoon,
11. Signed rajiv gandhi fellowship forms of students, kept bundle of answer sheets from centres in office custody, filled answer keys in orm sheet and answer sheets evaluated,
12. Assumed charge of registrar during the absence of Dr. Parikshit Singh,

13. attended Meeting of expert committee at DAF, 15 Janpath, New Delhi
14. Dr. Ambedkar Chair report (annual) and power point presentation made at the meeting on 1st august in New Delhi
15. installed lion capital on 125 contribution Bharat Uday pillar by crane and rods are to be fixed to consolidate it further
16. sthapana diwas programme was organized at Buddha vihara, chaired by Vc, under my coordination, schoolwise exhibition was put up, kaushalendra and others presented schoolwise report of annual progress, VC was felicitated and given sammanpatra
17. Organized independence day programme and flag hoisting by vc, thereafter seminar continued, with valedictory session concluding,
18. meeting was called by vc on deciding deans' power, supervisor, screening committee for recruitment of faculty
19. Meeting with registrar on issuing validated result of msw, m.phil, and Ph.D. at Brauss,

20 Attended meeting of executive council, and academic council

20. Assumed charge of Vice Chancellor during regular VC's leaves through Governor House on 27th October, 2016 till his return
21. prepared content for ordinance 4 and subtitles for ordinance 5
22. prepared matter to go on the constitution pillar, put award matter on site,
23. meeting to review convocation programme, attended,
24. Attended meeting with reg regarding convocation review meeting
25. Attended ec meeting and Ac meeting in which budget of rs. 12 lakh and kulageeta were passed,
26. Governor arrived at 10 am preceded by Gahlot and Buddha statue was unveiled, at 10 am, Buddha vihara and statue unveiling was finished, putting (gown) on, read out my part on the stage for calling atp students and read out five lines as specified in convocation and went back to my seat, listened to the Kulageet presented, Shri Gahlot, Governor (Shri O P Kohli), and Shah addressed, youth meet continued, convocation ended at 12p.m.
27. RepresentedJanuary 21 and 22 two days non-payment of salary of self,
28. Started iind sem exam
29. EC meeting
30. Arranged mte result to be schoolwise and classwise
31. , engaged in result,
32. Meeting with Vc on seminar on 26-27 on constitution of India and Social Justice with (on 26.1.17) first panel on provisions for social justice in constitution of India, background, implementation and priorities, second panel on social emancipation of SCs and STs and social justice, opportunities and challenges, (on 27.1.17) third panel on Implementation and effectiveness of SC and ST (Prevention of Atrocities) Act 1989 and fourth panel on Perspective, Strategic and Action Plan for social emancipation, social justice as well as total development.
33. In the meeting reservation, roaster and calculation thereof were discussed and demonstrated by VC giving examples of 100, 10, 6 and 4 respectively,
34. flag hoisting followed by national anthem and distribution of sweet balls,
35. engaged in result of 2nd sem 16
36. worked on mid term result
37. meeting was held to decide lower limit for admitting students for 1st sem exam and 45 per cent was set as lowest limit, meeting over,
38. assigned duties of team members for 3rd day first sem exam,

39. Meeting at collector's office at 3 pm materialized
40. Attended meeting, decision was taken to cancel exam for those who had less than 75 per cent attendance,

4. **Publication of books, titles and prices**

1. Published Dr Ambedkar Memorial Lectures, Vol. II, Shri Parasmani Printers, Indore BRAUSS Publication, Rs. 280/-
2. Vishwa leader special issue of 14th April Mumbai published articles, 2016
3. Samajik Bouddha Sandesh, Madhyam, Bhopal, Rs. 350
4. Published introduction to the book by Prafull Gadpal, Sanskrit writer in Deemed Sanskrit university, New Delhi
5. Published article on reservation, BRAUSS journal English 2016
6. A Way to Educative Democracy published at Madhyam, Bhopal by BRAUSS
7. BRAUSS journals under publication at Madhyam Bhopal
8. BRAUSS journals published at Madhyam, Bhopal by BRAUSS
9. Rehearsal of convocation took place, it is to be organized again,
10. Heard kulageeeta, its first refrain (stable line) is going well, but there is problem in other stanzas,
11. Published globalization and Ambedkar thought in BRAUSS Journal, English

Prof. D.K. Verma, Professor.

1. ***University Designated Post and Executive Nominations under BRAUSS ACT 2015***

1.1 **Regular Post: Professor**

1.2 **Director –** Research, Extension and Training

1.3 **Dean**- School of Law and Social Justice

1.4 **Dean** -School of Education and Skill Development

1.5 **Member**- Finance Committee

1.6 **Member**- Academic Council

1.7 **Member**- Executive Council

1.8 **Member**- Governing Body

1.9 **Convenor**- Dean Committee

Other Administrative & Academic Assignments

1.10 Editor - University News Letter

1.11 Chairman- Result Committee

1.12 Dean School- Assignments to Faculty and Staff

1.13 Chairman- Purchase Committee

1.14 Convenor- BRAUSS National Seminar

1.15 Convenor- BRAUSS Vision 2050

1.16 Chairperson- Result Committee

1.17 Prepared proposal for making BRAUSS a Central University

1.18 Prepared proposal for TAC and National Youth Meet

1.19 Chaired various administrative committees

1.20 Research Supervisor M Phil Dissertations

1.21 Research Supervisor Ph.D. Theses

1.22 Project Director- Research Projects

1.23 Convenor –Symposium

1.24 Course Director- Research Methodology Courses

1.25 Convenor- Workshop

1.26 Chairperson - Drafting Committee- Statutes, Regulations and Ordinances

1.27 Course In charge- RMS, CAIT, ICSC

1.28 Chairperson- Syllabus Committees

1.29 Chairperson- Research Advisory Committees

1.30 Chairperson- Staff Promotion Committees

2. ***Academic Assignments and Workload***

2.1 **Teaching and Research:**

SN	Course/Paper in Class	Level	Mode of Teaching *	Hours per week (C)
1.	Research Methodology	Ph.D. M.Phil.	L, S, T and P	10
2.	Research Methodology	PG Classes	L	1
3.	Computer & SPSS	Ph.D. M.Phil	L, P	3
4.	Computer Applications	PG	L, P	3
5.	Indian Constitution and Social Change	Ph.D. M.Phil	L	2
6.	Supervision of theses	Ph. D., M.Phil.	guidance checking	10
			TOTAL	29 hrs /week
7.	Research projects			12 Hrs/week
8.	School Administrative Works			10 Hrs/week
9.	Supporting Administration			20 Hrs/week
10.	Meetings /Committees			6 Hrs/week
11.	University Work at Home			20 Hrs/week
	Working on all 7 days of week TOTAL **97** Hrs /week			

*Lecture (L), Seminars (S), Tutorials (T), Practical (P), Time Table & Average Actual Hours engaged (C)

2.2 **Course In charge, Paper Code and Credits**

Ph.D. Level : Compulsory Papers

- Research Methodology & Statistics (RMS) Code 711 (2+1 Credits)
- Indian Constitution & Social Change (ICSC) Code 711 (2+0 Credits)

- Computer Applications & Information Technology (CAIT) Code 711 (1+1 Credits)

M.Phil. and PG Level: Compulsory Papers

- Research Methodology & Statistics (RMS) Code 511 (2+1 Credits)
- Indian Constitution & Social Change (ICSC) Code 511 (2+0 Credits)
- Computer Applications & Information Technology (CAIT) Code 511 (1+1 Credits)

2.3 **Research Guidance Common Classes**

- Literature Review (LR)
- Research Tools (R-Tools)
- Pilot Study (PS), Seminars & Mid Term Assignments, Anti-Plagiarism
- Field Work (0+3 Credits)
- Tabulation & Compilation of Data (0+3)
- Content Analysis & Chapterisation (0+3 Credits)
- Presentation of Research Findings (1+0 Credits)
- Presentation Thesis - Pre-submission (1+0)
- Thesis Writing & Submission (0+8 Credits)

3. ***Research Projects***

3.1 # On-going Research Project

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम 1989 का दोषमुक्ति कारणों के संदर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रायोजक– मध्यप्रदेश शासन, अनुसूचित जाति विकास विभाग।

रिसर्च प्रोजेक्ट कार्य प्रगति – मध्यप्रदेश के 15 जिलों में फील्डवर्क पूर्ण किया गया।

3.2 Research Project Proposals drafted and submitted

Denotified, Nomadic and Semi-Nomadic Tribes (DNTs)

शोध परियोजना का शीर्षक

1 मध्यप्रदेश में अनुसूचित जाति अधोसंरचनात्मक विकास योजनाओं की संकल्पना, नियोजन तथा क्रियान्वयन

2 डॉ. अम्बेडकर के विचार एवं दर्शन के प्रति भारतीय समाज में जागरुकता और अनुसूचित जातियों के विकास पर प्रभाव

3 मध्यप्रदेश में अनुसूचित जाति बस्ती विकास योजना का समाजिक–पारिस्थितिकीय रहन सहन पर प्रभाव

4 मध्यप्रदेश में अनुसूचित जाति महिलाओं पर अत्याचारों की प्रकृति एवं कारणों का अघ्ययन

5 मध्यप्रदेश में अनुसूचित जाति एवं जनजाति कर्मचारी संगठन की संरचना एवं भूमिका का अघ्ययन

6 मध्यप्रदेश में अनुसूचित जातियों के श्रमिकों एवं खेतिहीन मजदूरों की सामाजिक–आर्थिक प्रस्थितियों का अघ्ययन

7 मध्यप्रदेश में अनुसूचित जातियों के विकास हेतु वित्तीय नियोजन का अघ्ययन

8 अनुसूचित जातियों के छात्र–छात्राओं के कैरियर सम्बन्धी विविध प्रशिक्षण/प्रोत्साहन योजनाओं का मूल्यांकन अध्ययन

9 मध्यप्रदेश में अनुसूचित जातियों के शैक्षणिक विकास योजनाओं का मूल्यांकन अध्ययन

10 मध्यप्रदेश में अनुसूचित जातियों के लिए उच्च शिक्षा एवं विदेश में अध्ययन हेतु छात्रवृति योजना का मूल्यांकन

11 मध्यप्रदेश में अनुसूचित जाति छात्रावास और आश्रम शालाएं योजनाओं का मूल्यांकन अध्ययन

12 मध्यप्रदेश राज्य सहकारी अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम की आर्थिक विकास योजनाओं का मूल्यांकन अध्ययन

13 मध्यप्रदेश शासन की सामाजिक समरसता निर्माण और सामाजिक न्याय अभिनव योजनाओं का मूल्यांकन अध्ययन

14 मध्यप्रदेश शासन की अनुसूचित जाति के छात्र व छात्राओं के लिए राज्य छात्रवृत्ति योजनाओं का मूल्यांकन अध्ययन

15 मध्यप्रदेश शासन की अस्वच्छ धंधों में लगे परिवारों के बच्चों के लिये विशेष योजनाओं का मूल्यांकन अध्ययन

4. Date wise University Academic Activities/ Administrative Assignments during 2016-17:

SN	Date	Month	Year	Event	Prof. D.K. Verma Role	Theme/ Activity
1	5	Apr	2016	Babu Jagjivanram Jayanti	Special Address	Babu Jagjivanram Contributions in Defence and Agricultural Development
2	14	Apr	2016	International Conference	Convenor	Globalization of Dr. Ambedkar Thoughts & Philosophy
3	24	May	2016	Meeting	Member	IV AC Academic Council
4	26	May	2016	Meeting	Member	III EC Executive Council
5	27	May	2016	Policy	Convenor	Questions for SC Development Policy
6	29	May	2016	SVK Folder	Drafted	Samajik Vigyan Kendra
7	4	Jun	2016	Syllabus Board Meeting	Chairperson	Drafted syllabus Law
8	4	Jun	2016	Syllabus Board Meeting	Chairperson	Management Studies
9	4	Jun	2016	Syllabus Board Meeting	Chairperson	Journalism and Mass Communication
10	4	Jun	2016	Syllabus Board Meeting	Chairperson	Education
11	4	Jun	2016	Syllabus Board Meeting	Chairperson	Library Sciences
12	4	Jun	2016	Syllabus Board Meeting	Chairperson	Credits or Courses
13	10	Jun	2016	National Research Workshop	Convenor	Roadmap for overall development of Scheduled Castes in Madhya Pradesh
14	23	Jun	2016	Governing Body Meeting	Member	MPISSR
15	28	Jul	2016	MOU	Drafted	with Jiwaji University, Gwalior
16	8	Aug	2016	Meeting	Drafted	Academic Council agenda priorities
17	13	Aug	2016	BRAUSS Folder	Drafted	Information Brochure
18	14	Aug	2016	Foundation Day	Convenor	Exhibition - Making of University
19	14	Aug	2016	Foundation Day	Convenor	Plantation
20	14	Aug	2016	Foundation Day	Convenor	Bhim-o-utsav
21	5	Sept	2016	Teacher's Day	Invited	Felicitated
22	7	Sept	2016	Workshop on Research Methodology	Resource Person	Indian Institute of Dalit Studies, New Delhi
23		Sept	2016	Symposium	Chairperson	Social Justice and Social Harmony: Dr. Ambedkar Vision
24	26	Sept	2016	Meeting	Member	VI Academic Council
25	27	Sept	2016	Meeting	Member	IV Executive Council

26	12	Oct	2016	Address	Drafted	Chancellor Address for Convocation
27	10	Oct	2016	Ordinance Drafting Committee	Chairperson	Convocation
28	12	Oct	2016	Convocation	Drafted	VC Address
29	14	Oct	2016	Symposium	Address	Scientific Truths
30	6	Nov	2016	Symposium	Convenor	National Unity and Integrity
31	18	Nov	2016	Youth Meet	Convenor	National Youth Meet
32	19	Nov	2016	Eco-media	Convenor	Eco- Media Lab on the theme "Youth for Scientific Temper, Ecological Duties & Justice"
33	17	Nov	2016	Swastha Mission	Convenor	Swachtha Pakhwara
34	19	Nov	2016	Convocation	Convenor	BRAUSS First Convocation
35	21	Nov	2016	Workshop on Research Methodology and Data Analysis	Chief Guest Resource Person	Research Fundamentals: philosophy, methodology and measurement. MPISSR
36	6	Dec	2016	Symposium	Concept Paper	Financial and Administrative Responsibilities of State and Dr. Ambedkar Thought
37	19	Dec	2016	Orientation Programme	Chief Guest	Social Sciences for SC/ST/OBC and Women Research Scholars
38	24	Dec	2016	statute Drafting Committee	Chairperson	1. Statute: One- Schools of the University
39	24	Dec	2016	statute Drafting Committee	Chairperson	2. Statute: Two- Governing Body of the University
40	24	Dec	2016	statute Drafting Committee	Chairperson	3. Statute: Three- Executive Council of the University
41	24	Dec	2016	statute Drafting Committee	Chairperson	4. Statute: Four- Academic Council of the University
42	24	Dec	2016	statute Drafting Committee	Chairperson	5. Statute: Five- Finance Committee of the University
43	24	Dec	2016	statute Drafting Committee	Chairperson	6. Statute: Six- Vice Chancellor: Powers and Functions
44	24	Dec	2016	statute Drafting Committee	Chairperson	7. Statute: Seven- Directorates of the University
45	24	Dec	2016	Regulations Drafting Committee	Chairperson	8. Regulations- II: Powers and Duties of Officers of University
46	24	Dec	2016	Regulations Drafting Committee	Chairperson	9. Regulations- III: University Administration and Proceedings
47	24	Dec	2016	Regulations Drafting Committee	Chairperson	10. Regulations III: Financial Code and Proceedings
48	24	Dec	2016	Regulations Drafting Committee	Chairperson	11. Regulations IV: Anti-Ragging, Anti-Sexual Harassment and Prevention of Atrocities
49	24	Dec	2016	Ordinance Drafting	Chairperson	12. Ordinance Seven: M.Phil and Ph.D.

				Committee		Programmes
50	24	Dec	2016	Ordinance Drafting Committee	Chairperson	13. Ordinance Eight: Board of Studies
51	24	Dec	2016	Ordinance Drafting Committee	Chairperson	14. Ordinance Nine: Departments and Subjects of the University
52	1	Jan	2017	Proposal	Drafted	Integrated Development of SCs in MP Commissioner, SC Welfare, Bhopal
53	3	Jan	2017	Symposium	Convenor	"Empowerment of SC, ST & OBC Women"
54	6	Jan	2017	Meeting	Member	Governing Body meeting. MPISSR
55	13	Jan	2017	National symposium	Convenor	Policy Research and Planning for Socio-economic Development and Educational Excellence of Scs & Sts.
56	27	Jan	2017	National Seminar	Convenor	National Seminar on the theme "Constitution of India and Social Justice"
57	3	Feb	2017	National Seminar	Chief Guest	Climatic Change, Weather Variability and its Impact on Human Life: Challenges and Strategies in Contemporary India MPISSR
58	12	Feb	2017	Training of Officers and Field Staff of SC Welfare Department	Convenor	New Amendments in the SC & ST (Prevention of Atrocities) Act, 2016
59	15	Feb	2017	National Seminar	Chief Guest-valedictory session	*Agrarian Crisis in Rural India: Issues and Challenges, MPISSR*
60	8	Mar	2017	MOU	Drafted	Infantry School
61	22	Mar	2017	National Seminar	Keynote address	Social Policy and Dr. Ambedkar Ideology. Acharya Nagarjuna University (ANU) Guntur, Andhra Pradesh

Dr. Manisha Saxena

1. Conferences/seminars/symposium organized/attendant/participated :

- Contribution on nation building: babu jagjiwan ram, AP16.
- Orientation programme, workshop, ICSSR funded 25-28 Ap 2016.
- Babu Jagjivan ram Jayanti, Seminar, AP 2016.
- Educational institute information management system,May16
- How to reach online application-online,MP..2016.
- Yaad karo kurbani, Aug16.
- Role of judiciary in poverty human rights, 2016.
- Eco-media youth meet,co-conviner,2016
- Understanding social exclusion and decimation –methodological issue, issues funded by IIDS, New Delhi .sep16.
- Conventional ceremony, Nov16.
- Scientific true: for are a buddism.dhamm chakra diwas celebration one day seminar Oct 2016
- Technical advisory committee, Nov16.
- Maha parinirman diwas,Dec16.
- Crop policy national, workshop , 2016.
- Science , Social science and Budhism, Disscussion ,2016.
- मैला धोने की सामाजिक कुप्रथा का उन्मूलन के अवसर एवं चुनोतिया: lecture delivered by bindeshwari pathak, May 2016.
- Research Advisory committee, expert workshop for scholars, 2016.
- Review, workshop for PhD scholar, 2016
- Educational institute information management system,May16
- How to reach online application-online, MP..2016.
- Yaad karo kurbani, Aug 2016
- Role of judiciary in poverty ; human rights,2016.
- Eco-media & youth meet,co-conviner,2016
- Understanding social exclusion and decimation –methodological issue, issues funded by IIDS, New Delhi .sep16.

- Conventional ceremony, Nov16.
- Scientific true: for are a Buddhism. dhamm chakra diwas celebration, One day seminar Oct2016
- Technical advisory committee, Nov16.
- Maha parinirman diwas, Dec16.
- One day symposium " Empowerment of SC, ST,OBC and women "on savitri bai phule jayanti , jan 03, 2017.
- One day workshop on " वंचित वर्गों के सामाजिक तथा शैक्षणिक उत्क्रष्टता हेतु नीतिगत अनुशंसाए एवं नियोजक , विश्वविद्यालय अधिनियम दिवस , 13 jan 2017 at Brauss.
- समाज के कमजोर वर्गों के प्रति संवेदनशीलता पर पुलिस अधिकारियो की प्रशिक्षण workshop (30 jan -1 feb 17) for venue Incharge .

2. Research Affiliation: PhD/ Mphil program-

S.no	No of Enrollment	Thesis Submitted	Degree Award
Mphil	09	Work going on	To be June, 2017
PhD	03	02	To be awarded next few month

3. Ph.D . 11 (Developing thesis under Supervision with status report):

4.

S.no	Name of Scholars	Fellowship	Guide/Co-Guide	Result
1	Chaina trivedi	-	Guide	Awarded
2	Deepali Nigam	-	Guide	Awarded
3	Vijay Gonekar	RGNF	Co-Guide	,,
4	Versha Patel	BANISS	Guide	,,
5	Krisnalata Yadav	-	Guide	,,
6	Amrita Brahmne	RGNF	Guide	Submitted
7	Savita Dawar	RGNF	Guide	,,

8	Sangeeta Kanesh	RGNF	Guide	Work on going

5. M.phil Dissertation 2016 :-- Total 09

S.no	Research Scholar
1	Babita Raghuvanshi
2	Anil Arya
3	Sohan Dawar
4	Rakesh Manua
5	Rajesh Verma
6	Yakshendra singh
7	Kharksingh Dudwe
8	Ramesh Babor
9	Sobhag singh Sisodiya

6. Term Paper Supervised : Seven Scholars (2016)

7. Publications: research Papers

1. 1.Manisha Saxena (2016): Socio-Economic and Political Development for Indian women (with special reference to women empowerment meet), PPI-13; Journal of Advances and Scholarly researches in Allied Education, Vol XI, issue-XXI, ISSN no-2280-7540 , An April 16,Internationally indexed peer reviewed & referred journal,
2. Manisha Saxena (2016): मध्यप्रदेश की जनजातिया/महिलाओं की स्थिति, पृष्ठ 112–117, ग्रामीण समाज और संचार, ए. एम. एस. पब्लिकेशन, इंदौर, ISBN 978-81-901311-8-4
3. Manisha Saxena (2016): Social, Environmental and health issues of widows: status and policies, PP 1-6 : International Journal of Information Technology and Management- Vol X Issues- XV, ISBN- 2249-4510 may 2016, www.ignited.in An internationaly indexed peer Reviewed & refereed jour.
4. Manisha Saxena (2016): दिव्यांगो के प्रति परिवार तथा समाज का दृष्टिकोण एवं सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन, PP2016-2017 ; नवीन शोध संसार, An International refereed res. Jr, Vol-II, ISSN 2320-8767, E-ISSN 2394-3793, July – sept 2016 www.nssresearchjounrnal.com

5. Manisha Saxena (May, 2016): कृषि आधुनिकीकरण का पर्यावरण पर प्रभाव; पृष्ठ 16–27,: भारतीय कृषिः चुनौती एवं सम्भावनाएं, ए.एम.एस. पब्लिकेशन, इंदौर, ISBN 978-15-41264-29-8 may, 2016.
6. Manisha Saxena (2016): जनजातिय महिलाओं में परिवार नियोजन की स्थिति तथा आर्थिक प्रभाव का अध्ययन, पृष्ठ 40–48: अनुसूचित जाति व जनजाति के बदलते आयाम, ए.एम.एस. पब्लिकेशन, इंदौर, ISBN 978-15-41264-67-0
7. Manisha Saxena (2016): Education Advancement of Dalits, PP23-25 (3); Multidisciplinary Academic research, Jr of Advanced and scholarly research in Allied education Vol II, Issue 22, ISSN-2230-7540 july 16 ,www.ignited.in
8. Manisha Saxena (Oct, 2016): दिव्यांगों के शैक्षणिक उत्थान हेतू शासकीय योजनाओं की भूमिका, PP 125-132 The International Research jr of Social Sciences & Humanities, Vol-5, ISSN 2320-4702, www.thegass.org.in
9. Manisha Saxena (Oct, 2016): अनुसूचित जनजातियों में उपलब्ध स्वास्थ्य योजनाओं का मूल्यांकन, PP 44-48, नटराज सार्थक संकेत, समाज विज्ञान शोध पत्रिका, Vol-15, ISSN 2320-0480,
1. Manisha Saxena (Nov, 2016): Human Traffiking Problem in India, PP 124-133, souvenier, 1st Convocation, स्मारिका- 2016 ISBN -978-9384953-07-2, www.brauss.in
2. Manisha Saxena (April, 2016): डॉ. अम्बेडकरः महिलावाद के प्रणेता पृष्ठ 4 व 5, बाबा साहेब का संदेश, स्मारिका, IDC/MP/76/2015-17,RN, 67723/97

8. Resource Person/ Paper Presented/ Lectures Delivered:

1. Manisha Saxena (Apr,2016): Participated & Paper presented on "A study of malnutrition in middle school age group children (11-15) among Korku tribe" in international seminar on globalization of Dr. Ambedkar's thoughts & philosophy, at Brauss, Dr. Ambedkar Nagar.
2. Manisha Saxena (April, 2016): Co-chairperson in the session IV of international seminar on globalization of Dr. Ambedkar's thoughts & philosophy, at Brauss, Dr. Ambedkar Nagar.
3. Manisha Saxena (Sep, 2016): Presented paper on Education Advancement & schedule tribe boys & girls: with special reference to Madhya Pradesh"National seminar on first University of social sciences: vision for socio-Economic revolution, brauss, Dr. Ambedkar Nagar.
4. Manisha Saxena (Dec, 2016): किशोरी स्वास्थ्य/विशेष व्याख्यान, शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन, मध्यप्रदेश

9. Teaching, Learning and Evaluation Related Activities--

(1). Lecturers, Seminars, Tutorials, Practical's, Contact Hours:

S.no	Course Paper & Year	Level	Mode of Teaching	Hours Allotted per day	% of Classes Taken as per Documental Record
01	Research methodology	M.Phil/ph.D	L.S.T. and Demonstration	2	100%
02	School of Education & Skill development(Human development)	M.Phil/ph.D	L.S.T and Demonstration	2	100%
03	Rural Development	PG	Lecturer.	1	100%
04	MSW	PG	L.S.T	1	100%
05	Practical	UG, PG, ph.d	P	-	100%
06	Indian Constitution And Social Changes	M.Phil/ ph.D	Lecturer/Tutorials	01	100%
07	Assignment/Seminars	PG/M.phil/Ph.D	L.T	02	100%
08	Research Guidance/Supervision	m.sc./Mphil/Ph.D	L.T.	02	100%
	Total Classes/Per week			11*05=55	100%

10. Use of participatory and inventive, Teaching-Learning methodology, Updating of subjects-Content, Course improvement etc.:---

S.no	Particular
01	Develop Course content, Syllabus , updating of subject Library and Information Science(PG/PhD) /Human Development(Mphil/Ph.D) /Mass communication (Ph.D)Education Ph.D etc.

02	Special course syllabus developed and improvement for improvement of the university core subject ESA for Ph.D & WECP for Ph.D in year 2016 -17
03	Developed and Guided synopsis for Ph.D Scholars for Fellowship and 10 for M.Phil and atleast 30 synopsis of different social science subject (interdisciplinary)in the year 2016-17.
04	Developed Course Material and provide to the scholars.
05	RAC organized for 35 scholars of the schools & involved 50 Ph.D , MPhill as member , 2016-17
06	Counseling Jan 17.

9. Examination duties assigned and performed:--

S.No	Type of Exam Duties	Duties Assigned	Extend to Which carried out (%)
01	Examination Coordinators	Conduct Mid Term Examination of M.Phil/PhD.& practiacls	100%
02	Examination on special Duties	Flying Squad Committee	100%
03	Examination Associated superintendent	Conduct or university exam mid Term and semester.	100%
04	Paper Setter	Human Development, Nutrition,RMS	100%
05	Evaluator	Human Development, RMS, (All Copies for common subject)	100%
06	Exam Center Duties allotment.	Coordinated all center for Entrance test	100%

10. Co-curricular, extension, professional development related activities:

s.no	Type of activity
01	National level Exhibition organized incharge. april 2016 and august 16.
02	National level Gramin mela organized, incharge,april 2016
03	Cultural activity incharge april 2016, sept 2016 ,dec 2016
04	Swatch bharat abhiyan-coordinated ,2016
05	Scientific meet & eco media, coordinator 2016
06	Academic council, member, 2016.
07	As a member of Library committee 2016 and worked for the books and journals new arrivals, list prepare for the schools.

11.Administrative support:

All type of departmental work, files presentation coordination with student's coordination with visiting faculty, typing and other work completed for the department as well as schools. All administrative work done given by vice chancellor time to time.

Shri Pradeep Kumar, Assistant Professor

Academic activity:

1. I performed the duties as teaching in B.A. Social Science, M.A., M.Phil. & Ph.D. classes of Sociology, paper setting, conducting mid-term examination, Invigilation, Assistant exam superintendent, evaluation of answer books and extension work etc.
2. I have prepared the syllabus of Sociology for M.A. & M.Phil. On the basis of the syllabus of Indian Civil Services & U.G.C.-NET.
3. I am working as Assistant Editor of Ambedkar Journal of Social Development and Justice, ISSN: 0973-6646.
4. I am working as a member of Editorial Board in Dr. Ambedkar Samajik Vigyan Sodh Patrika, ISSN: 0973-6654.
5. Associate Editor in First Convocation Souvenir (ISBN978-84953-07-2) of Dr. B. R. Ambedkar University of Social Sciences, Dr. Ambedkar Nagar (Mhow), Indore (M.P.).

Extension Activity:

Consultant / Mentor of students of the School of Social Science & Management Studies and School of Law & Social Justice and Education of the session-2016-17.

Seminars/Conferences/Workshops:

A. Organized/Conducted :

1. I have conducted one day Seminar on the occasion of Babu Jagjivan Ram Jayanti on 5th April, 2016 at Dr. B. R. Ambedkar University of Social Sciences, Dr. Ambedkar Nagar (Mhow), Indore (M.P.).
2. I have conducted two days International Conference entitled, "Globalization of Dr. Ambedkar Thoughts & Philosophy", and also performed the duty as a rapporteur on 14th-15th April, 2016 at Dr. B. R. Ambedkar University of Social Sciences, Dr. Ambedkar Nagar (Mhow), Indore (M.P.).
3. I have conducted one day Seminar on the occasion of University Establishment Day entitled, "सामाजिक-आर्थिक क्रांति के लिए दूरदृष्टि", on 14th August, 2016 at Dr. B. R. Ambedkar University of Social Sciences, Dr. Ambedkar Nagar (Mhow), Indore (M.P.).
4. I have conducted one day "अन्धश्रद्धा निर्मूलन कार्यक्रम", on the occasion of Mahatma Gandhi Jayanti on 2nd October, 2016 at Dr. B. R. Ambedkar University of Social Sciences, Dr. Ambedkar Nagar (Mhow), Indore (M.P.).
5. I have conducted one day Seminar entitled, "वैज्ञनिक चार आर्य सत्य", on 14th October, 2016 at Dr. B. R. Ambedkar University of Social Sciences, Dr. Ambedkar Nagar (Mhow), Indore (M.P.).
6. Organized Swachha Bharat Pakhwara & Youth Meet and Eco Media Lab programme as Programme Coordinator during November, 2016 at Dr. B. R. Ambedkar University of Social Sciences, Dr. Ambedkar Nagar (Mhow), Indore (M.P.).
7. I have conducted one day Workshop entitled, "Policy Research and Planning for the Socio-economic and Educational Exacellence of Downtrodden", on 13th January, 2017 at Dr. B. R. Ambedkar University of Social Sciences, Dr. Ambedkar Nagar (Mhow), Indore (M.P.).
8. Organized one day National Seminar as Organizing Secretary entitled, "भारतीय संविधान और सामाजिक न्याय", on 27th January, 2017 at Dr. B. R. Ambedkar University of Social Sciences, Dr. Ambedkar Nagar (Mhow), Indore (M.P.).

9. Organized one day Intellectual discussion as Organizing Secretary entitled, "विश्व सामाजिक न्याय दिवस", on 20th February, 2017 at Dr. B. R. Ambedkar University of Social Sciences, Dr. Ambedkar Nagar (Mhow), Indore (M.P.).

B. Presented/Participated/Delivered lecture/etc.:

1. Participated in two days International Conference entitled, "Globalization of Dr. Ambedkar Thoughts & Philosophy", and also performed the duty as a rapporteur on 14th-15th April, 2016 at Dr. B. R. Ambedkar University of Social Sciences, Dr. Ambedkar Nagar (Mhow), Indore (M.P.).
2. Participated and presented the progress & vision of School of Social Science & Management Studies through power point presentation in the National Seminar on the occasion of University Establishment Day entitled, "सामाजिक-आर्थिक क्रांति के लिए दूरदृष्टि", on 14th August, 2016 at Dr. B. R. Ambedkar University of Social Sciences, Dr. Ambedkar Nagar (Mhow), Indore (M.P.).
3. Participated in the programme "याद करो कुर्बानी", on 21st August, 2016 at Dr. B. R. Ambedkar University of Social Sciences, Dr. Ambedkar Nagar (Mhow), Indore (M.P.).
4. Participated in the "Teachers Day", programme on 5th September, 2016 at Dr. B. R. Ambedkar University of Social Sciences, Dr. Ambedkar Nagar (Mhow), Indore (M.P.).
5. Participated in one day Seminar entitled, "वैज्ञनिक चार आर्य सत्य", on 14th October, 2016 at Dr. B. R. Ambedkar University of Social Sciences, Dr. Ambedkar Nagar (Mhow), Indore (M.P.).
6. Participated & presented a paper entitled, "PQRS", in one day National Seminar on "Subaltern Perspective of Development & Dr. Ambedkar Thought", dated 27th February, 2017 at Dr. B. R. Ambedkar University of Social Sciences, Dr. Ambedkar Nagar (Mhow), Indore (M.P.).

Publications:

S.No.	Research Publications in referred journals (Name(s) of Authors in same sequence as published, Year of publication, Title of the publication, Full name of the Journal, Volume & page numbers)	ISSN/ISBN No.
1.	**Kumar, Pradeep** & Kaushlendra Verma : "Dr. B. R. Ambedkar's Vision for Social Change", Ambedkar Journal of Social Development and Justice, Vol. XXIV (2016), pp: 196-201.	0973-6646
2.	Kumar, Anuj & **Pradeep Kumar** : "Dalits and Constitutional Provisions", Ambedkar Journal of Social Development and Justice, Vol. XXIV (2016), pp: 202-214.	0973-6646
3.	Verma, Kaushlendra & **Pradeep Kumar** : "Dr. Ambedkar ka Prajatantra evam Rashtra Nirman me Shiksha Darshan ka Mahatva", Dr. Ambedkar Samajik Vigyan Sodh Patrika, Vol. XXIV (2016), pp: 82-87.	0973-6654
4.	Kumar, Rahul & **Pradeep Kumar** : "Niman Aay Evam Vishamtao ke Pareprakshay me Samajik-Aarthik vyakhayay : (Zila Bulandshahr ke Vikas Khand Sikandrabad ke Sandarbh me)", Dr. Ambedkar Samajik Vigyan Sodh Patrika, Vol. XXIV (2016), pp: 104-110.	0973-6654

5.	Kureel, R.S., D.K. Verma, **Pradeep Kumar** & P.C. Bansal : "Scheduled Castes in Madhya Pradesh : Demography and Participation in Development", in Souvenir, Ist Convocation 2016 at BRAUSS, pp: 115-123 (ISBN978-93-84953-07-2).	978-93-84953-07-2
6.	Kumar, Arun, Kaushlendra Verma, **Pradeep Kumar,** J.P. Mishra and RVS Gautam : "Women Empoewred by Dr. B. R. Ambedkar from Poverty to Power", in Pre-Proceeding Text, for National Seminar on Subaltern Perspective of Development & Dr. Ambedkar Thought, dated 27th January, 2017, Organized & Sponsored by Dr. Ambedkar Chair, BRAUSS & Dr. Ambedkar Foundation, Ministry of Social Justice & Empowerment, New Delhi, pp: 106-111.	

Confidential Work:

S.No.	Particul	Position	Work	Organization
1.	Screening committee of teaching post of school of Social Science and Management Studies.	Member Screening Committee	completed	At University
2.	Screening committee of teaching post of Guest/Visiting Faculty	Member Screening Committee	completed	At University

Administrative Contribution:

S.No.	Responsiblity	Date of Event
1.	Incharge, Library and Computer Centre	January, 2015 onwards
2.	Incharge, Venue & Hospitality Committee in Dr. Ambedkar Jayanti Celebration	14th & 15th April, 2016
3.	Assistant Controllor of Examination for Semester Exams.	University Semester Examination, 2016
4.	Incharge, Academic Cell	30th April to 23rd July, 2016
5.	Incharge, Invitation card & distribution Committee in University's First Convocation Ceremony	18th November, 2016
6.	Coordinator, Swatchh Bharat Pakhwada and Youth meet & eco media lab programme	12th November to19th November, 2016
7.	Assistant Controllor of Examination for Semester Exams.	University Sem. Exam, December, 2016
8.	Assistant Examination Superintendent for Civil Services Entrance Exams.	29th January, 2017
9.	Chairperson, Press Committee for Subaltern Perspective of Development & Dr. Ambedkar Thought	27th February, 2017

Dr. Kaushlendra Verma, Assistant Professor

A-- ACADEMIC ACTIVITY:-

6. I directly involved in academic activity of U.G, P.G. M.Phil. & Ph.D. students in School of Dr.Ambedkar Thought & Philosophy subject such as teaching, paper setting, conducting examination, Invigilation, Assistant exam superintendent, evaluation of answer books and extension work etc.
7. I have prepared syllabus of various subjects for the 1st& 2nd semester of Ph.D. Courses and it is based on Indian Civil Services & U.G.C.-NET.
8. I am working as a Research Major Advisor in the School of Dr.Ambedkar Thought & Philosophy.

B-- EXTENSION ACTIVITY:

Consultant / Mentor of students of School of Dr. Ambedkar Thought & Philosophy and all the professional courses of session-2016-17 over the university.

C-- ADMINISTRATIVERESPONSIBILTY:-

1. am working as a Course Coordinator/In-charge in the School of Dr .Ambedkar Thought & Philosophy
2. I am working as a Public Information Officer (P.I.O.) , Act-2005.
3. I have worked as a member of screening committee of teaching and non-teaching post of the University.
4. I am working as Associate N.C.C Officer (A.N.O.).
5. I have worked as member of exam result committee in the School of Dr.Ambedkar Thought & Philosophy.
6. I am working as In-charge of Dr. B, R. Ambedkar Museum / Photo Gallery.
7. I have worked as a member Convener evaluation result committee in civil service Coaching Programme.
8. I have worked as Assistant Examination Superintendent in All India Entrance examination 2016-17.
9. I am working as a Assistant Course Director of the civil service Coaching Programme.
10. I have worked as a member of R.D.C. & R.A.C. in M.Phil. & Ph.D. Courses of the University.
11. I have worked as a member of Counselling result committee of all schools Session 2016-17.
12. I was done successfully work in various Committees as Committee In-charge on various programme/functions (Seminars, Workshops, Training etc.) organized by our University time to time.

Research Publications-

S. N.	Research Publications in referred journals (Name(s) of Authors in same sequence as published, Year of publication, Title of the publication, Full name of the Journal, Volume & page numbers)	ISSN/ISBN NO.
	RESEARCH ARTICLES in REFERED JOURNALs	
1	Pradeep Kumar and **Kaushlendra Verma,** V o l . X X I V (2016),Dr.B.R. Ambedkar's Vision for social change, Ambedkar Journal of social Development and justice ,BRAUSS, Mhow.	0973-6646
2	**Kaushlendra Verma;** Pradeep Kumar; Vol.XXIV(2016), Dr. Ambedkar ka Parjatantra eyom Rastra nirman me Siksha Darshan ka mahtwa, Dr. Ambedkar samajik vigyan sodh patrika,BRAUSS,Mhow.	0973-6654
3	R.S.Kureel, D.K.Verma, **Kaushlendra Verma** Vol. I (2016); Integrated Development of Scheduled Castes & Scheduled Trives; Souvenir, BRAUSS, Mhow.	978-93-84953-07-2

Associate/Member/Editor in Editorial Board

S.N.	Position	NameofJournal	Organization
1.	Member in Editorial Board	Ambedkar's Journal of Social Development and Justice	Dr.B.R.Ambedkar University of Social Sciences.Mhow
2.	Member in Editorial Board	Dr. Ambedkar samajik vigyan sodh patrika	Dr.B.R.Ambedkar University of Social Sciences,Mhow
3.	Associate Editor	First Convocation Smarika-2016 (ISBN978-84953-07-2)	Dr.B.R. Ambedkar University of Social Sciences, Mhow

Organized/paper presentation in National activities

1. Organized. programme Chair lecture,with the guest Hon'ble judge and advisor to his excellency the governor of. UP, Shri S.S. Upadhyay at BRAUSS.
2. Organized birth anniversary of Sant Seromani Ravidas Jayanti at BRAUSS.
3. Organized programme 'Yaad Karo Kurbani- Swatantra diwas pakhwara' at BRAUSS.
4. University sthapana diwas programme was organized at Buddha vihara, chaired by Vc, under by Prof. Naik.I presented school of Dr.Ambedkar Thought & Philosophy report of annual progress & exhibition.

Significant achievement to fulfil the goal of the School of Dr. Ambedkar thoughts &Philosophy.

1. Organized a Exhibition/ Photogalary and books displayed at programme on the occasion of 125th Birth Anniversary of Dr. B. R. Ambedkar at Parliament, New Delhi on date 14th April, 2016 as per directive of Dr.Ambedkar Foundation,New Delhi under the School of Dr .Ambedkar thoughts & Philosophy, BRAUSS

2. Organized a Exhibition/ Photogalary and **books di**splayed at programme on the occasion of 125th Birth Anniversary of Dr. B. R. Ambedkar at Rau,Indore on date 20th May,2016 under the School of Dr .Ambedkar thoughts &Philosophy,BRAUSS.

CONFIDENTIALWORK:

S.N	Particulars	Position	Work	Organization
1	Screening committee of teaching and non-teaching post of school of Dr Ambedkar Thought & Philosophy.	Committee-Member	completed	At University
2	Verification of documents appearing in walk in interview (Gust Faculty)	Member	Completed	At University
3	Final review and examination of university level teaching and non-teaching newly advertised post	Committee-Member	completed	At University
4	Classification of applications for the faculty Post and others in university.	member	Completed	At University
5	Committee for recommending eligible guest faculty in the school of Dr Ambedkar Thought & Philosophy.	member	Completed	At University
6	Verification of documents for appearing in walk in interview (Gust Faculty)	member	Completed	At University

Works In-charge / Chairman / Member in committee

S.N	Particulars	In charge	Work	Organization
1	Dr Ambedkar Exhibition Committee	Chairperson	12 April-2016	At University
2	Physical verification & different material auction committee	Chairperson	Till task completed	At University
3	Sant Kabir Chair	Chairperson	Completed	At University

4	Visit Programme of University Team for Samajik Vigyan Kendra (SVK) Land, District – Ratlam & Raisen.	Member	Till task completed	At University
5	An Inspection Team for recognition of B.Ed , M.Ed & Integrated Courses to be Provided necessary documents committee	Member	Completed	At University
6	National Workshop on Sensitization Programme for the Police Officials on Atrocities against	Registration & Kit Material.	Completed	At University
7	First Foundation day of university	Transportation Committee	Completed	At University
8	National seminar on Significance of social justice and social harmony in nation building	Registration &Prog. Committee.	Completed	At University
9	National Workshop on Sensitization Programme for the Police Officials on Atrocities against the ST and SC.	Reg. & Certificate Committee	Completed	At University
10	Convocation Ceremony Committee	Printing ,Press & Photography committee	Completed	At University
11	National Seminar on Significance of Social Justice & Social Harmony in Nation Building	Registration &Prog. Committee	Completed	At University
12	National Seminar on Subaltern Perspective of Development & Dr Ambedkar	Registration &Prog. Committee	Completed	At University
13	International Seminar on Globalization of Dr AMBEDKAR Thoughts & Philosophy	Exhibition Material committee	Completed	At University

The following Enrolled students are given below in the School of Dr. Ambedkar Thoughts and Philosophy:-

Session - 2015-2016

S.No.	Enrolment No.	Name of the Student	Course
M.Phil. (Economics)			
1	Ramesh Bhabor		M.Phil. (Economics)
2	KhadaksinghDodve		M.Phil. (Economics)

3	SangeetaDodwe	M.Phil. (Economics)
4	Nanda Dodwe	M.Phil. (Economics)
5	Anita Muwel	M.Phil. (Economics)
6	Dinesh Chouhan	M.Phil. (Economics)
7	ItishreeChoudhury	M.Phil. (Economics)
M.Phil. (Political Science)		
1	ShrilalBariya	M.Phil. (Political Science)
2	Anita Dharve	M.Phil. (Political Science)
3	MahipalChouhan	M.Phil. (Political Science)
4	Rakesh Kumar Satnami	M.Phil. (Political Science)
5	SanjanaMuwel	M.Phil. (Political Science)
6	Santosh Kumar Verma	M.Phil. (Political Science)
7	RakeshParmar	M.Phil. (Political Science)
M.Phil. (History)		
1	SamotiMujalda	M.Phil. (History)

Ph.D. Political Science

1	Mithlesh Kumar Gound	Ph.D. Political Science
2	GeetaHanwat	Ph.D. Political Science
3	KalpanaKanade	Ph.D. Political Science
4	Bathu Singh Dawar	Ph.D. Political Science
5	Jyoti Patel	Ph.D. Political Science
6	Subhash C. Verma	Ph.D. Political Science
7	Khushbu Singh	Ph.D. Political Science
8	RajendraSuryawanshi	Ph.D. Political Science
9	ShivramDevke	Ph.D. Political Science
10	DeepmalaRawat	Ph.D. Political Science
11	Ganesh Bagale	Ph.D. Political Science
12	BakshiLoat	Ph.D. Political Science
13	Kalu Singh Solanki	Ph.D. Political Science
14	MamleshKumawat	Ph.D. Political Science
15	Najendra K. Ramteke	Ph.D. Political Science

Ph.D. (Economics & Statistics)

S.No.	Name of the Student	Course
1	Nand Kishore Kalosiya	Ph.D. (Economics & Statistics)
2	Param singh Barde	Ph.D. (Economics & Statistics)
3	Phool Singh Mori	Ph.D. (Economics & Statistics)
4	Alkesh Muwel	Ph.D. (Economics & Statistics)
5	Bhagat Singh Dawar	Ph.D. (Economics & Statistics)
6	Hemlata Bamniya	Ph.D. (Economics & Statistics)
7	Dileep Rawtale	Ph.D. (Economics & Statistics)
8	Mosmbi Senani	Ph.D. (Economics & Statistics)
9	Prem lata Mavi	Ph.D. (Economics & Statistics)
10	Rakhi Chandel	Ph.D. (Economics & Statistics)
11	Archan aArya	Ph.D. (Economics & Statistics)
12	RakeshThakre	Ph.D. (Economics & Statistics)
13	Shivraj Singh	Ph.D. (Economics & Statistics)

14	Aruna Gehlod	Ph.D. (Economics & Statistics)
15	Jyot iAlawa	Ph.D. (Economics & Statistics)
16	Kusam Dharve	Ph.D. (Economics & Statistics)
17	Naval Singh Bilwal	Ph.D. (Economics & Statistics)
18	Bau Gokhale	Ph.D. (Economics & Statistics)
19	Hare singh Dharve	Ph.D. (Economics & Statistics)
20	Jitendra Dharwe	Ph.D. (Economics & Statistics)
21	Sangeeta Awasya	Ph.D. (Economics & Statistics)

Ph.D. (History & Archaeology)

S.No.	Enrolment No.	Name of the Student	Course
1	Manoj Bhabher		Ph.D. (History &Archeology)
2	Daulat Singh Muwel		Ph.D. (History &Archeology)
3	Dinesh Kumar Khichi		Ph.D. (History &Archeology)
4	Jitendra Singh Awasya		Ph.D. (History &Archeology)
5	Pragya Bodh		Ph.D. (History &Archeology)
6	PushpaPandram		Ph.D. (History &Archeology)
7	Priyanka Sindal		Ph.D. (History &Archeology)
8	Jagdish Muniya		Ph.D. (History &Archeology)

Ph.D.- Philosophy

1	Meena Kumari	Ph.D. (Philosophy)

Ph.D. Public Administration.

1	Rajendra P. Patel	Ph.D. Public Admn.

Session- 2016 -17

Ph.D. -- Political Science

S.No.	Name of Student	Subject
1.	Saroj Patidar	Political Science
2.	Anamika Kendiya	‘’ ‘’
3.	Sangeeta Thakur	‘’ ‘’
4	Gyanendra Parsad	,, ,,

Ph.D. -- Economics

Sr. No.	Name of Student	Subject
1.	SangeetaSolanki	Ph.D..- Economics
2.	Mona Yadav	‘’ ‘’

M. Phil –-Economics

Sr. No.	Name of Student	Subject
1.	Dinesh Kumar Bheel	Economics
2.	Raju Panthi	‘’ ‘’
3.	Som Nath	‘’ ‘’
4.	Ashok Sitole	‘’ ‘’

Dr. Dhanraj Dongare, Assistant Professor

योगदान

संकाय में संचालित विभिन्न कक्षाओं के पाठ्यक्रम एवं Creadit का निर्माण किया गया साथ ही विभिन्न विषयों में अतिथि विद्वान को आमंत्रित कर कक्षाओं का सफलता पूर्वक संचालन किया जा रहा हैं। कक्षाओं में परम्परागत तरीके से अध्यापन के अलावा छात्रों के व्यक्तित्व के निर्माण हेतु कक्षाओं में सेमीनार, समूह चर्चा एवं विभिन्न अकादमिक गतिविधियां समय–समय पर आयोजित की जाती रही है।

पाठ्यक्रम समन्वयक द्वारा समय–समय पर छात्र–छात्राओं की आवश्यकताओं अनुसार जिज्ञासाओं का निराकरण विषय से संबंधित कक्षाओं मे अध्यापन के साथ–साथ शैक्षणिकेत्तर गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी की जाती रही है। जिससे विश्वविद्यालय के अकादमिक विकास में सहयोग मिल सके।

सेमिनार में भागीदारी

विश्वविद्यालय स्तर पर होने वाली राष्ट्रीय संगोष्ठी/प्रशिक्षण कार्यक्रम मे विश्वविद्यालय द्वारा दिये गए दायित्वों निर्वहन के साथ संबंधित कार्य किये जा रहें हैं।

अकादमिक केलेण्डर के अनुसार संत गाडगे बाबा जयंती का आयोजन

दिनाँक 23.02.2017 को संत गाड़गे बाबा जयंती के अवसर पर विश्वविद्यालय के सामाजिक विज्ञान संकाय द्वारा ''अनुसूचित जाति/जनजाति में सामाजिक गतिशीलता'' विषय पर बौद्धिक परिचर्चा आयोजित की गई।

कार्यक्रम की शुरूआत, संत श्री गाड़गे बाबा के छाया चित्र, डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर एवं गौतम बुद्ध की प्रतिमा पर माल्यापर्ण कर की गई। इस अवसर पर मंचासीन अधिष्ठाता विधि एवं सामाजिक न्याय प्रो. डी. के वर्मा द्वारा विषय की प्रासंगिकता, उसके प्रकारों पर तथ्यात्मक रूप से प्रकाश डाला और छात्रों को विषय पर शोध करने के लिए प्रेरित किया, उन्होनें कहा कि, जाति एवं जातिवाद आज सामाजिक गतिशीलता के मार्ग में बाधक है, जब तक भारतीय समाज म जाति समाप्त नहीं होगी, हमें संतोशजनक रूप से गतिशीलता देखने को नहीं मिलेगी। प्रो.जे.पी. मिश्रा डीन कृषि संकाय ने स्वयं को पहचान कर समाज उपयोगी कार्य करने पर बल दिया जिससे समाज एवं मानव जाति का कल्याण हो। प्रो. सी.डी. नाईक डीन डॉ. अम्बेडकर विचार एवं दर्शन ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में संत गाड़गे बाबा, के दर्शन, विचारो की प्रासंगिकता, सामाजिक गतिशीलता पर दार्शनिक एवं समकालीन आयाम के आधार पर महत्वपूर्ण विचार रखे, उन्होंने कहा कि संत कबीर, फूले, बुद्ध, संत रविदास, संत गाड़गे आदि महात्माओं की विचारधारा को अपनाकर समाज सामूहिक कल्याण के पथ पर अग्रसर हो सकता है।

संकाय सदस्यों में डॉ. अरूण कुमार, डॉ. आर. व्ही. एस. गौतम ने अपने विचार प्रस्तुत किए एवं कहा कि आज जिस स्वच्छता अभियान एवं सामाजिक गतिशीलता की बात की जा रही है वह संत श्री गाड़गे बाबा के

दशन में पहले से ही दिखाई देती है, बी.ए. सामाजिक विज्ञान के छात्र विजेन्द्र गहलोद, पीएच.डी स्कालर रवि मेडा, नितिन लाहौरे एवं अन्य छात्र छात्राओं ने विषय पर अपने विचार रखे, कार्यक्रम का संचालन एवं आभार डॉ. धनराज डोंगरे प्राध्यापक ब्राऊस द्वारा किया गया।

स्कूल एवं पीठ की प्रगति

विश्वविद्यालय की स्थापना के पश्चात वर्ष 2016–17 मे प्रथम सत्र में प्रवेश के लिये कार्यवाही की गई जिसमें जरूरी प्रवेश परीक्षा आयोजित की गई इसके पश्चात जो छात्र पत्र हुए उनकी काउन्सेलिंग करवाई गयी।

प्रवेश के पश्चात संकाय में अलग–अलग विषय के अतिथी विद्वानों को आमंत्रित करके जरूरी कोर्सवर्क प्रारंभ करवाया।

वर्तमान में सामाजिक विज्ञान संकाय में अग्रलिखित विभाग और उनमें अध्ययनरत छात्र/छात्राओं का ब्योरा इस प्रकार है।

सं. क्र.	विभाग	विषय	उपाधि		
1.	समाजशास्त्र	समाजशास्त्र	एम.ए.	एम.फिल.	पीएच.डी.
2.	मनोविज्ञान एवं व्यवहारात्मक विज्ञान	मनोविज्ञान	एम.ए.	एम.फिल.	पीएच.डी.
3.	भूगोल एवं पर्यावरण अध्ययन	• भूगोल • जनसंख्या अध्ययन • पर्यावरण अध्ययन	एम.ए.	एम.फिल.	पीएच.डी.
4.	भाषा एवं संस्कृति अध्ययन	• हिन्दी • अंग्रेजी	एम.ए.	एम.फिल.	पीएच.डी.
5.	प्रतिरक्षा एवं रणनीति अध्ययन	सैन्य विज्ञान	एम.ए.	एम.फिल.	पीएच.डी.

विषयवार छात्र–छात्राओं का विवरण

सं. क्र.	पाठ्यक्रम	छात्रों की संख्या
1.	बी.ए.प्रथम वर्ष	07
2.	बी.ए. तृतीय सेमेस्टर	06
3.	बी.ए. पंचम सेमेस्टर	20
4.	एम.ए. समाजशास्त्र प्रथम सेमेस्टर	01

5.	एम.ए. समाजशास्त्र तृतीय सेमेस्टर	01
6.	एम.ए. मनोविज्ञान प्रथम सेमेस्टर	01
7.	एम.ए. प्रतिरक्षा अध्ययन प्रथम सेमेस्टर	02
8.	पी.एच.डी. हिन्दी साहित्य द्वितीय सेमेस्टर	02
9.	पी.एच.डी. भूगोल साहित्य द्वितीय सेमेस्टर	02
10.	पी.एच.डी. समाजशास्त्र द्वितीय सेमेस्टर	01
11.	पी.एच.डी. कॉमर्स द्वितीय सेमेस्टर	01
12.	पी.एच.डी. मेनेजमेन्ट द्वितीय सेमेस्टर	04
13.	पी.एच.डी. समाजशास्त्र प्रथम सेमेस्टर	01
14.	एम. फिल. भूगोल द्वितीय सेमेस्टर	01

इसके अतिरिक्त सत्र 2015–16 के लगभग 58 पी.एच.डी. शोधार्थी संकाय के अन्तर्गत अध्ययनरत है।

Dr. Arun Kumar (Assistant Professor) School of Agriculture-BRAUSS

A-- ACADEMIC ACTIVITY:-

1. I engaged in teaching to M.Sc. & Ph.D. students of Agriculture Extension Education and Agricultural Economics subject and apart of this paper setting, conducting examination, evaluation of answer books, invigilation, preparation of mark sheet and extension work etc.

B-- EXTENSION ACTIVITY:

1. Consultant/Mentor of students of School of Agriculture and all the professional courses of session-2016-17 over the university.

C-- ADMINISTRATIVE RESPONSIBLY:-

1. Course Coordinator: School of Agriculture.
2. Incharge: Samajik Vigyan Kendra, Bordhi-Sehore.
3. Incharge: Poly house at University.
4. Incharge: Compulsory Course- Elementary Science and Agriculture)- IIrd Semester.
5. Incharge: various committees at university level.

D-- RESEARCH ACTIVITY:

Guide/Co-guide of PG and Ph.D. Students

S.N	Course Program	No. of Students	Guide
1	Master Degree (M.Sc.)	06	Major Guide
2	Ph.D.	01	Major Guide

Research Work of Ph.D. Students under my Supervision:

S. N	**Ph.D. (Agriculture Extension Education)** Thesis topic and its research objectives	
	Thesis topic	**Objective**
1	Study on knowledge and adoption extent of improved technology among soybean growers with special reference to ST's & SC's in Sehore block of Sehore district (M.P.)	1. To study the socio-economic profile of trained and untrained soybean growers. 2. To study the awareness about improved technology of soybean crop of trained and untrained soybean growers. 3. To study the knowledge extent of the soybean growers about improved technology of soybean crop. 4. To study the adoption extent of

		soybean growers about improved technology of soybean crop. 5. To see the relationship of independent with dependent variables. 6. To find out the constraints faced by the respondents in adoption of improved technology of soybean crop and suggestion to overcome the constraints.

Research Publications

S. N.	Research Publications in referred journals (Name(s) of Authors in same sequence as published, Year of publication, Title of the	ISSN NO.	NAAS Rating
	RESEARCH ARTICLES in REFERED JOURNALs		
1	**Arun Kumar** and Dipak De (2017) Extent of Knowledge of ATMA beneficiaries towards ATMA functions. Journal of Global Communication. **10** (01):18-21.	0974-	4.50
2	**Arun Kumar;** Dipak De; R.P Sahu and Prakash Jai (2017) Constraints Perceived By Trained and Untrained Farmers In Adoption of Improved Wheat Cultivation Technology. Technofame:A Journal of Multidisciplinary Advance Research. **6**	2278-7682	3.38
3	**Arun Kumar;** Singh Prakash; Sravan Kumar T; Ashok Kumar Gautam; and Abhishek Pratap Singh (2017) Journal of Community Mobilization and Sustainable Development.**12** (2) 272-276.	2230-9047	5.30

Popular articles in Magazines/Proceedings

S. N.	Research Publications in referred journals (Name(s) of Authors in same sequence as published, Year of publication, Title of the publication, Full name of the Journal, Volume & page numbers)	ISSN No.
1	**Arun Kumar,** R.P.Sahu (2017). MNREGA: Challenges and Improvements. Indian farmers Digest. **50** (05): 38-44.	0537-1589

Associate/Member/Editor in Editorial Board

S.N.	Position	Name of Journal	Organization
1.	Member in Editorial Board	Ambedkar Journal of Social Development and Justice	Dr. B. R. Ambedkar University of Social Sciences.
2.	Associate Editor	First Convocation Smarrika-2016 (ISBN 978-84953-07-2)	Dr. B. R. Ambedkar University of Social Sciences

Oral/Poster paper presentation/participation in National activities

S.N	Particulars	Theme of Conference/ Seminar	Organization	Year

1	National Conference	National Conference on Advances in Global Research in Agriculture and Technology	Society of Human Resource and Innovation, Agra (U.P.)-India	19-20 March,
2	National Seminar	Subaltern perspectives of development and Dr. Ambedkar Thoughts	Dr. Ambedkar Thoughts and Philosophy, BRAUSS	27 Feb. 2017

E-- AWARDS/RECOGNIZATION:

Recognition / Awards

S.N	Name of Awards/ Recognition	Organization	Date	National/ University level
1	Prasasti Patra (Best Employee at University)	BRAUSS, Mhow-Indore (M.P.)	Jan. 2017	University
2	Young Scientist Award in National Conference	Society of Human Resource and Innovation, Agra (U.P.)	19-20 Mar., 2017	National

F-- CONFIDENTIAL WORK:

S.N	Particular	Position	Work	Organizatio
1	Screening committee of teaching and non-teaching post of school of agriculture and rural development.	Committee-Member	completed	At University
2	Verification of documents appearing in walk in interview (Gust Faculty)	member	Completed	At University
3	Final review and examination of university level teaching and non-teaching newly advertized post	Committee-Member	completed	At University
4	Classification of applications for the faculty Post and others in university.	member	Completed	At University
5	Committee for recommending eligible guest faculty in the school of agriculture	member	Completed	At University
6	Verification of documents for appearing in walk in interview (Gust Faculty)	member	Completed	At University

Work as In-charge/Chairman/Member in committee

S.N	Particulars	In charge	Work	Organization

1	National Workshop on Sensitization Programe for the Police Officials on Atrocities against the	Hospitality & Accod.	Completed	BRAUSS
2	National Workshop on Atrocities control against the STs and SCs.	Hospitality & Accod.	Completed	BRAUSS
3	Orientation Programe for Research Scholars and Faculty Members belonging to STs and SCs. and other Marginalized Groups.	Hospitality & Accod.	Completed	BRAUSS
4	Foundation day of university	Hospitality & Accod.	Completed	BRAUSS
5	Convocation ceremony Committee	Hospitality & Accod.	Completed	BRAUSS
6	National Workshop on Atrocities control against the STs and SCs.	Hospitality & Accod.	Completed	BRAUSS
7	National Workshop on Atrocities control against the STs and SCs.	Hospitality & Accod.	Completed	BRAUSS
8	National seminar on Significance of social justice and social harmony in nation building	Hospitality & Accod.	Completed	BRAUSS

Samajik Vigyan kendra-Bordhi-Sehore:

Among two units of "Experiment Farm", one unit at Samajik Vigyan Kendra, Bordhi-Sehore and second unit at University campus were establish/ designed to conduct research experiment on various crops by M.Sc. (Ag.) and Ph.D. Scholars of School of Agriculture. The sown crops were Soybean, Mung and Urd during year 2016-17 by the students to complete their research trails at the Samajik Vigyan Kendra, Bordhi- Sehore. The sown crops were Onion, Ladies Finger, Better Guard and Bottle Guard by students of School of Agriculture, BRAUSS at the second unit of Universitycampus.

डॉ. पी.सी.बंसल

अ–राष्ट्रीय सेमीनार/संगोष्ठी/ कार्यशाला

1. म.प्र. के अनुसूचित जातियों के समग्र विकास हेतु दिनांक 10–11 जून 2016 को आयोजित शोध कार्यशाला में सहभागिता तथा अन्य सौंपे गये कार्यों को पूर्ण किया गया।

2. दिनांक 22.6.2016 को विश्वविद्यालय में कबीर जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित संगोष्ठी ''संत कबीर की वाणी एवं दर्शन'' में सक्रिय सहभागिता।

3. विश्वविद्यालय में 60 वें धम्म चक्र प्रवर्तन दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित संगोष्ठी में दिनांक 14 अक्टूबर 2016 को भाग लिया गया।

4. दिनांक 6.12.2016 को डॉ. अम्बेडकर के 60वें महापरिनिर्वाण दिवस केउपलक्ष्य में आयोजित सेमीनार'' राज्य का वित्तीय व प्रशासनिक दायित्व तथा अम्बेडकर के आर्थिक विचार'' में सम्मिलित हुआ।

5. विश्वविद्यालय में दिनांक 26.1.2017 को ''म.प्र. में अनुसूचित जाति एवं जनजातियों पर हुये अत्याचार'' पर आयोजित कार्यशाला में सहभागिता की।

ब–प्रकाशन

1. Published Research Paper on "A Study of Distribution of Foreign Direct Investment and Inequlity in India" Published in International Journal of Social Sciences and Humanities in Vol. 5, No. 3, 2016, ISSN No.- 2320-4702

स–शोध परियोजना (जारी)

शोध परियोजना शीर्षकः ''म.प्र. में अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजातियों पर हुये अत्याचार से संबंधित दर्ज प्रकरणों में दोषमुक्ति के कारणों का अध्ययन''

म.प्र.शासन के अनुसूचित जाति कल्याण विभाग द्वारा प्रदत्त उक्त शोध परियोजना में प्रदेश के विभिन्न जिलों यथाः बड़वानी, खरगौन, मण्डलेश्वर, देवास, इंदौर, भोपाल, रायसेन, छतरपुर, दमोह, पन्ना, रीवा, गुना, शिवपुरी, शाजापुर, उज्जैन आदि जिलों के विशेष न्यायालयों से दाष मुक्त हुए प्रकरणों की सत्यापित प्रतियॉ निकलवायी गयीं जिनके आधार पर फील्ड में जाकर केस स्टडी संबंधी कार्य पूर्ण किया जा रहा है।

द–अध्यापन एवं अन्य शैक्षणिक कार्यः

1. स्नातकोत्तर, एम.फिल. तथा पीएच–डी. कक्षाओं में अध्यापन कार्य।
2. अर्थशास्त्र विषय में स्नातकोत्तर, एम.फिल. तथा पीएच.डी. की उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन कार्य।
3. सेमिस्टर परीक्षाओं के आयोजन सम्बन्धी सौंपे गये कार्य पूर्ण किये गये।
4. ग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट एवं एम.फिल. परीक्षाओं के परीक्षाफल तैयार करने संबंधी कार्य पूर्ण किया गया।
5. अखिल भारतीय प्रवेश परीक्षा के मूल्यांकन का कार्य तथा परीक्षा परिणाम तैयार करने का कार्य किया गया।
6. विभाग में अध्ययनरत एम.फिल. तथा पीएच–डी. के शोध छात्रों को मार्गदर्शन प्रदान किया गया।
7. विश्वविद्यालय में संचालित अनिवार्य विषय SEEP के कोर्स इंचार्ज के रूप में अध्यापन एवं मिडटर्म परीक्षा में मूल्यांकन संबंधी कार्यों का सम्पादन ।
8. स्कूल ऑफ एजुकेशन द्वारा संचालित विषयः ऐजूकेशन, लाइब्रेरी साईंस, जर्नलिज्म एवं मास कम्युनिकेशन तथा हयूमैन डवलपमेंट के कोर्स कोर्डिनेटर के रूप में कार्य सम्पन्न किये गये।
9. विश्वविद्यालय की परीक्षा परिणाम समिति में सदस्य के रूप में कार्यों का सम्पादन।
10. अनिवार्य विषय के सेमिनार तथा एसाइनमेंट का मूल्यांकन संबंधी कार्य सम्पन्न किया गया।
11. विश्वविद्यालय की सेमिस्टर परीक्षाओं में अर्थशास्त्र विषय में एम. फिलतथा पीएच–डी. की कक्षाओं के प्रश्न पत्र बनाने संबंधी कार्य सम्पन्न किये गये।
12. विश्वविद्यालय द्धारा प्रकाशित न्यूज लैटर में सह–सम्पादक के रुप में कार्यों का संपादन।

य– प्रशासनिक दायित्व :

1. सहायक कुलसचिव(शैक्षणिक) के अतिरिक्त प्रभार के रूप में सौंपे गये दायित्वों को पूर्ण किया गया।
2. विश्वविद्यालय मीडिया प्रभारी के रूप में सौंपे गये समस्त कार्य पूण किये गये।
3. स्कूल एवं विभाग द्वारा समय समय पर दिये गये अन्य प्रशासकीय कार्यों को पूर्ण किया गया।

विश्वविद्यालय ग्रंथालय एवं परिसर

MAHATAMA PHULE LIBRARY, BRAUSS, MHOW

The library of BRAUSS has been named after the great social reformer Mahatma Phule. It is situated in its on octagonal building amidst picturesque campus. It is one of the most well equipped library for social sciences in M.P.The library caters to the needs of faculty members U.G., P.G., Ph.D. and M.Phil. Scholars, other visiting researchers and student receiving special coaching for all India Civil Services. It is open from 10.30 am to 05.30 pm on working days. The library continues its service to the faculty and research scholars of University and other researcher in social science

visiting the library. There is a rich collection of the study material on research methodology social science, Sociology, Buddhism, development policy, gender issues, SC,ST,OBC, minorities and women issues, population, environment studies, social development and justice and development, education, law, economics, geography, management, religion, and history etc. It has large collection of the institutional project reports of M.Phil. dissertations and Ph.D. theses.

The facilities are being provided to the research scholers and visitors includes photocopy at reasonable rates, internet facilities, library automation. The status of library as on 31st March 2017was as under:

1.	Total No of books	:	23720
2.	Total No of journals	:	170
3.	Exchange Journal	:	18
4.	Total No of magazines	:	13
5.	Total No of newspaper		: 19
6.	Weekly News papers	:	03
7.	Total No of reports	:	22
8.	Total No of newsletters	:	19
9.	Total No of library members	:	280
10.	Total No of library user	:	1900
11.	Total No of books issued per day	:	100

Computer Centre:

The University has a full fledged computer centre to cater to the needs of M.Phil. and Ph.D. Scholars. Presently there are Fiften computers having internet connection. It is open for research scholars from 10.30 A.M. to 05.30 P.M. on all working days. Four computer are being installed in computer centre very shortly. Computer training is being imparted to the M.Phil & Ph.D. scholars by the Trained computer teacher. Efforts are being made to recruit professional staff for this important section at the earliest. Automation & computerization of library is also under process. The University is planning to provide Wi-fi internet facility to the scholers at the earliest.

विश्वविद्यालय परिसर विकासः

वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2016–17

1. आवासीय भवन एवं अन्य भवन :–

विश्वविद्यालय परिसर में भवन निर्माण के कार्य पांच चरणों में पूर्ण किये जाने है, अभी तक चार चरणों के निर्माण कार्य कराये गये है, जिनका विवरण निम्नानुसार है :–

a. प्रशासनिक भवन
b. पुस्तकालय (महात्मा फूले ग्रंथालय)
c. केन्टीन (भूतल का आधा भाग)
d. प्रथम श्रेणी आवासीय भवन – 8
e. द्वितीय श्रेणी आवासीय भवन – 4
f. तृतीय श्रेणी आवासीय भवन – 20
g. चतुर्थ श्रेणी आवासीय भवन – 24
h. बालक छात्रावास (कबीर छात्रावास)
i. बालिका छात्रावास, 'भूतल' (रमाबाई बालिका छात्रावास)
j. संकाय भवन
k. फेकल्टी गेस्ट हाऊस
l. कुलपति आवास (भूतल)
m. इलेक्ट्रीकल सब–स्टेशन
n. बुद्ध विहार (बहुउद्देशीय हॉल)
o. पार्कींग शेड
p. पानी की टंकी

2. **डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर की आदमकद प्रतिमा की स्थापना** :– विश्वविद्यालय के प्रशासनिक भवन के सामने सूसज्जित गार्डन के बीच में डॉ. बाबासाहेब की आदमकद कांस्य प्रतिमा स्थापित की गई है, जो विश्वविद्यालय परिसर की शोभा बढा रही है।
3. **बाल उद्यान** :– विश्वविद्यालय परिसर में बने पानी के डेम के पास बाल उद्यान का निर्माण कराया गया है। जिसमें बच्चों को खेलने के लिए निम्नलिखित साधन उपलब्ध है।
    a. बैठक बैंच – 6
    b. सी–सॉ (झूला) – 1
    c. झूला बड़े – 2
    d. फिसलपट्टी – 1
4. **जल प्रदाय व्यवस्था** :– विश्वविद्यालय परिसर में नर्मदा पेयजल योजना के अन्तर्गत विश्वविद्यालय परिसर तक निजी पाईप लाईन डालकर 24 घंटे पानी की उपलब्धता हेतु व्यवस्था की गई है। जिससे परिसर में जलापूर्ति निरंतर बनी रहती है।
5. **विद्युत व्यवस्था** :– परिसर में उच्चदाब विद्युत कनेक्शन से विद्युत प्रदाय की जा रही है। जिसके फलस्वरूप 24 घंटे विद्युत आपूर्ति बनी रहती है। विश्वविद्यालय परिसर में बनी सड़कों पर स्ट्रीट लाईट लगाई गई है, जिससे परिसर में रात्रि में रोशनी का उचित प्रबंध है।

6. **उद्यानिकी** :– विश्वविद्यालय परिसर में लगे पौधों एवं गार्डन का रखरखाव किया गया है। जिसके कारण परिसर में अद्भुत सौंदर्य एवं हरियाली बनी हुई है। जिसके रखरखाव का कार्य विश्वविद्यालय स्तर पर परिसर विकास विभाग द्वारा किया जाता है।
7. **सौर उर्जा** :– विश्वविद्यालय में सौर ऊर्जा से संचालित दो लालटेन है, जिसमें से एक बालिका छात्रावास एवं एक पुस्तकालय भवन में उपयोग में लिया जा रहा है। दो सोलर वाटर हीटर का उपयोग बालिका छात्रावास में सफलतापूर्वक किया जा रहा है।
8. विश्वविद्यालय परिसर के समस्त भवनों का रखरखाव परिसर विकास विभाग द्वारा किया जा रहा है।
9. दिनांक 14.04.2015 को संस्थान को विश्वविद्यालय के रूप में परिवर्तित किया गया जिसके शिलालेख एवं संविधान स्तंभ के निर्माण कराये गये।
10. विश्वविद्यालय परिसर के वाटर हार्वेस्टिंग टेंक के गहरीकरण एवं चौडीकरण का निर्माण कराया गया।
11. कुलपति आवास के प्रथम तल का निर्माण कार्य प्रगति पर है।
12. डॉ. बी. आर. अम्बेडकर की प्रतिमा की चारों ओर झेड ब्लेक गनाईट का कार्य कराया जा रहा है।
13. व्यायाम शाला का भवन का निर्माण कार्य लोक निर्माण विभाग द्वारा जल्द प्रांरभ किया जा रहा है।
14. लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा परिसर में पानी आपूर्ति हेतु गंभीर नदी के पास एक डकवेल का निर्माण कराया जा रहा हैं जो जल्द ही पूर्ण किया जायेगा।
15. विश्वविद्यालय परिसर में छात्र–छात्राओं के लिए खेल मैदान का निर्माण कराया गया है।
16. विश्वविद्यालय परिसर में सभी भवनो में फायर सेफ्टि इक्युपमेंट की स्थापना करायी गयी है।
17. 15.08.2015 को विश्वविद्यालय परिसर में फलदार 100 पौधों का रोपण किया गया, जिसका रखरखाव किया जा रहा है।
18. **2016–17 के दौरान किये गये कार्यों का विवरण –**

स.क्र.	निर्माण कार्यों के नाम
1	मा. कुलपति निवास का प्रथम तल एवं शयनकक्ष का निर्माण
2	भगवान बुद्ध प्रतिमा एवं स्तूप का निर्माण
3	डेम के पास कुंआ खुदाई एवं परिसर में पी.वी.सी. पाईप लाईन बिछायी गयी।
4	पॉली हाउस का निर्माण कार्य
5	पॉली हाउस हेतु भूमिगत वाटर का निर्माण
6	सामाजिक विज्ञान केन्द्र आगर–मालवा एवं बोरध त. रेहटी जि. सोहोर में वायर चेनलिंग, एवं सीमा दीवार का निर्माण कार्य

7	शासकीय भवनों की आवश्यकतानुसार रंगाई पुताई (प्रशासनिक भवन, संकाय भवन, पुस्तकालय भवन बुद्ध बिहार, सीमा दीवार)
8	विश्वविद्यालय के नाम के साईन बोर्ड (6 नग) राऊ से विश्वविद्यालय तक लगाये गये।
9	डेम से काली मिट्टी लाकर परिसर में मैदान, गार्डन, पौधों के थालों एवं अन्य आवश्यकतानुसार डाली गयी।
10	पौधा रोपण कार्य किया गया।

19. विश्वविद्यालय के सामाजिक विज्ञान केन्द्रों की जानकारी निम्नानुसार हैः–

मध्यप्रदेश शासन द्वारा डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, डॉ. अम्बेडकर नगर (महू) समाज के कमजोर वर्गों के सामाजिक उत्थान एवं सामाजिक न्याय, आर्थिक सशक्तिकरण एवं विकास, उच्च शिक्षा एवं कौशल विकास तथा उनकी नीति निर्धारण एवं देश के विकास में ओर अधिक सहभागिता सुनिश्चित करने के लिये स्थापित किया गया है। विश्वविद्यालय अधिनियम 2015 के सेक्शन 28 में प्रदेश के प्रत्येक जिले में सामाजिक विज्ञान केन्द्र को स्थापित करने का प्रावधान किया गया है।

यह सामाजिक विज्ञान केन्द्र महिलाओं एवं बच्चों, दलितों एवं आदिवासियों, महिला सशक्तिकरण, रोजगार सृजन एवं अनुसंधान, नये–नये उत्पाद बनाना, विधिक एवं सामाजिक सुरक्षा, अन्धविश्वास एवं छुआछूत जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने तथा सामाजिक समरसता, बन्धुत्व एवं भाई चारा बढ़ाने के लिए कार्य करेगा। सामाजिक विज्ञान केन्द्र में समाजशास्त्र, महिला एवं बाल विकास, कृषि कौशल विकास एवं रोजगार, विधि एवं सामाजिक न्याय जैसे विषयों के विषय विशेषज्ञों को रखा जायेगा। सामाजिक विज्ञान केन्द्र के माध्यम से निम्नलिखित कार्यों को कार्यान्वित किया जायेगा।

1. मत्स्य उद्यमिता प्रशिक्षण
2. उद्यान तथा लघुवनोपज विकास
3. पशु उत्पादन तथा पशुजन्य उत्पाद विकास
4. कृषि उपज तथा मूल्य संवर्धन प्रशिक्षण
5. उद्यमिता तथा ग्रामीण विकास
6. सामाजिक बुराईयां एवं अन्धविश्वास निर्मूलन
7. अनुसूचित जाति एवं जनजातियों के सामाजिक–आर्थिक–शैक्षणिक विकास कार्य
8. महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास
9. उच्च शिक्षा एवं कौशल विकास प्रशिक्षण
10. विधि एवं सामाजिक न्याय विकास

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय अधिनियम 2015 में प्रदेश के प्रत्येक जिले में एक–एक सामाजिक विज्ञान केन्द्र खोलने का प्रावधान किया गया है, जिसके अनुसार प्रत्येक जिले में लगभग 20 हेक्टेयर भूमि उपलब्ध कराने हेतु जिला कलेक्टर से पत्राचार निरन्तर जारी है।

विश्वविद्यालय को छः जिलों में भूमि प्राप्त हुई है, जिनके नाम निम्नानुसार है।

1. ग्राम बोरधी, त. रेहटी, जिला सिहोर 20 हेक्टेयर
2. ग्राम मौजा पाचोली, त. अम्बा जि. मुरैना, 20 हेक्टेयर
3. आगर–मालवा, जि. आगर–मालवा, 20 हेक्टेयर
4. ग्राम सिमलावदा जि. रतलाम, 20 हेक्टेयर
5. ग्राम करैया राय, त. जि. अशोकनगर, 20 हेक्टेयर
6. ग्राम मौजा बरपटी त.जि. दमोह 20 हेक्टेयर

सीमा दीवार एवं वायर चेनलिंग के कार्य –

1. **आगर मालवा** – आगार मालवा में सीमा दीवार एवं वायर चेनलिंग के कार्य पूर्ण हो चूके है। भवन निर्माण कार्य प्रस्तावित है।
2. **बोरधी, त. रेहटी, जिला सिहोर** – सीमा दीवार एवं वायर चेनलिंग का कार्य लगभग पूर्ण होने को है, शेष कार्य जल्द पूर्ण हो जावेंगे।

जिन जिलो में जमीन हस्तांतरित हो चुकी है, सभी पर सीमा दीवार एवं वायर चेनलिंग के कार्य जल्द कराये जावेंग।

20. विश्वविद्यालय की आवश्यकतानुसार म.प्र. गृह निर्माण मण्डल से भवनों के निर्माण हेतु प्राक्कलन एवं मानचित्र प्राप्त किये जा रहे हैं। जिसके अनुसार निम्नानुसार कार्य यथाशीघ्र किये जा रहे है।

स.क्र.	निर्माण कार्यों के नाम
1.	फैकल्टी गेस्ट हाउस के प्रथम तल का निर्माण
2.	रमाबाई बालिका छात्रावास का प्रथम तल का निर्माण
3.	वाटर हार्वेस्टिंग टेंक का सिमेंटीकरण
4.	एक ओव्हर हेड टेंक का निर्माण
5.	विश्वविद्यालय परिसर में कुलसचिव आवास
6.	विश्वविद्यालय परिसर में व्यायामशाला भवन
7.	विश्वविद्यालय परिसर में कौशल विकास भवन
8.	विश्वविद्यालय परिसर के भवनों का मरममत कार्य
9.	विश्वविद्यालय परिसर में सीमेंट कांक्रिट सडक निर्माण

10.	विश्वविद्यालय सौंदर्यीकरण

वित्त एवं लेखा

2016–17

R. D. JOSHI & CO.
Chartered Accountants

SHIV VILAS PALACE
RAJWADA, INDORE (M.P.)
Ph No.:- 2541236, 4237198

DATE: 16th Sep.2017

DR. B. R. AMBEDKAR UNIVERSITY OF SOCIAL SCIENCES
DR. AMBEDKAR NAGAR (MHOW) M.P.
2016-2017

ACCOUNTING POLICIES :

1. Non-recurring expenses incurred by the Institute have been charged against the grant-in-aid, so as to give a correct picture of utilization of grant during the year.
2. As per past practice grant from other funding agencies have been adjusted on accrual basis so as to show the correct picture of grants receivable or unspent grants in the financial books.
3. Interest on Bank Fixed Deposits and Fees from scholars is accounted for in the year of receipt.
4. As per past practice outstanding expenses have not been adjusted.
5. Depreciation is provided on Fixed Assets at W.D.V. according to the rate determined by the management.

AUDIT OBSERVATION

1. **Advances**

M.P. Housing Board	560825/-
K.V. Natu	277224/-

For **R. D. Joshi & Co.**
Chartered Accountants

O.P.Agrawal

O.P.Agrawal
(Partner)

R.D. JOSHI & CO. Chartered Accountants INDORE

Finance Comptroller
Dr. B. R. Ambedkar
University of social Science,
Ambedkar Nagar (Mhow)
Distt. Indore - 453441

Registrar
Dr. B..R. Ambedkar
University of social Science,
Ambedkar Nagar (Mhow)
Distt. Indore - 453441

R. D. JOSHI & CO.
Chartered Accountants

SHIV VILAS PALACE
RAJWADA , INDORE
DATE :16th September, 2017

DR. B. R. AMBEDKAR UNIVERSITY OF SOCIAL SCIENCES

DR. AMBEDKAR NAGAR (MHOW) M.P.

BALANCE SHEET AS AT 31ST MARCH, 2017

FUNDS & LIABILITIES		AMOUNT
PROPERTY FUND :		
Assets upto 31-03-2016	116,808,183.00	
During 2016-2017	9,894,402.00	
	126,702,585.00	
Less ; Deductions during the year		
(As per Schedule ' A ')	(3,983,029.00)	122,719,556.00
ADVANCE FOR CAPITAL & MAINTENANCE WORKS		
As Per Last Year		838,049.00
FUNDS A/C. :		
As per last Balance Sheet	65,805,955.00	
Add: Excess of Income Over Expenditure	45,716,564.00	111,522,519.00
UNSPENT GRANTS :		
Unspent Grant As per Schedule - B		27,431,006.00
UNSPENT CONSTRUCTION GRANT :		
As per last year		19,140,789.00
STUDENT WELFARE FUND :		
Received during the year	1,017,546.00	
Add: Transfer From Income & Expenditure A/c	25,324.00	
Less: Student welfare Exp.	-	1,042,870.00
C/F		**282,694,789.00**

ASSETS		AMOUNT
FIXED ASSETS : (As per Schedule ' A ')		122,562,691.00
ADVANCES AGAINST CONSTRUCTION :		
M.P. Housing Board	560,825.00	
M/s. K.V. Natu & Associates	277,224.00	838,049.00
ADVANCES AGAINST :		
Vanrakshak Anusandhan		29,744.00
ADVANCE FOR EXPENSES:		
Shri N.K.S. Rathore	3,144.00	
Creative Webside, Indore	11,500.00	
PWD for Construction	1,059,500.00	
Sanjay Rawat	15,500.00	
PWD	2,990,950.00	
Shri Hukum Singh	77,000.00	
Shri Sunil Bali	7,750.00	
Shri Shankar Gohil	9,645.00	
Mukesh Adivasi	450.00	4,175,439.00
LOAN TO STAFF :		
Festival Advance		600.00
GRANTS RECEIVABLE :		
From Other Agencies As Per Schedule-C		4,031,392.00
SECURITY DEPOSIT MPEB :		29,700.00
C/F		**131,667,615.00**

R.D. JOSHI & CO. Chartered Accountants INDORE

B/F		282,694,789.00	B/F		131,667,615.00
LIABILITIES :			**CASH & BANK BALANCES :**		
Security Deposits	440,379.00		Saving Bank Balances	27,132,227.00	
Remittance	324,498.00		Cash in hand (As per cash book)	38,011.00	
CPF ded. at sources	-		F.D. (SBI Mhow)	95,000,000.00	
Caution Money	793,795.00		F.D. (BOC Mhow)	30,000,000.00	
Group Insurance deduction At Source	74,392.00	1,633,064.00	F.D. (Student Welfare Fund)	490,000.00	152,660,238.00
Total Rs.		**284,327,853.00**	**Total Rs.**		**284,327,853.00**

For: R. D. Joshi & Co.
Chartered Accountants
O.P. Agrawal
O.P. Agrawal
Partner

R.D. JOSHI & CO. Chartered Accountants INDORE

Finance Comptroller
Dr. B. R. Ambedkar
University of social Science,
Ambedkar Nagar (Mhow)
Distt. Indore - 453441

Registrar
Dr. B..R. Ambedkar
University of social Science,
Ambedkar Nagar (Mhow)
Distt. Indore - 453441

R. D. JOSHI & CO.
Chartered Accountants

SHIV VILAS PALACE
RAJWADA , INDORE

DATE :16th September, 2017

DR. B. R. AMBEDKAR UNIVERSITY OF SOCIAL SCIENCES

DR. AMBEDKAR NAGAR (MHOW) M.P.

INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH, 2017

EXPENDITURE		AMOUNT	INCOME		AMOUNT
STAFF REMUNERATION & BENEFITS :			**GRANTS-IN-AID :**		
Salaries	35,688,567.00		**From Govt. of M.P. Deptt. Of Schedule Cast Welfare:**		
Institutional Contribution	3,176,755.00		Maintenance Grant		99,000,000.00
Leave Salary & Pension Contribution	448,944.00				
Salary of Daily Wages Employees	4,048,591.00		**GRANT FROM OTHER AGENCIES**		
Honorarium & Remuneration	55,500.00	43,418,357.00	**FOR SPECIAL PROJECT :**		
			As per Schedule - B	2,986,027.00	
STUDENTS AND RESEARCH :			As per Schedule - C	2,771,005.00	5,757,032.00
Examination	346,474.00				
Sports & Athelitics	66,666.00		**FEES :**		
Fellowship for M. Phil	115,106.00		General Course Dept.	169,000.00	
Publication of Institute Journals	534,532.00		Tution	3,036,850.00	
Agriculture Research	479,422.00		Activities	49,500.00	
Research Contingency	164,000.00	1,706,200.00	Application	2,198,058.00	
			Carrier Gaidance	9,800.00	
SEMINARS, PROGRAMME & FUNCTIONS			Computer Lab	98,500.00	
Institute Lecture Series	29,509.00		Counciling	123,500.00	
Institutional Project	6,285.00		Countineous Examination	43,370.00	
Meeting Expense	206,510.00		Labortary	9,500.00	
Programme & Function	1,604,527.00		Library	102,800.00	
Reception & Entertainment	22,979.00		Local Examination	123,700.00	
Seminar & Workshop	1,057,093.00	2,926,903.00	Medical	49,250.00	
			NCC/NSS	14,700.00	
ADMINISTRATIVE EXPENSES :			Phd Fees	22,762.00	
Advertisement	646,001.00		Sports & Culture	19,800.00	
Audit Fees	17,250.00		University News Letter	9,900.00	6,080,990.00
Bank Charges	5,231.00	668,482.00			
C/F.		**48,719,942.00**	**C/F.**		**110,838,022.00**

R. D. JOSHI & CO. Chartered Accountants INDORE

R. D. JOSHI & CO.
Chartered Accountants

SHIV VILAS PALACE
RAJWADA , INDORE
DATE :16th September, 2017

SCHEDULE - A

DR. B. R. AMBEDKAR UNIVERSITY OF SOCIAL SCIENCES
DR. AMBEDKAR NAGAR (MHOW) M.P.
SCHEDULE OF FIXED ASSETS FOR THE YEAR ENDED 31-03-2017

PARTICULARS	W.D.V. AS ON 01-04-2016	ADDITION PURCHASES	SOLD	TOTAL	RATE	DEPRE-CIATION	BALANCE AS ON 31.03.2017
INSTITUTE'S LAND :	3449000.00	0.00	0.00	3449000.00	0.00	0.00	3449000.00
BUILDING :	101521040.00	3787984.00	0.00	105309024.00	2%	2106180.00	103202844.00
FURNITURE :	3333931.00	3705711.00	0.00	7039642.00	10%	703964.00	6335678.00
OFFICE EQUIPMENT :	3841416.00	1482919.00	0.00	5324335.00	10%	532434.00	4791901.00
VEHICLE :	1868402.00	0.00	0.00	1868402.00	10%	186840.00	1681562.00
LIBRARY BOOKS :	474622.00	506179.00	0.00	980801.00	20%	196160.00	784641.00
ENERGY PARK :	29732.00	0.00	0.00	29732.00	10%	2973.00	26759.00
PERIODICALS & RESEARCH JOURNALS	1050813.00	411609.00	0.00	1462422.00	10%	146242.00	1316180.00
HOSTEL FURNITURE :	720984.00	0.00	0.00	720984.00	10%	72098.00	648886.00
FIXTURES :	361378.00	0.00	0.00	361378.00	10%	36138.00	325240.00
Total Rs.	**116651318.00**	**9894402.00**	**0.00**	**126545720.00**	**-**	**3983029.00**	**122562691.00**

R.D. JOSHI & CO. Chartered Accountants INDORE

R. D. JOSHI & CO.
Chartered Accountants

SHIV VILAS PALACE
RAJWADA , INDORE
DATE :16th September, 2017

SCHEDULE - B

DR. B. R. AMBEDKAR UNIVERSITY OF SOCIAL SCIENCES
DR. AMBEDKAR NAGAR (MHOW) M.P.

STATEMENT OF GRANTS RECEIVED FROM OTHER AGENCIES AND EXPENDITURE THERE AGAINST DURING THE YEAR 2016-2017

PARTICULARS OF GRANT UNSPENT :	AS ON 01-04-2016 GRANT UNSPENT	GRANT RECEIVED 2016-17	TRANSFER TO OTHER GRANT	TOTAL GRANT AVAILABLE	EXPENDITURE DURING 2016-17	AS ON 31.03.2017 GRANT UNSPENT	GRANT RECEIVABLE
UGC Rajiv Gandhi Fellowship	8821491.00	835284.00	0	9656775.00	704460.00	8952315.00	0.00
UGC New Delhi,Fellowship through DAVV	196443.00	0.00	0	196443.00	0.00	196443.00	0.00
ICSSR Fellowship	798282.00	100000.00	0	898282.00	268866.00	629416.00	0.00
Panchayat Raj & Samaj Kalyan	5546560.00	0.00	0	5546560.00	6925.00	5539635.00	0.00
SRMS Project	63916.00	0.00	0	63916.00	0.00	63916.00	0.00
Govt. of M.P. General Poor Classes comm.,Bhopal	49000.00	0.00	0	49000.00	0.00	49000.00	0.00
Govt. of M.P. Seminar & Prasar (Atrosity Project)	2917200.00	0.00	0	2917200.00	303172.00	2614028.00	0.00
ICSSR Project, New Delhi (RDM)	6147.00	0.00	0	6147.00	6147.00	0.00	0.00
Sahayak Aayukya Adivasi Vikas Indore	0.00	80000.00	0	80000.00	80000.00	0.00	0.00
M.P. Police Sencetization Programme	0.00	840000.00	0	840000.00	675443.00	164557.00	0.00
Mukhya Mantri Koushal Yojana	0.00	1118400.00	0	1118400.00	186704.00	931696.00	0.00
SC Vikas MP(RDM)	0.00	1410000.00	0	1410000.00	0.00	1410000.00	0.00
OBC Development (For Fellowship)	0.00	754310.00	0	754310.00	754310.00	0.00	0.00
OBC Development (Hostes Cont.)	0.00	6880000.00	0	6880000.00	0.00	6880000.00	0.00
	18399039.00	**12017994.00**	**0.00**	**30417033.00**	**2986027.00**	**27431006.00**	**0.00**

R.D. JOSHI & CO. Chartered Accountants INDORE

R. D. JOSHI & CO.
Chartered Accountants

SHIV VILAS PALACE
RAJWADA , INDORE
DATE :16th September, 2017

SCHEDULE - B

DR. B. R. AMBEDKAR UNIVERSITY OF SOCIAL SCIENCES
DR. AMBEDKAR NAGAR (MHOW) M.P.

STATEMENT OF GRANTS RECEIVED FROM OTHER AGENCIES AND EXPENDITURE THERE AGAINST DURING THE YEAR 2016-2017

PARTICULARS OF GRANT UNSPENT :	AS ON 01-04-2016 GRANT UNSPENT	GRANT RECEIVED 2016-17	TRANSFER TO OTHER GRANT	TOTAL GRANT AVAILABLE	EXPENDITURE DURING 2016-17	AS ON 31.03.2017 GRANT UNSPENT	GRANT RECEIVABLE
UGC Rajiv Gandhi Fellowship	8821491.00	835284.00	0	9656775.00	704460.00	8952315.00	0.00
UGC New Delhi,Fellowship through DAVV	196443.00	0.00	0	196443.00	0.00	196443.00	0.00
ICSSR Fellowship	798282.00	100000.00	0	898282.00	268866.00	629416.00	0.00
Panchayat Raj & Samaj Kalyan	5546560.00	0.00	0	5546560.00	6925.00	5539635.00	0.00
SRMS Project	63916.00	0.00	0	63916.00	0.00	63916.00	0.00
Govt. of M.P. General Poor Classes comm.,Bhopal	49000.00	0.00	0	49000.00	0.00	49000.00	0.00
Govt. of M.P. Seminar & Prasar (Atrosity Project)	2917200.00	0.00	0	2917200.00	303172.00	2614028.00	0.00
ICSSR Project, New Delhi (RDM)	6147.00	0.00	0	6147.00	6147.00	0.00	0.00
Sahayak Aayukya Adivasi Vikas Indore	0.00	80000.00	0	80000.00	80000.00	0.00	0.00
M.P. Police Sencetization Programme	0.00	840000.00	0	840000.00	675443.00	164557.00	0.00
Mukhya Mantri Koushal Yojana	0.00	1118400.00	0	1118400.00	186704.00	931696.00	0.00
SC Vikas MP(RDM)	0.00	1410000.00	0	1410000.00	0.00	1410000.00	0.00
OBC Development (For Fellowship)	0.00	754310.00	0	754310.00	754310.00	0.00	0.00
OBC Development (Hostes Cont.)	0.00	6880000.00	0	6880000.00	0.00	6880000.00	0.00
	18399039.00	**12017994.00**	**0.00**	**30417033.00**	**2986027.00**	**27431006.00**	**0.00**

R.D. JOSHI & CO. Chartered Accountants INDORE

B/F.		**48,719,942.00**
Bhu Bhatak	1.00	
Electricity Charges	2,610,180.00	
Insurance Premium	82,254.00	
Internet Connection	136,756.00	
Legal & Professional Charges	82,156.00	
Maint. Of Building & Other Assets	3,000,131.00	
Miscellaneous	158,357.00	
News Paper & Magazines	82,363.00	
Postage & Telegramme	82,195.00	
Staff Travelling & Conveyance	298,422.00	
Stationery & Printing	877,599.00	
Status & Photos	57,060.00	
Telephone	213,038.00	
Training Exp.	4,860.00	
Vehicle Running & Maint.	944,535.00	
Water Charges	343,571.00	8,973,478.00
SPECIAL PROJECT EXPENSES :		
Funded by Other Agencies As per Schedule- B	2,986,027.00	
Funded by Other Agencies As per Schedule- C	2,771,005.00	5,757,032.00
CAPITAL EXPENDITURE :		
Building Development	3,787,984.00	
Office Equipments	1,482,919.00	
Periodicals & Research Journals	411,609.00	
Furniture	3,705,711.00	
Library Books	506,179.00	9,894,402.00
PROFIT- Transfer to Balance Sheet:		45,716,564.00
Total Rs.		**119,061,418.00**

B/F.		**110,838,022.00**
INSTITUTIONAL INCOME :		
Bus Charges	120,250.00	
Guest House Charges	289,000.00	
Hostel Charges	129,290.00	
Entrance Exam	312,549.00	
Fellowship	192,519.00	
Institutional Journals & Charges	2,592.00	
Interest Received	6,709,642.00	
Other Receipts	28,588.00	
Photocopy Charges	970.00	
Tender Charges	36,950.00	
Vehicle Charges Recovered	2,850.00	7,825,200.00
HOUSE RENT AND WATER CHARGES RECOVERED FROM STAFF :		130,936.00
ELECTRICITY CHARGES RECOVERED :		267,260.00
Total Rs.	-	**119,061,418.00**

For: R. D. Joshi & Co.
Chartered Accountants
O.P. Agrawal
O.P. Agrawal
Partner

Finance Comptroller
Dr. B. R. Ambedkar
University of social Science,
Ambedkar Nagar (Mhow)
Distt. Indore - 453441

Registrar
Dr. B..R. Ambedkar
University of social Science,
Ambedkar Nagar (Mhow)
Distt. Indore - 453441

R.D. JOSHI & CO. Chartered Accountants INDORE

R.D. JOSHI & CO. Chartered Accountants INDORE

R. D. JOSHI & CO.
Chartered Accountants

SHIV VILAS PALACE
RAJWADA , INDORE
DATE :16th September, 2017

SCHEDULE - C

DR. B. R. AMBEDKAR UNIVERSITY OF SOCIAL SCIENCES
DR. AMBEDKAR NAGAR (MHOW) M.P.

PARTICULARS OF GRANT RECEIVABLE	AS ON 01-04-2016 GRANT RECEIVABLE	GRANT RECEIVED 2016-17	TRANSFER FROM OTHER GRANT	TOTAL GRANT RECEIVABLE	EXPENDITURE DURING 2016-17	AS ON 31.03.2017 TRANSFER TO OTHER RECEIPTS	AS ON 31.03.2017 GRANT RECEIVABLE
Dr Ambedkar Chair	3738733.00	2115005.00	0.00	1623728.00	1965981.00	0.00	3589709.00
IAS Coaching	343477.00	0.00	0.00	343477.00	0.00	0.00	343477.00
N.G.O. Project	30456.00	0.00	0.00	30456.00	0.00	0.00	30456.00
GOI Ministry of Science & Technology	0.00	800000.00	0.00	0.00	805024.00	0.00	5024.00
Post Matric Project (RDM)	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
Computer Training Workshop (ICSSR)	62726.00	0.00	0.00	62726.00	0.00	0.00	62726.00
	4175392.00	**2915005.00**	**0.00**	**2060387.00**	**2771005.00**	**0.00**	**4031392.00**